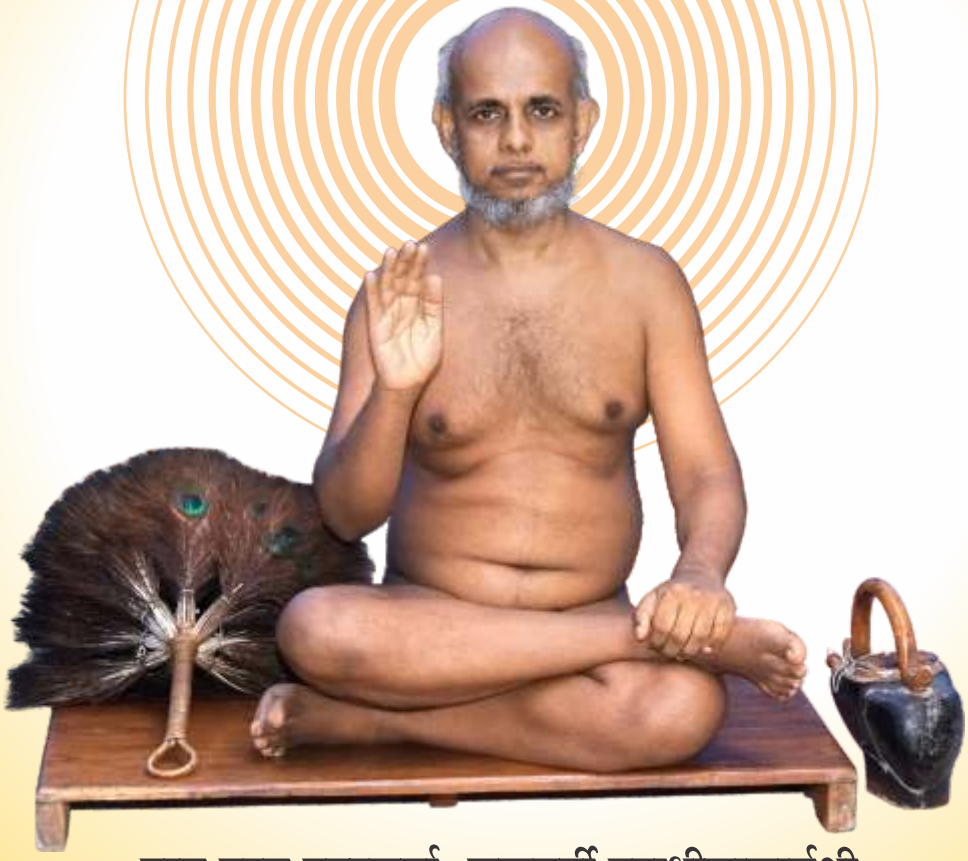

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद गणधरवलय विधान पूजा (बृहत्)

कृतिकार :
परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्तिस्थान
विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

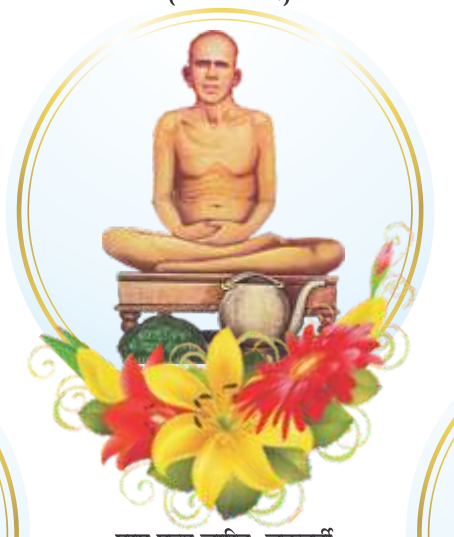

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद

वृहद् गणधर वलय विधान पूजा

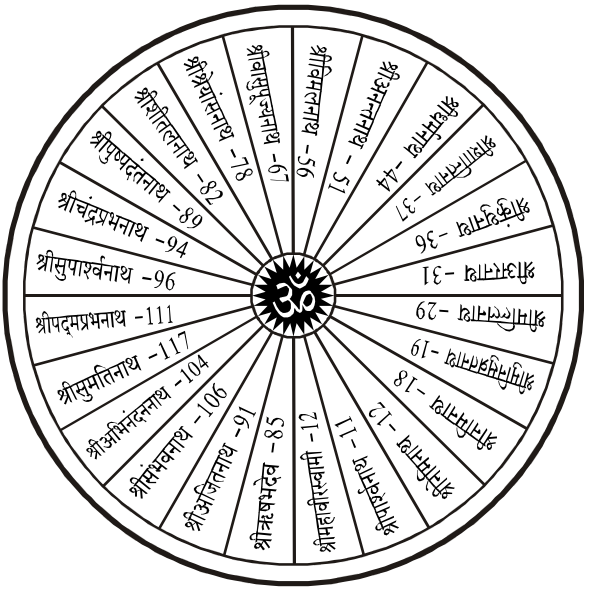

रचयिता :

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

-: प्रकाशक :-

विशद साहित्य केन्द्र

कृति : **विशद वृहद् गणधर वलय विधान पूजा**
कृतिकार : **प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य**
श्री विशदसागर जी महाराज
संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज
सहयोगी : क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागर जी महाराज
वात्सल्य भारती माताजी, क्षुल्लिका भक्तिभारतीजी
संपादन : ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), ब्र. आस्था दीदी
(9660996425), ब्र. सपना दीदी (9829127533)
संयोजन : ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी
संस्करण : प्रथम 2016 (1000 प्रतियाँ)
मूल्य : 70/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
सम्पर्क सूत्र : (1) **निर्मल कुमार गोधा**
2142 निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
मनिहारों का रास्ता, जयपुर,
मो. 0141-23199079414812008
(2) **विशद साहित्य केन्द्र**
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर कुआँ वाल जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा), मो. 9812502062
(3) **हरीश जैन**
जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरु पाली,
नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर,
दिल्ली, मो. 098181157971, 09136248971
(4) **सुरेश जैन**
पी-958, गली नं. 3, शान्ति नगर,
दुर्गापुरा, जयपुर, मो. 9413336017
e-mail : vishadsagar11@gmail.com
प्रकाशक : **विशद साहित्य केन्द्र**

मुद्रक : **पिक्सल 2 प्रिंट, जयपुर,** हेमन्त जैन (बड़ागाँव) मो. 9509529502

पुण्यार्जक

श्री प्रकाशचंद, रीतेश कुमार जैन (चितावा वाले)
ए-421, विद्युत नगर, अजमेर रोड़, जयपुर
मो. 9828114472, 9828118003

श्री पदमचंद-विमला देवी जैन (पीपलू वाले)
पुत्र-दिनेश जैन, सुनली जैन, पुत्री-रेखा जैन, पौत्र-पार्थ, संयम जैन
निवाई, जिला-टोंक (राजस्थान)

ज्ञानचंद जैन-मैना देवी सोगानी
डॉ. अजय, अनुप्रिया, महावीर, रितु सोगानी, (पहाड़ी वाले)
निवाई, जिला-टोंक (राजस्थान)

प्रकाशचंद, राजेन्द्र कुमार (दरिया वाले)
जैन कॉलोनी, निवाई, जिला-टोंक (राजस्थान)

अपनी बात

वर्तमान अवसर्पणी काल में चौबीस तीर्थंकरों के चौदह सौ बावन गणधर हैं। अन्य ग्रंथों में चौदह सौ उनसठ माने हैं। इन चौबीसों तीर्थंकरों के एक-एक प्रमुख गणधरों के नाम प्रसिद्ध हैं। उनके ये 24 व्रत हैं। इन व्रतों के प्रभाव से अंतरंग ऋद्धियाँ एवं बहिरंग ऋद्धि-सुख-संपत्ति-सन्तति आदि को प्राप्त करते हैं एवं रोग, शोक, दरिद्रता को दूर करते हैं तथा परम्परा से गणधरदेव आदि की विभूति को प्राप्त कर नियम से मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

इस व्रत को तीर्थंकरों के केवलज्ञान कल्याणक के दिन करने से अति उत्तम हैं अथवा कभी भी किसी भी तिथि में कर सकते हैं।

व्रत तिथि – व्रत के दिन उपवास करना उत्तम है। अल्पाहार मध्यम है और एक बार शुद्ध भोजन लेकर एकाशन करना जघन्य है। प्रत्येक व्रत के दिन तीर्थंकर भगवान का अभिषेक करके गणधर अथवा गणधर वलय यंत्र का अभिषेक करना चाहिए एवं तीर्थंकरों की पूजन करके गणधरदेव की पूजा करनी चाहिए। इनके चौबीस मंत्र दिये हैं। क्रम से एक-एक व्रत में एक-एक मंत्र की माला करना चाहिए। यह व्रत आप सबको स्वस्थता प्रदान कर ऋद्धि-सिद्धि से भरपूर सर्वसुख प्रदान करे, यही मंगल कामना है।

वृहद् गणधर वलय व्रत के उद्यापन पर अथवा जैनेश्वरी दीक्षा की पावन बेला में तथा नौकरी या परीक्षा में सफलता हेतु या विशेष पर्व के अवसरों पर **प. पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज** द्वारा रचित यह गणधर वलय विधान उत्सवपूर्वक सम्पन्न करना चाहिए।

– ब्र. सपना दीदी

संघस्थ आचार्य विशद सागर जी महाराज

समुच्चय मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकर श्रीऋषभसेनादिप्रमुख-एकोनषष्ट्यधिकचतुर्दशशत-गणधरदेवेभ्यो नमो नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् 24 मंत्र

1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीऋषभसेनगणधरप्रमुख-चतुरशीतिगणधरदेवेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य श्रीकेशरीसेनगणधरप्रमुख-नवतिगणधरदेवेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य श्रीचारुदत्तगणधरप्रमुख-पंचोत्तरशतगणधरदेवेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य श्रीवज्रचामरगणधरप्रमुख-त्र्युत्तरशतगणधरदेवेभ्यो नमः।
5. ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य श्रीवज्रगणधरप्रमुख-षोडशोत्तरशतगणधरदेवेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य श्रीचमरगणधरप्रमुख-एकादशोत्तरशतगणधरदेवेभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य श्रीबलदत्तगणधरप्रमुख-पंचनवतिगणधरदेवेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य श्रीवैदर्भगणधरप्रमुख-त्रिनवतिगणधरदेवेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य नागमुनिगणधरप्रमुख-अष्टाशीतिगणधरदेवेभ्यो नमः।
10. ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य श्रीकुंथुगणधरप्रमुख-सप्ताशीतिगणधरदेवेभ्यो नमः।
11. ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य श्रीधर्मगणधरप्रमुख-सप्तसप्ततिगणधरदेवेभ्यो नमः।
12. ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य श्रीमंदरगणधरप्रमुख-षट्षष्टिगणधरदेवेभ्यो नमः।
13. ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य रीजयमुनिगणधरप्रमुख-पंचपंचाशत्गणधरदेवेभ्यो नमः।
14. ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथस्य श्रीअरिष्टसेनगणधरप्रमुख-पंचाशत्गणधरदेवेभ्यो नमः।
15. ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य श्रीअरिष्टसेनगणधरप्रमुख-त्रिचत्वारिंशत्गणधरदेवेभ्यो नमः।
16. ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथस्य श्रीचक्रायुधगणधरप्रमुख-षट्विंशद्गणधरदेवेभ्यो नमः।
17. ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य श्रीस्वयंभूगणधरप्रमुख-पंचत्रिंशद्गणधरदेवेभ्यो नमः।
18. ॐ ह्रीं श्रीअरनाथस्य श्रीकुंभगणधरप्रमुख-त्रिंशद्गणधरदेवेभ्यो नमः।
19. ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य श्रीविशाखगणधरप्रमुख-अष्टाविंशतिगणधरदेवेभ्यो नमः।
20. ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य श्रीमल्लिगणधरप्रमुख-अष्टादशगणधरदेवेभ्यो नमः।
21. ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य श्रीसुप्रभगणधरप्रमुख-सप्तदशगणधरदेवेभ्यो नमः।
22. ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथस्य श्रीवरदत्तगणधरप्रमुख-एकादशगणधरदेवेभ्यो नमः।
23. ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य श्रीस्वयंभूगणधरप्रमुख-दशगणधरदेवेभ्यो नमः।
24. ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः श्रीइन्द्रभूतिगणधरप्रमुख-एकादशगणधरदेवेभ्यो नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् लघु 24 मंत्र

1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीऋषभसेनगणधरदेवाय नमः।
2. ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथस्य श्रीकेशरीसेनगणधरदेवाय नमः।
3. ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथस्य श्रीचारुदत्तगणधरदेवाय नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथस्य श्रीवज्रचामरगणधरदेवाय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथस्य श्रीवज्रगणधरदेवाय नमः।
6. ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभनाथस्य श्रीचमरगणधरदेवाय नमः।
7. ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथस्य श्रीबलदत्तगणधरदेवाय नमः।
8. ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभनाथस्य श्रीवैदर्भगणधरदेवाय नमः।
9. ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथस्य नागमुनिगणधरदेवाय नमः।
10. ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथस्य श्रीकुंथुगणधरदेवाय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथस्य श्रीधर्मगणधरदेवाय नमः।
12. ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथस्य श्रीमंदरगणधरदेवाय नमः।
13. ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथस्य श्रीजयमुनिगणधरदेवाय नमः।
14. ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथस्य श्रीअरिष्टसेनगणधरदेवाय नमः।
15. ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथस्य श्रीअरिष्टसेनगणधरदेवाय नमः।
16. ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथस्य श्रीचक्रायुधगणधरदेवाय नमः।
17. ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथस्य श्रीस्वयंभूगणधरदेवाय नमः।
18. ॐ ह्रीं श्रीअरनाथस्य श्रीकुंभगणधरदेवाय नमः।
19. ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथस्य श्रीविशाखगणधरदेवाय नमः।
20. ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथस्य श्रीमल्लिगणधरदेवाय नमः।
21. ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथस्य श्रीसुप्रभगणधरदेवाय नमः।
22. ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथस्य श्रीवरदत्तगणधरदेवाय नमः।
23. ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथस्य श्रीस्वयंभूगणधरदेवाय नमः।
24. ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः श्रीइन्द्रभूतिगणधरदेवाय नमः।

संकलन : मुनि विशाल सागर जी

संघस्थ आचार्य विशद सागर जी महाराज

स्तवनं

यत्सम्यक्तमनंत शक्तिसहितं, सत्क्षायिकं रोचनं।
निःशेष प्रतिपंथिमंथक महा-मोह प्रणाशप्रभुं।।
इत्वैधेत सुशर्म्मभिः शिव वधुःवक्त्रे क्षणौत्थैः परै।
र्यस्तत्सिद्ध गणोददातुसपरं नः साम्यपियूषकं।।1।।
एकं सम्मत-मंत्र-लक्षण मुखं, जानंति ये कोविदात्र!
स्तेषां निर्भरचेतसां, भवतियः स्तोकोवचोऽशक्यकं।।
लोका-लोकमनेन पर्ययपरं, सर्वसमक्षं सदा।
येषां तोष इहैवकन कथितुं शक्याश्च तेषां परं।।2।।
नाना दृष्टि विनायक क्षय भवं, सद्ग्राहकं वस्तुनो।
येषां ज्ञानसमं विभाति सततं, सद्दर्शनै दर्शनं।।
अंतातीत गुणेद्ध पर्ययवतस्ते सर्वदोद्योतनाः।
नित्यानन्द समुज्वला, निरुपमा नः पांतु सिद्धा सदा।।3।।
एकानेक विभिन्ननव्य सुगुणः वितरणोद्भवध्रौव्यता।
सांकर्यादि विविक्तवस्तु सुपरिच्छित्ते सदा प्रस्फुरत।।
वीर्येयद्भवतां सुविघ्नकरणं, ध्वंस प्रभूतोदयं।
सिद्धानांसततं विभातिपरमं, तस्मै नमो भक्तितः।।4।।
यद्वाध्ययनपरैः कदाचिदपराणि नोव्यसद् बाधकं।
नालोक्यं निखिलांतरार्थमपियत् दृश्यातिगं सर्वगः।।
यन्माहात्म्यतरं जिनेन्द्रवचनै-र्वक्तुं न शक्यं सदा।
तत्सूक्षमत्वमहं दधेहृदि शिवावसिद्धिसत् संगमम्।।5।।
अन्योन्यव्यवगाह्य लोकशिरसि, प्रोत्तुंग सिद्धशिलां।
हित्त्वा किंचनहीन योजन महावातं समा सार्थगाः।।
इत्वायेच समासते नमनिमास्युः कर्मभेदोद्भवाः।
नंतानंतमयावगाहनगुणा-स्तेषां परीक्षा भुवि।।6।।
तन्वाख्यस्वसनर्कतूलवदि हेतश्, च दंड रूपेततो।
नोभ्राम्यंति पतंतियेन च निरा लंबत्त्वताधृक्षणात्।।

विद्यागाहत गोत्रजांगुरु लघु, महात्म्यामि वातेऽखिलं।
तेषां तत्परमावगाढ़ गुणता रूपात्मनां दित्मनां।।7।।
यत्काल त्रय ताप जातगद कृद्वेद्यस्य संभ्रंशनात्।
सिद्धनानोद्भूत चन्द्र हास्य विधिना, कालत्रये योगतः।।
किंचिद्वै फल मुत्तमंतु भगवतां, जातं जगत्पूजितं।
अव्यावाध वतीए शक्ति सहितं, तत्सर्व वाधा पहं।।8।।
एतान् सर्वान् शिवानां विशदतर गुणानंतराशेर्गुणाय।
ध्यानार्थ चोद्धनान्सु प्रविमलमना, ये संपठंति त्रिकालं।।
दध्यायंते विबुधाः परम पद सुखं, प्राप्नुवंतिप्रसिद्धैः।
'शौभचन्द्रं' सुशांतं त इह सुभवनाशोद्भवं वाद्वितीयं।।9।।

(इति गणधरवलय स्तुति)

यंत्र रचना

मध्ये षट्कोणचक्रं लिखितु जिनपतेः क्ष्माक्षरं पीठबन्धं,
वामे ह्रीं दक्षिणे इ्वीं श्रियमधरतले तेषु संव्यापसव्यम्।
कोष्ठेष्वप्रातिचक्रे फडिति च सविचक्राय होमान्तमन्त्रं,
श्री देवीनाञ्च षण्णां बहिरपि विलिखेन्मन्त्रदुर्गास्य कोंणे।।1।।
प्रदक्षिण्यां सहोमं सकलशशिवृतं पूर्णचन्द्रावृतं तत्,
चैकद्वित्रिघनपत्राष्टकवलयदलेष्वों हियार्हं नमोऽग्रेः।
मन्त्रैरावेष्ठ्ये वाह्येगणधरवलये ह्रीं त्रिधा क्रौं निरुध्य,
यन्त्रं तत्पञ्चशून्यैरखिलगुरुपदाद्यक्षरैर्मूलमन्त्रैः।।2।।
झौं झौं स्वाहान्तगर्भैर्भुवनपति जिनः झौं णमो होम युक्तैस्,
ताम्रे पत्रे पटे वा कनकगणिकया लेख्यसौगन्ध्यर्गन्धैः।
अभ्यचेद् द्यः सदाग्रै परमजिनपतेः संजपंचरुपुष्पैर्,
हस्तप्राप्त महतामलक फलमिव स्वेष्टसिंद्धिं प्रयांति।।3।।

(पुष्पाञ्जलि)

श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजन

स्थापना

दोहा– **ऋषभादिक चौबीस जिन, जग में हुए महान।**
विशद हृदय में आज हम, करते हैं, आह्वान्॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

यह शीतल जल भर लाए, निज प्यास बुझाने आए।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन भवताप नशाए, हम ताप नशाने आए।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 2॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

हम अक्षत नाथ चढ़ाएँ, निज अक्षय निधि प्रगटाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 3॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, प्रभु शील सम्पदा पाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 4॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

संज्ञा अहार विनशाएँ, रुज क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 5॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मिथ्या का घोर अँधेरा, नश जाए अब प्रभु मेरा।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 6॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अब घाती कर्म नशाएँ, निज गुण अपने प्रगटाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 7॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल कर्म का है दुखकारी, अब फले सुगुण की क्यारी।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 8॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

निज आतम शक्ति जगाएँ, पावन यह अर्घ्य चढ़ाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥ 9॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **पद तीर्थंकर का प्रभू, पाए मंगलकार।**
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव से पार॥

(चौपाई)

आदिनाथ आदी में आए, अजित नाथ सब कर्म नशाए।
सम्भवनाथ कहे जग नामी, अभिनन्दन हैं शिव पथगामी॥
सुमतिनाथ शुभ मति के धारी, पद्मप्रभू जग मंगलकारी।
जिन सुपार्श्व महिमा दिखलाए, चन्द्र प्रभु चन्दा सम गाए॥1॥
सुविधिनाथ है जग उपकारी, शीतल जिन शीतलता धारी।
जिन श्रेयांस जी श्रेय जगाए, वासुपूज्य जग पूज्य कहाए॥
विमलनाथ कर्मों के जेता, जिनानन्त हैं कर्म विजेता।
धर्मनाथ हैं धर्म के धारी, शांतिनाथ जग शांतीकारी॥2॥
कुन्थुनाथ के गुण जग गाये, अरहनाथ पद शीश झुकाए।
मल्लिनाथ सब कर्म हटाए, मुनिसुव्रत पावन व्रत पाए॥

नमीनाथ पद नमन हमारा, नेमिनाथ दो हमें सहारा।
पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, ढोक वीर पद में जग देता।।3।।
चौबिस जिन महिमा के धारी, कहे स्वयंभू जिन अविकारी।
जो इनके पद पूज रचाये, पुण्य निधी वह प्राणी पाए।।
जिन की महिमा यह जग गाये, अर्चाकर सौभाग्य जगाए।
भाग्य उदय मेरा अब आया, नाथ आपका दर्शन पाया।।4।।
द्वार आपका अतिशयकारी, श्रावक सुधि आते अनगारी।
भक्ति भाव से महिमा गाते, पद में सविनय शीश झुकाते।।
गाते हैं जो भजनावलियाँ, खिलती हैं भक्ती की कलियाँ।
भाव बनाकर हम यह आये, शिव पद हमको भी मिल जाए।।5।।

दोहा

शिव पद के धारी हुए, तीर्थंकर चौबीस।
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

पूजा करते आपकी, तीन लोक के नाथ।
राह दिखाओ मोक्ष की, चरण झुकाते माथ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

गणधर वलय पूजा

स्थापना

तीर्थंकर चौबीस हुए हैं, करुणाकर करुणाकारी।
गणधर चौदह सौ बावन शुभ, हुए लोक में दुखहारी।।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, झेले हैं जो महति महान।
जिनकी अर्चा करने हेतू, करते हम उर में आह्वान।।

दोहा

नाथ! आपकी देशना, करे जगत् कल्याण।
अत: भाव से आज हम, करते हैं गुणगान ।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानम् । ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेय फट् विचक्राय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम् । ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेय फट् विचक्राय अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निर्मल यह नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
हम जिन गणधर को ध्याएँ, निज में श्रद्धान जगाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झौं झौं नम: जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभित ये गंध चढ़ाएँ, संसार ताप विनशाएँ।
हम जिन गणधर को ध्याएँ, निज में श्रद्धान जगाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झौं झौं नम: गंधं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ये धवल चढ़ाएँ, पावन अक्षय पद पाएँ।
हम जिन गणधर को ध्याएँ, निज में श्रद्धान जगाएँ ।।3।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झौं झौं नम:अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुष्पों ये पूज रचाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
हम जिन गणधर को ध्याएँ, निज में श्रद्धान जगाएँ ।।4।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झौं झौं नम: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
हम जिन गणधर को ध्याएँ, निज में श्रद्धान जगाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झौं झौं नम: चरूं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का शुभ दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
हम जिन गणधर को ध्याएँ, निज में श्रद्धान जगाएँ ।।6।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झौं झौं नम:दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभित ये धूप जलाएँ, कर्मो से मुक्ती पाएँ ।
हम जिन गण्धर को ध्याएँ, निज में श्रद्धान जगाएँ ।।7।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झौं झौं नम: धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल से हम पूज रचाएँ, मुक्ती फल शिव पा जाएँ।
हम जिन गणधर को ध्याएँ, निज में श्रद्धान जगाएँ ।।8।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झौं झौं नम: फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

पावन ये अर्घ्य बनाए, पाने अनर्घ्य पद आए ।
हम जिन गणधर को ध्याएँ, निज में श्रद्धान जगाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झौं झौं नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा – **देके शांती धार हम, पाएँ सम्यक्ज्ञान ।**
प्रगट होय मेरे विशद, वीतराग विज्ञान ।।

शान्तये शान्ति धारा

पुष्पों से पुष्पांजलि, करते हैं हम आज ।
यही भावना है विशद, पाएँ निज स्वराज ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

अथ जयमाला

दोहा– **गण नायक गणनाथ तुम, गणपति गणधर ईश।**
गाएँ तव जयमालिका, चरण झुकाकर शीश।।

पद्धरि छन्द

जय जय मुनि श्री गणधर प्रधान, जिनकी ध्वनि सुनते हैं महान।
कई मुनि श्रावक भी सुनें साथ, तव पद पूजें हम नित्य नाथ!।।
तव दर्शन से सब कटें पाप, श्री तीर्थंकर के शिष्य आप।
गणधर मुनि चौंसठ ऋद्धिधार, भविजन को देते श्रेष्ठ सार।।
शुभ द्वादशांग वाणी अपार, रचते गणधर मुनि ग्रन्थसार।
धर बीज बुद्धि ऋद्धी गणेश, चौदह पूरब रचते विशेष।।
तुम गर्भ जन्म तप ज्ञान युक्त, जिन पूजा भक्ती से संयुक्त।
मन वांछित कारज सिद्ध सार, सुख रिद्धि सिद्धि धर हो अपार।।
तुम कोष्ठ बुद्धि धारी महान, तव पूजन से हो कर्म हान।
तव शरण गही हमने अपार, तुमको पूजें हम बार-बार।।
मुनि गणधर जिन पूजा रचाय, अरु कर्म निर्जरा फिर कराय।
अक्षीण महानस-ऋद्धि धार, गणधर करते मंगल अपार।।
हे दीन दयालु कृपा निधान, हमको अक्षय पद दो महान।
तुमसा न कोई दयावान, तुम जिन संतों में हो प्रधान।।
महिमा का तुमरी नहीं पार, तुम हो भव्यों के कण्ठहार।
हम चरण वन्दना करें नाथ, तव चरण कमल में झुका माथ।।
हम करें वन्दना चरण आन, दो हमको भी गुरु ज्ञान दान।
तव चरण झुकाते 'विशद' माथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।

दोहा- **अर्चा करते भाव से, हे त्रिभुवनपति ईश।**
राह दिखाओ मोक्ष की, झुका रहे पद शीश।।

दोहा- **गणधर गुणपूजा करें, प्राणी भव्य महान।**
मन वांछित फल प्राप्त कर, अन्त लहें निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवानां श्री वृषभसेनादि द्विपञ्चाशत् अधिक चतुर्दश शत् गणधरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

श्री आदिनाथ पूजा-1

स्थापना

दोहा- धर्म प्रवर्तक जिन हुए, जग में आप महान।
आदिनाथ भगवान का, करते हम आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जो निर्मल नीर चढ़ाएँ, वे तीनों रोग नशाएँ।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन भवताप नशाए, जो भाव से पूज रचाएँ।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाए॥2॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत अक्षय पद दायी, इस लोक में गाया भाई।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित जो पुष्प चढ़ाएँ, वे काम रोग विनशाएँ।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य क्षुधा का नाशी, नर पद पाए अविनाशी।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पूजा को दीप जलाए, वह मोह को जीव नशाए।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुरभित जो धूप जलाए, वह आठों कर्म नशाए।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल ताजे सरस चढ़ाए, वह मोक्ष महाफल पाए।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाने लाए, पाने अनर्घ पद आए।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

दोहा

द्वितिया कृष्ण आषाढ़ की, आदिनाथ भगवान।
सर्वार्थ सिद्धि से चय किए, पाए गर्भ कल्याण।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण नौमी प्रभु, पाए जन्म कल्याण।
शत् इन्द्रों ने न्हवन कर, किया प्रभू गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नील परी की मृत्यु लख, धरे आप वैराग।
चैत कृष्ण नौमी तिथी, छोड़ चले सब राग।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार घातिया नाशकर, पाए केवल ज्ञान।
फागुन वदि एकादशी, जग में हुई महान।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी, कीन्हे कर्म विनाश।
मोक्ष कल्याणक प्राप्त कर, किए सिद्ध पद वास।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृषभनाथ गणधर पूजा

गणधर श्री वृषभेष के, जग में हुए महान।
'वृषभसेन' वृष दे गये, करते हम गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो 'वृषभसेन' गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

न्हवन करो वृष गंग में, कहते गंग 'गणेश'।
धर्म वस्तु स्वभाव है, दिए विशद उपदेश।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो 'गंग' गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

यम धारे 'गोयम' गणी, बने आप अनगार।
मुक्ती पथ पर जो बढ़ें, होकर के अविकार।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो गोयम गणधराय नमः अर्घ्यं नि़. स्वाहा ।

अनुगामी जिनदेव के, 'जिन' गणधर का नाम।
जीते विषम कषाए जो, जिन पद विशद प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो जिन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

मोक्ष मार्ग पर बढ़ चले, गणधर जिन 'ईशान'।
जगत हितैषी जो कहे, तीनों लोक महान।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो ईशान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर 'स्पृह' जी कहे, स्पृह रहते आप।
नाम जाप से आपके, कटते सबके पाप।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो स्पृह गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर आदीनाथ के, जिनका नाम 'अनन्त'।
जिनके पद वन्दन करें, सुर नर मुनि सब संत।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो अनन्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा

'अन्तर्मन' गणराज हैं, जो अर्हन्त समान।
वीतरागता के धनी, अतिशय आभावान।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो अन्तर्मन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हैं गणेन्द्र जिनराज के, 'शेखर' जिनका नाम।
जिनके चरणों में विशद, बारम्बार प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो शेखर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'सखिर' नाम गणराज का, ध्याते जग के लोग।
ध्याते हैं हम भाव से, पाने शिव सुख भोग।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सखिर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'उपदशि' गणधर की नहीं, महिमा का है पार।
गणधर आदि जिनेश के, गाये अपरम्पार।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो उपदशि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'नलित' रहे गणधर परम, मुक्ती पथ के ईश।
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो नलित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

तीन लोक में पूज्य हैं, गणधर श्री 'लोकेश'।
भाव सहित जिनके चरण, पूजें भक्त विशेष।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो लोकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर आदिनाथ के, जग में रहे प्रसिद्ध ।
जिनपद पूजा हम करें, जिनका नाम है 'सिद्ध'।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सिद्ध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'नेमि' आपका नाम है, जग में पूज्य त्रिकाल।
भक्त आपके चरण में, करते हैं नतभाल ।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो नेमि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

शिव पथ के राही कहे, पंथा जिन गणराज।
अष्ट द्रव्य से पूजते, चरण आपके आज।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो पंथा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'प्रबल' काम के वेग को, जीत हुए शैलेष।
प्रबल नाम पाए विशद, जग में पूज्य विशेष।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो प्रबल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम 'मयासी' आपका, विजयी काम कलंक।
जो पूजें जिनके चरण, हो जावें निशंक।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो मयासी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'तायासी' गणराज की, करें वन्दना तीन।
वे प्राणी भव पार हों, हो भक्ती में लीन।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो तायासी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गुरु गुण के धारी कहे, श्री 'गुरुदत्त' गणेश।
चरण वन्दना कर रहे, पाने सद् संदेश ।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो गुरूदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'कुलगति' जिनका नाम है, गणधर पद को धार।
'स्वयं' आपके साथ ही, किया जगत उद्धार।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो कुलगति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

पूज्य हुए इस लोक में, केवल आप गणीश।
चरणों में हम आपके, झुका रहे हैं शीश।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो केवल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम 'कमल' प्रभ आपका, जग में कमल समान।
वीतरागता धारते, पानें पद निर्वाण।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो कमल प्रभा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा

नाम 'सुकेवल' प्राप्त कर, पाए केवलज्ञान।
ध्यान लगाया आत्म का, पाने शिव सोपान।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सुकेवल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गण नायक 'कृतमन्य' हैं, आप हुए कृतकृत्य।
शिवपुर के राही बने, जो जिनके आश्रित्य।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो कृतमन्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहे 'सदेशि' गणधर मुनी, संयम के सरताज।
अर्चा जिनकी कर विशद, पाना शिव स्वराज।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सदेशि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

(सोरठा)

गणधर का है नाम, श्री 'विमलप्रभ' श्रेष्ठतम।
करते चरण प्रणाम, भक्ति भाव से आज हम।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो विमलप्रभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

प्रभू 'सकलप्रभ' आप, कहलाते हो लोक में।
कट जाते सब पाप, नाम जाप से आपके।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सकलप्रभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि स्वाहा ।।

है 'त्रिपुष्टि' शुभ नाम, गणधर आदिनाथ के।
तव पद विशद प्रणाम, करते भक्ती भाव से।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो त्रिपुष्टि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।।

'धरपुष्टि' गणराज, पद अविनाशी पाए हैं ।
पूजे सकल समाज, जिनके चरण भाव से।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो धरपुष्टि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'सरोजपुष्टि' है नाम, महिमा जिनकी अगम है।
पद में हो विश्राम, मेरा भी जिनके विशद।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सरोजपुष्टि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहे 'वत्य मुनि' आप, मुनी संघ नायक परम।
कट जाते हैं पाप, ध्याये जो शुभ भाव से ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो वत्यमुनि गणधराय नमः अर्घ्यं नि स्वाहा ।

अविकारी जिन संत, 'धृतपुष्टि' कहलाए है।
हो कर्मों का अंत, ध्याते हम तव चरण में ।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो धृतपुष्टि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।।

'पुष्पकांत' है नाम, श्री जिन के गणराज का।
पाना पद विश्राम, नाथ आपके चरण में ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो पुष्पकांत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहलाए गणराज, 'हस्तगाम' शुभ नाम धर।
झुका रहे हैं ताज, सुर नर पशु के इन्द्र सब ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो हस्तगाम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सुरै' नाम शुभकार, गाया है जिन शास्त्र में ।
करते चरण प्रणाम, भाव सहित हम आपके।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सुरै गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'यस्यो' कहे जिनेश, सम्यकज्ञानी आप हो।
चरणों नमन विशेष, करते हैं हम भाव से ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो यस्यो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

पाएँ नाम 'सुरेन्द', गणधर आदीनाथ के ।
पूजे चरण शतेन्द्र, भक्ति भाव से विनत हो ।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सुरेन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'वर्धमान' शुभ नाम, गणधर का है श्रेष्ठतम।
पाएँ पद विश्राम, यही भावना है विशद।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो वर्धमान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहे 'सुधिष्टर' आप, गणधर हैं निर्ग्रन्थ गुरु।
कट जाते हैं पाप, जिन पद का अर्चन किए ।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सुधिष्टर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर का शुभ नाम, 'कंचिद्धर' अति श्रेष्ठतम।
करते चरण प्रणाम, भक्ति भाव से जीव सब ।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो कंचिद्धर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

दीक्षा दक्ष महान, 'दीक्षित' गणधर जी कहे।
करते हम गुणगान, दीक्षा पाने के लिए ।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो दीक्षित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

आप अलौकिक नाथ, नाम 'उपागत' पाए हो।
चरण झुकाते माथ, चरणों सुर नर मुनी सभी ।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो उपागत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'श्रृत्वानिर्वेद', गणधर आदीनाथ के।
हरने वाले खेद, राही मुक्ती मार्ग के।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो श्रृत्वानिर्वेद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुर इन्द्रों से पूज्य, हे 'सुरेन्द्र' तव पद नमन।
हम क्यों रहें अपूज्य, चरण शरण के दास तव।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सुरेन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा

जित् इन्द्रिय 'जिननाथ', आप कहाए लोक में।
हमको भी दो साथ, मोक्ष मार्ग हम बढ़ें।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो जिननाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है दूषण से हीन, नाम विभूषण आपका।
रहें भक्ति में लीन, नाथ आपके चरण में।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो विभूषण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'सूरास्तंभ' महान, सत्पथ के दाता परम।
पाने शिव सोपान, रत्नत्रय धारी बने।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सूरास्तंभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

खोट रही ना कोय, 'विचित्रकोट' के भाव में।
हम भी पाएँ सोय, श्रेष्ठ संयमाचरण अब ।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो विचित्रकोट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तुम हो चन्द्र समान, हे 'चन्द्रप्रभ' लोक में।
करें विशद गुणगान, भव्य जीव आके चरण।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो चन्द्रप्रभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि स्वाहा।

'कृष्ण' आपका नाम, शुक्ल लेश्या के धनी।
बारम्बार प्रणाम, करते हैं तव चरण में ।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो कृष्ण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

किए आप परिहार, 'प्राव्राजी' हर भेष को।
बने आप अनगार, राही मुक्ती मार्ग के।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो प्राव्राजी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मनःपर्यय सद् ज्ञान, गणधर 'अर्हंमन' कहे।
किए जगत कल्याण, पाए शिव पद आप भी।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो अर्हंमन गणधराय नमः अर्घ्यं नि स्वाहा।

'विजयाखिल' गणराज, आदिनाथ के गाए हैं।
पूजे सकल समाज, चरण कमल द्वय आपके।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो विजयाखिल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर कहे 'सवेग', आदिनाथ के श्रेष्ठतम।
धारे जो संवेग, राग त्याग जग में विशद।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सवेग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कुलकर है शुभ नाम, गणधर का जिन आदि के।
यह जग करे प्रणाम, चरणों में विशद।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो कुलकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

(दोहा)

आदिनाथ भगवान के, गणधर कहे 'सिंलाप'।
जिनकी अर्चा से सभी, कट जाते हैं पाप।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सिंलाप गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर का शुभ नाम है, पावन परम 'विशाल'।
भवि जीवों का मैटते, बना कर्म का जाल।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो विशाल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर जी 'बोधित' कहे, बोधी करें प्रदान।
बोधि प्राप्त करने विशद, करते हम गुणगान।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो बोधित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'भैरव' गणधर के चरण, पूज रहे हम आज।
यही भावना है विशद, पाएँ शिव पद राज।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो भैरव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर हैं 'समकीर्ति' जी, आदिनाथ के साथ।
सुर नर मुनि अर्चा करें, चरण झुकावें माथ।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो समकीर्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

पावन गणधर का रहा, 'सोमसेन' शुभ नाम।
भव्य चरण में विनय युत, करते सदा प्रणाम।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सोमसेन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम 'सुष्टि' पावन परम, पाए जिन गणराज।
जिनके संयम साधना, पर करता जग नाज।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सुवृष्टि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'रजो' नाम धारी हुए, गणधर महति महान।
भव्य जीव करते सदा, जिनका भी गुणगान।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो रजो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम 'अदाउपाद' है, गणधर का शुभकार।
जिनके चरणों में विशद, वन्दन बारम्बार।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो अदाउपाद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर 'मागधवृंद' की, महिमा अपरम्पार।
भक्त करें जो अर्चना, वे पावें भव पार।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो मागधवृंद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'महाछेद' गुण के धनी, कीन्हें कर्म विनाश।
कर्म नाशकर के प्रभू, पाए शिवपुर वास।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो महाछेद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम 'वज्रतर' श्रेष्ठतम, पाए गण के ईश।
जिनके चरणों भव्य जन, विनत झुकाएँ शीश।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो वज्रतर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहे 'शिताव्रत' जिनगणी, लिए व्रतों को धार।
आत्म ध्यान करके स्वयं, किए जगत उद्धार।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो शिताव्रत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

आदिनाथ भगवान के, गणधर 'मारिच्छेद' ।
जग के जीवों का विशद, हरण किए जो खेद।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो मारिच्छेद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर का है नाम शुभ, 'भगवन' महति महान।
जिन संतो के बीच में, हुए आप भगवान।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो भगवन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर आदि जिनेश के, 'शक्ति' पाए शुभ नाम।
जिनकी अर्चा से विशद, बिगड़े बनते काम।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो शक्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर जी का नाम है, चेतन चिद् 'चिद्रूप'।
रत्नत्रय धारी बने, पाने निज का स्वरूप।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो चिद्रूप गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'निर्मल' गणधर जी हुए, निर्मल कर परिणाम।
निर्मलता पाने विशद, करते चरण प्रणाम।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो निर्मल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

शिव पथ के राही बने, गणधर कहे 'अरूप'।
महिमा गाते भाव से, जिनकी सुर नर भूप।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो अरूप गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'त्वांस्तविमि' गणधर कहे, पाए सद् श्रद्धान ।
जिनकी महिमा है अगम, करते हम गुणगान।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो त्वांस्तविमि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वाल्मीक' गणधर बने, संयम धार ऋशीष।
जिनके चरणों में विनत, झुका रहे हम शीश।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो वाल्मीक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'अनन्तनाथ' गणधर कहे, आदिनाथ के संत।
सर्व परिग्रह छोड़कर, हुए आप निर्ग्रन्थ।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो अनन्तनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

पाए गणधर जी विशद, श्रेष्ठ 'नन्दिता' नाम।
यही भावना भा रहे, जिन पद हो विश्राम।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो नंदिता गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'परमपूज्य' गणधर कहे, जगत पूज्य त्रिकाल।
जिनके चरणों में सभी, झुका रहे नत भाल।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो परमपूज्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

आदिनाथ के गणी का, 'श्रृत्त्वाधृत' है नाम।
जिनकी अर्चा कर सभी, बन जाते हैं काम।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो श्रृत्त्वाधृत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जल्लौषधि ऋद्धी विशद, पाए 'जल्लो' संत।
गणधर पदवी प्राप्त कर, किए कर्म का अंत ।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो जल्लो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर 'नोमद' नाम के, जग में हुए प्रसिद्ध।
सारे कर्म विनाशकर, हुए श्री जिन सिद्ध ।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो नोमद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहलाए 'चामर' गणी, आदिनाथ के भक्त।
जिन भक्ती में लीन जो, रहते थे हर वक्त।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो चामर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

आदिनाथ भगवान के, पावन हुए गणेश।
चौरासी संख्या कही, पूज्य हुए अवशेष।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं झीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झौं झौं वृषभनाथस्य वृषभसेनादिचतुरशीति गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

इति श्री वृषभसेनादि चतुरशीतिगणधराय नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

शीश झुकाते आपके, चरणों बालाबाल।
आदिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल।।

(पद्धरि छन्द)

जय भोग भूमि का अन्त पाय, जय ऋषभदेव अवतार आय।
जय पिता आपके नाभिराय, जय माता मरुदेवी कहाय।।1।।
जय अवधपुरी नगरी प्रधान, घर-घर में छाया सुयश गान।
सौधर्म इन्द्र तब हर्ष पाय, तव न्हवन मेरु पे जा कराय।।2।।
प्रभु के पद में करके प्रणाम, तव ऋषभनाथ शुभ दिया नाम।
शुभ धनुष पाँच सौ उच्च देह, जन-जन से जिनको रहा नेह।।3।।
लख पूर्व चौरासी उम्र जान, षट्कर्म की शिक्षा दिए मान।
नीलांजना की मृत्यू का योग, पाके छोड़े संसार भोग।।4।।
तव नग्न दिगम्बर भेष धार, निज में निज ध्याये निराकार।
प्रगटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान, प्रभु दिव्य देशना दिए जान।।5।।
फिर 'विशद' कर्म का कर विनाश, शिवपुर में जाके किए वास।
अष्टापद गाया मोक्ष थान, जो सिद्ध क्षेत्र गाया महान।।6।।

दोहा

पुण्य पाप तज के प्रभू, किए आत्म का ध्यान।
मोक्ष महल में जा बसे, आदिनाथ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

करें वन्दना इन्द्र सौ, चरणों की भगवान।
मौका हमको भी मिले, जागे भाव महान॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री अजितनाथ पूजन-2

स्थापना

दोहा– **कर्म विजेता जिन हुए, अजितनाथ भगवान।**
विशद हृदय में आपका, करते हम आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा

नीर चढ़ाते भाव से, रोगत्रय हों नाश।
शिवपथ के राही बनें, पाएँ शिवपुर वास॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन लाए श्रेष्ठ हम, घिसकर यह गोशीर।
चढ़ा रहे हैं भाव से, पाने भव का तीर॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत लाए श्वेत यह, चढ़ा रहे पद नाथ।
अक्षय पद पाएँ प्रभो!, झुका चरण में माथ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाते भाव से, काम रोग हो नाश।
मुक्ती हो संसार से, पायें शिवपुर वास॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस लिए नैवेद्य यह, पूजा करने आज।
क्षुधा रोग का नाश कर, पाएँ शिव पद राज।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप जलाते श्रेष्ठ हम, चहुँ दिश होय प्रकाश।
यही भावना है विशद, होय महातम नाश।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप जलाने लाए यह, अग्नी में भगवान।
अष्ट कर्म का नाशकर, पाएँ पद निर्वाण।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल से पूजा हम करें, आज यहाँ पर नाथ।
मोक्ष महाफल प्राप्त हो, झुका चरण में माथ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

आठों द्रव्यों का विशद, लाए बनाके अर्घ्य।
अन्तिम है यह कामना, पाएँ सुपद अनर्घ्य।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

वदी अमावस जेठ की, पाए गर्भ कल्याण।
अजितनाथ का देव सब, किए विशद गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल दशमी प्रभू, अजित नाथ भगवान।
न्हवन कराकर मेरु पे, किए इन्द्र जय गान।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ल दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल दशमी तिथी, पाए तप कल्याण।
इस जग का वैभव तजा, किए आत्म का ध्यान।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ल दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल एकादशी, पाए केवल ज्ञान।
दिव्य देशना दे प्रभू, किए जगत कल्याण।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की पञ्चमी, पाए पद निर्वाण।
सिद्ध लोक में जा बसे, अजितनाथ भगवान।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ गणधर पूजा

(चौपाई छन्द)

'सिंहसेन' गणधर कहलाए, पावन जगत पूज्यता पाए।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सिंहसेन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'चक्री' गणधर नाम बताया, जग को देते शीतल छाया।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो चक्री गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'रथनो' गणधर हैं मनहारी, संयम धार बने अनगारी।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो रथनो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'मन्दिरस्थित' गणधर जानो, मुक्ती पथ के राही मानो।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो मंदिरस्थित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'श्रुत' गणधर का नाम बताया, जिन से मिलती श्रुत की छाया।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो श्रुत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणी कहे 'कृतकमल' निराले, सबका संकट हरने वाले।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो कृतकमल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'गंगाखेट' कहाए, पावन मुक्ती पथ अपनाए।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो गंगाखेट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'कच्छि' कहे गणधर अविकारी, जिनकी महिमा जग से न्यारी।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो कच्छि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'नटसी' नाम आपने पाया, नट कर्मो को आप हराया ।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो नटसी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'तत्पुर' आप कहाए स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो तत्पुर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विक्रम' रहे पराक्रमधारी, कहलाए पावन अविकारी।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो विक्रम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम 'समाधिश' जिनने पाया, परम समाधी को अपनाया।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो समाधिश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'उपाद' मुक्ती के राही, संयम धारे हो उत्साही।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो उपाद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'बलधर' गणी श्रेष्ठ कहलाए, बलानन्त अपना प्रगटाए।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो बलधर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जिन्हें 'विवेकसि' कहते प्राणी, जो हैं जन-जन के कल्याणी।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो विवेकसि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'नामस्थित' शिव पाने वाले, गणधर जग में कहे निराले।
समवशरण में सोहें भाई, अजिताथ के मंगल दायी।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो नामस्थित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'गौतम' नाम रहा जगनामी, गणधर बने आप शिवगामी।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो गौतम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'गुणग्रण्या' गणधर कहलाए, गुणग्राही इस जग में गाए।
समवशरण में सोहे भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो गुणग्रण्या गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'राधिप' नाम रहा जग जाना, गणधर जिनको जग ने माना।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगलदायी।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो राधिप गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अलोकांत' अतिशय के धारी, जिनकी महिमा जग से न्यारी।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो 'अलोकांत' गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'अगम्य' तुमको हम ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो अगम्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'बिन्दु' सिन्धु के कारण गाए, इस जग का सन्ताप नशाए।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो बिन्दु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सर्वज्ञ' चराचर ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्यविधाता।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सर्वज्ञ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'अशोक' सब शोक विनाशी, पावन केवल ज्ञान प्रकाशी।
समवशरण में सोहें भाई, अजितनाथ के मंगल दायी।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो अशोक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(सखी छन्द)

जिनराज 'महर्षि' गाए, ऋषियों में श्रेष्ठ कहाए।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो महर्षि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'बीजबुद्धि' गुणधारी, तुम हो जग मंगलकारी।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो बीजबुद्धि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'परमावधि' ऋद्धी पाए, पावन संयम अपनाए।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो परमावधि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'गगनगामी' कहलाए, शुभ गमन गगन में पाए।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो गगनगामी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सर्वावधि' नाम के धारी, हैं ज्ञानी जग उपकारी।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सर्वावधि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'परसि' आप हितकारी, हो जग में गुरु अविकारी।।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो परसि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनिवर 'विहाय' कहलाए, जो गगन विहारी गाए।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो विहाय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'जिववृंद' रहे अविकारी, जिनकी चर्या मनहारी ।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो जिववृंद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'अक्षीण' क्षीण ना होते, जग जन की जड़ता खोते ।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो अक्षीण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'ऋजुमति' आप कहलाए, मनःपर्यय ज्ञान जगाए ।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो ऋजुमति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'सम्यक्त्व' नाम जो पाए, सम्यक्त्व विशद प्रगटाए।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सम्यक्त्व गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'सर्वज्ञपुत्र' हे ज्ञानी, हो जग जन के कल्याणी ।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सर्वज्ञपुत्रगणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे कृत प्रदान शिव गामी, तुम रत्नत्रय के स्वामी ।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो कृत्प्रदान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'परोपकार' उपकारी, तव वृत्ती विस्मयकारी।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो परोपकार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'परमोहि' आप निराले, जग मंगल करने वाले ।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो परमोहि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहलाए 'लोकवित', स्वामी हे त्रिभुवनपति शिवगामी।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो लोकवित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'दयांकुरू' अविकारी, कहलाए धर्म प्रचारी।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो दयांकुरू गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'चारण' हे ऋद्धी धारी, पावन तुम गगन विहारी।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो चारण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'पथो' आप शिवगामी, कहलाए अन्तर्यामी।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो पथो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'गुरु' आप कहे गुणधारी, हो जग जन के उपकारी।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो गुरु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हम 'नाथ' आपको ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो नाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'वर्णाभ' की आभा न्यारी, जिनको ध्याते नर नारी।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो वर्णाभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'शुद्धार्थ' सुबोध जगाए, जो विशद ज्ञान को पाए।
श्री अजित नाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो शुद्धार्थ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'उपदेशि' आप कहलाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
श्री अजितनाथ के भाई, गणधर गाए शिवदायी।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो उपदेशि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(मोतिया दाम)

कहाए गणधर श्री 'रतिदान', किए जो निज आतम कल्याण।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो रतिदान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'वबन्ध' हैं गणधर सर्व महान, ऋषी मुनियों में रहे प्रधान ।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो वबंध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहाए 'शत्रव' जिन गणराज, पूजता जिनको सकल समाज।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो शत्रव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'गंग' गणधर कहलाए भ्रात, रहे जो इस जग में विख्यात।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।। 52।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो गंग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहाए 'दुष्टकोटि' गणराज, प्राप्त कर लिए मोक्ष साम्राज्य।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो दृष्टकोटि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'अयागमन' आवागमन विनाश, किए शिवपुर में जाके वास।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो अयागमन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'स्थिति' गणधर हो अनगार, जगाए विशद ज्ञान मनहार।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो स्थिति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहाए 'जर्जित' श्री गणेश, पूज्य इस जग में हुए विशेष।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो जर्जित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम है 'पूर्णचन्द्र' शुभकार, पूर्ण सब किए जगत के कार्य।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो पूर्णचन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'विदारित' कहलाए हो आप, बने गणनायक नाशी पाप।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो विदारित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मत्सदा' पावन जिनका नाम, चरण में करते विशद प्रणाम।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो मत्सदा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'ख्यात' इस जग में रहे महान, करे जग जिनका शुभ गुणगान।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो ख्यांत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणी कहलाए हैं 'गंगादत्त', झुके जिनके चरणों कई भक्त।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो गंगादत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम गणधर का है 'द्रौणीन्द्र', चरण में झुकते सुर नर इन्द्र।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो द्रौणीन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहाए गणधर जी 'कालेन्द्र', पूजते जिनके चरण शतेन्द्र।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो कालेन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'वसालधू' है गणधर का नाम, भक्त जिन चरणों करें प्रणाम।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो वसालधू गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणी कहलाए श्री 'निघोष', रहे सद् गुण के अनुपम कोष।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो निघोष गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणी 'सूतंब' रहे गुणवान, करें जिनको श्रावक गण ध्यान।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सूतंब गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणी 'वेदांग' रहे शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो वेदांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

श्रेष्ठ गणधर गाए 'जनकांति', भक्ति कर मिटती सारी भ्रांति।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो जनकांति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'शांतयेन' गणधर हुए महान, किए जो सर्व कर्म की हान।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो शांतयेन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

पूजते हम 'उपशांति' गणेश, द्रव्य लेकर के यहाँ विशेष।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो उपशांति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'सुवीर्यें' गणधर का है शुभ नाम, चरण में जिनके विशद प्रणाम।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सुवीर्ये गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'सुताजय' कहलाए गणराज, पूजता जिनको सकल समाज।
अजित जिनवर के रहते साथ, झुकाएँ जिनके चरणों माथ।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो सुताजय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

(केसरी छन्द)

गणधर 'चित्रविरीच' कहाए, छोड़ परिग्रह संयम पाए।
अजित नाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो चित्रविरीच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम 'मृतेश' आपने पाया, इस जग को दी शीतल छाया।
अजित नाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो मृतेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'स्वास्ति' गणधर कहे निराले, जग का कल्मष हरने वाले।
अजितनाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो स्वास्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'राजस्थिर' गणधर कहलाए, वीतरागता पावन पाए।
अजितनाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो राजस्थिर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'भाभृति' गणधर हैं हितकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
अजित नाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो भाभृति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर रहे 'स्तकथ' भाई, जिनकी महिमा जग ने गाई।
अजितनाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो स्तकथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'उदत' नाम गणधर जी पाए, मुक्ती का जो पथ अपनाए।
अजित नाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो उदत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'संजात' नाम के धारी, गणधर तुम हो जग हितकारी।
अजित नाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो संजात गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर 'संयत' रहने वाले , पावन पंच समितियाँ पाले।
अजित नाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो संयत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'अपूर्व' गणधर अनगारी, तुम हो जग में मंगलकारी।
अजित नाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो अपूर्व गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'भास्कर' नाम आपने पाया, इस जग को सन्मार्ग दिखाया।
अजित नाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो भास्कर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहे 'जिनोत्तम' गणधर स्वामी, कहलाए जो अन्तर्यामी।
अजित नाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो जिनोत्तम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'चैत्यपुष्प' गणधर कहलाए, धर्म की खुशबू जो फैलाए।
अजितनाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो चैत्यपुष्प गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर 'मन्यसि' नाम के धारी, ज्ञानी कहलाए त्रिपुरारी।
अजित नाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।86।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो मन्यसि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'गौरंकिता' कहाने वाले, सारे जग में रहे निराले।
अजित नाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो गौरंकिता गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'प्रसिद्धन्तु' गणधर कहलाए, आप प्रसिद्धी जग में पाए।
अजित नाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो प्रसिद्धन्तु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर द्रुपद रहे जगनामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।
अजित नाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।89।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो द्रुपद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम 'मृगानत' जिनने पाया, मोक्ष महल का पथ अपनाया।
अजित नाथ के गणधर स्वामी, बने मोक्ष के जो पथगामी।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमो मृगानत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जल गंधाक्षत पुष्प बनाए, चरुवर दीप धूप फल लाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य सजाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।।91।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्राय झ्रों झ्रों श्री अजित – नाथस्य सिंहसेनादिनवति गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
इति श्री अजितनाथस्य सिंहसेनादि नवति गणधरायनमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा

सहज रूप को धार कर, सहज लगाए ध्यान।
सहज ज्ञान पाए प्रभू, करते तव गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

अजितनाथ जिन के चरणों में, करते हम शत्-शत् वन्दन।
जित शत्रू के राज दुलारे, विजया माँ के जो नन्दन।।1।।
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, गज है जिन का शुभ लक्षण।
लाख बहत्तर पूर्व की आयू, हाथ अठारह सौ तुंग तन।।2।।
जन्म समय दश अतिशय पाये, दश पाए पा केवलज्ञान।
चौदह अतिशय रहे देवकृत, प्रातिहार्य वसु रहे महान।।3।।
ज्ञान दर्शनावरण मोहनीय, अन्तराय का करके नाश।
अनन्त चतुष्टय पाय प्रभु जी, कीन्हे अनुपम ज्ञान प्रकाश।।4।।
दिव्य देशना देकर प्रभु जी, किए जगत जन का कल्याण।
सर्व कर्म को नाश आपने, पाया अनुपम पद निर्वाण।।5।।
कूट सिद्ध पर तीर्थराज से, किए मोक्ष को आप प्रयाण।
'विशद' भावना भाते हैं हम, होय जगत जन का कल्याण।।6।।

दोहा– **राही मुक्ती मार्ग के, बने आप भगवान।**
हमको यह पद प्राप्त हो, दीजे यह शुभ ज्ञान।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **रत्नत्रय को प्राप्त कर, पाए शिव सोपान।**
अर्चा करके आपकी, जीव करें कल्याण।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री सम्भवनाथ जी पूजन-3

स्थापना

दोहा– **सम्भव जिन समभाव धर, पाए भव से पार।**
आह्वानन् करते हृदय, बन जाएँ अनगार॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

क्षीर सिन्धु का जल यह लाए, तीनों रोग नशाने आए।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सुरभित चन्दन यहाँ घिसाये, भव आतप मेरा नश जाए।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत चढ़ा रहे शुभकारी अक्षय पद पाएँ मनहारी।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाने को हम लाए, काम रोग मेरा नश जाए।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस सद्य नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पावन दीप जलाकर लाए, मोहनाश मेरा हो जाए।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप जलाते यह शुभकारी, कर्मों की नश जाए क्यारी।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।।7।।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फल से पूजा यहाँ रचाएँ, मोक्ष महाफल हम पा जाएँ।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।8।।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।
अर्घ्य बनाकर के यह लाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।9।।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

फागुन सित आठें पाए, सुर गर्भ कल्याण मनाए ।
जिन सम्भव अन्तर्यामी, हम चरणों करें नमामी।।1।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सित पूनम गाई, जो जन्म की तिथि कहलाई।
मेरू पे न्हवन कराया, देवों ने हर्ष मनाया।।2।।
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला पूर्णिमायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर यह जग जाना, संयम धर मुक्ती पाना।
मगशिर सित पूनम प्यारी, प्रभु बने आप अनगारी।।3।।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला पूर्णिमायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदि चौथ बताए, जिन केवल ज्ञान जगाए।
अज्ञान के मेघ हटाए, रवि केवल जो प्रगटाए।।4।।
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी सित चैत बखानी, प्रभु पाए शिव रजधानी।
कर्मों का किया सफाया, निज आतम सौख्य उपाया।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभवनाथ गणधर पूजा

(पाइता छन्द)

गणि 'चारूदत्त' कहाए, अतिशय शोभा को पाए।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं चारूदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'तत्केश' नाम शुभकारी, पाए गणि मंगलकारी।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं तत्केश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'मृगिभूत' नाम के धारी, गणधर गाए अनगारी।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मृगिभूत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर 'जघान' कहलाए, जो वीतरागता पाए।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं जघान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'मनुगति' हैं गणी निराले, संयम को पाने वाले।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनुगति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर जिन 'पार्श्व' कहाए, जो महाव्रतों को पाए।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं पार्श्व गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'वाणवृष्टि' जगनामी, जो बने मोक्षपथ गामी।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं वाणवृष्टि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'पतउज्ज्वल' गणधर भाई, जिनकी फैली प्रभुताई।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पतउज्ज्वल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'जिजन' ज्ञान के धारी, कहलाए शिव मगचारी।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिजन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'संलब्ध' गणी कहलाए, गणधर पदवी को पाए।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं संलब्ध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हैं 'चारुषेण' मनहारी, जग जीवों के उपकारी।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं चारुषेण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'किंसूर्य' गणी हैं भाई, जो गाए मुक्ति प्रदायी।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं किंसूर्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'भवनाथ' आप कहलाए, गणधर पदवी को पाए।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर 'सुभूम' कहलाए, रत्नत्रय धारी गाए।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुभूम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणराज 'दशानन' जानो, पावन अविकारी मानों।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं दशानन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'गंगायन' गणधर स्वामी, जो बने मोक्षपथ गामी।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं गंगायन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर 'उत्पत्ति' कहाए, जो अपने कर्म नशाए।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्पत्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'सर्वमुने' गणधारी, तुम हो जग के उपकारी।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वमुने गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणराज 'सलिल' शुभ गाए, जो धर्म की धार बहाए।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं सलिल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'रोहन' गणि नाम के धारी, कहलाए जो अविकारी।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं रोहन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणि 'अरिष्टनाथ' कहलाए, जो अतिशय प्रभुता पाए।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, है वीतराग विज्ञानी।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरिष्टनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'गांगेय' गणी मनहारी, जिनकी महिमा है न्यारी।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, है वीतराग विज्ञानी।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं गांगेय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

श्री 'द्रोणाचार्य' निराले, गणधर हैं महिमा वाले।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्रोणाचार्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणराज 'अहिन' कहलाए, जो अतिशय प्रभुता पाए।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहिन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'निर्वाण' नाम शुभ पाए, निर्वाण सुपद प्रगटाए।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'सर्वज्ञ' नाम के धारी, सर्वज्ञ हुए अनगारी।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'प्रश्नोत्तर' गणि कहलाए, सब प्रश्नोत्तर जो पाए।
श्री सम्भव जिन के ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रश्नोत्तर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

(पद्धरि छन्द)

जय 'श्रोतृ' गणधर हैं प्रबुद्ध, जो बोधि जगाए ज्ञान बुद्ध।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रोतृ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'चित्रांग' आप शुभ पाए नाम, करता चरणों में जग प्रणाम।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं चित्रांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'जृम्भे' गणधर आनन्द कंद, तुम सर्व नशाए द्वन्द फन्द।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं जृम्भे गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर कहलाए हैं 'सदन्त', जो किए कर्म का पूर्ण अन्त ।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदन्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणराज 'सचक्री' हैं विशेष, जो श्रेष्ठ दिगम्बर धरे भेष।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं सचक्री गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'तैजस' कहलाए तैजवान, गणधर पावन करुणा निधान।।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।33।।
ॐ ह्रीं अर्हं तैजस गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहलाए 'अमूढ़न' आप नाथ, हम जोड़ रहे तव चरण माथ ।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।34।।
ॐ ह्रीं अर्हं अमूढ़न गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणराज 'अमितगत' हैं महान, जिनका हम करते गुणोगान।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।35।।
ॐ ह्रीं अर्हं अमितगत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'हरिषेण' कहाए ज्ञानवान, जिनका सब करते विशद ध्यान।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।36।।
ॐ ह्रीं अर्हं हरिषेण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'ऋषि' गणधर का है श्रेष्ठ नाम, जिन पद में हम करते प्रणाम।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।37।।
ॐ ह्रीं अर्हं ऋषि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर कहलाए ''तत्पुराणं', जो प्रगटाए निज ज्ञान भान।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।38।।
ॐ ह्रीं अर्हं तत्पुराणं गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहलाए 'त्रिपुष्टि' जग में प्रसिद्ध, जो कर्म नाशकर हुए सिद्ध।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।39।।
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपुष्टि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'सदृष्ट' आप सद्दर्श प्राप्त, पा विशद ज्ञान तुम बने आप्त।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।40।।
ॐ ह्रीं अर्हं सदृष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'पुन्याह' पुण्य के हैं निधन, प्रगटाए जो कैवल्य ज्ञान।।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।41।।
ॐ ह्रीं अर्हं पुन्याह गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणराज 'अस्मधन' हैं प्रधान, जो विशद गुणों की रहे खान।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।42।।
ॐ ह्रीं अर्हं अस्मधन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'श्रुति' ने संयोग को लिया धार, गणधर बन पाए धर्म सार ।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।43।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रुति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'मन्मथ' गणधर ने काम नाश, निज चेतन का कीन्हा प्रकाश।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।44।।
ॐ ह्रीं अर्हं मन्मथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।।44।

'गुणभद्र' रहे गणधर महान, जो दिए जगत को ज्ञान दान।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।45।।
ॐ ह्रीं अर्हं गुणभद्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'प्रश्नोत्तर' पाए आप नाम, जो पाए शिव पद में सुधाम।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।46।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रश्नोत्तर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर कहलाए 'सदानन्द' , जो पाए निज आनन्द कंद।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।47।।
ॐ ह्रीं अर्हं सदानन्द गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'अहमिन्द्र' आप जग तरणहार, तव इन्द्र चरण पूजें अपार ।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।48।।
ॐ ह्रीं अर्हं अहमिन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

शुभ नाम आपका है 'त्रिशेन', तुम रहे लोक में सौख्य देन।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।49।।
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिशेन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे नाथ 'चित्रघण' हो अनूप, तव चरणों झुकते सर्व भूप।।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।50।।
ॐ ह्रीं अर्हं चित्रघण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'अवधि' आप जग में प्रधान, तुम गुण निधियों के हो निधान।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।51।।
ॐ ह्रीं अर्हं अवधि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

है नाम 'सम्भवन' भी विशेष, श्री संभव जिनके जो गणेश।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।52।।
ॐ ह्रीं अर्हं संभवन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जिनको कहते हैं 'तीर्थनाथ', उन गणधर के पद झुका माथ।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।53।।
ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर कहलाए हैं 'गदाग', इस जग से जिनको है विराग।
श्री सम्भव जिनवर के महान, गणधर इस जग में हैं प्रधान।।54।।
ॐ ह्रीं अर्हं गदाग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

(मोतियादाम छन्द)

प्रभू के गणधर कहे 'अधास', कर्म ना जिनके आवें पास।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।55।।
ॐ ह्रीं अर्हं अधास गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'मदिस' गणधर का पावन नाम, चरण में करते भक्त प्रणाम।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।56।।
ॐ ह्रीं अर्हं मदिस गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'गुणग्रणी' कहलाए जिनराज, चरण की भक्ती करते आज।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।57।।
ॐ ह्रीं अर्हं गुणग्रणी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहाए गणधर श्रेष्ठ 'अगम्य', नही हैं गुण चिन्तन के गम्य।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।58।
ॐ ह्रीं अर्हं अगम्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाथ 'विद्यत' हो आप महान, करें सुर नर भी तव गुणगान।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।59।।
ॐ ह्रीं अर्हं विद्यत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहाए 'पृखिल' आप गणराज, चरण हम पूज रहे हैं आज।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।60।।
ॐ ह्रीं अर्हं पृखिल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'गुणोज्ञो' रहा आपका नाम, बनाया श्री जिन पद में धाम।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।61।।
ॐ ह्रीं अर्हं गुणोज्ञो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहाए गणधर जी 'भूषेण', त्यागी हुए पूर्ण रूपेण।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।62।।
ॐ ह्रीं अर्हं भूषेण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम 'लघु' पाए आप जिनेश, दिए जो संयम का संदेश।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।।63।।
ॐ ह्रीं अर्हं लघु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'अभिर' है नाम आपका खास, किए हो सारे कर्म विनाश।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।64।।
ॐ ह्रीं अर्हं अभिर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम 'श्रेंणी' पाए शुभकार, कहाए जग में मंगलकार।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।65।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रेंणी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहाए श्री गणधर 'गतशोक', चरण में देते सुर नर ढोक।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।66।।
ॐ ह्रीं अर्हं गतशोक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'दिगिस' गणधर का पावन नाम, चरण में जिनके विशद प्रणाम।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।67।।
ॐ ह्रीं अर्हं दिगिस गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहाए 'कुलकर' आप ऋशीष, हुए तुम मुक्ति रमा के ईश ।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।68।।
ॐ ह्रीं अर्हं कुलकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम गणधर का गाया 'इन्द्र',चरण में वन्दन करें शतेन्द्र।।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।69।।
ॐ ह्रीं अर्हं इन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम शुभ पाए 'योगीनाथ', भक्त तव चरण झुकावें माथ।।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।70।।
ॐ ह्रीं अर्हं योगीनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहाए गणधर जी 'लोकेश', पूज्य जो जग में हुए विशेष
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।71।।
ॐ ह्रीं अर्हं लोकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'अजनन' है जिनका शुभ नाम, चरण में जिनके विशद प्रणाम।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।72।।
ॐ ह्रीं अर्हं अजनन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम 'हर्षन' पाए शुभकार, कहे जो जग में मंगलकार।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।73।।
ॐ ह्रीं अर्हं हर्षन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

रहा गणधर का नाम 'विहार', करें जग जीवों का उद्धार।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।74।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विहार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

रहा 'ग्रह' पावन जिनका नाम, किए जो शिव पथ में विश्राम।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।75।।
ॐ ह्रीं अर्हं ग्रह गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

आप हो 'दर्शन' महति महान, जगत को देते सद् श्रद्धान।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।76।।
ॐ ह्रीं अर्हं दर्शन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहाए गणधर जी 'मुक्तांग', चरण में नमन विशद साष्टांग।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।77।।
ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहाए 'मातन्' जिन गणराज, करे पद वन्दन सकल समाज।।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।78।।
ॐ ह्रीं अर्हं मातन् गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'कुसम' है नाम आपका नाथ!, चरण में झुका रहे हम माथ।।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।79।।
ॐ ह्रीं अर्हं कुसम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'दिवाकर' करते आप प्रकाश, कर्म का करने वाले नाश।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।80।।
ॐ ह्रीं अर्हं दिवाकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'पारासुर' जिन के रहे गणेश, परम जो धरे दिगम्बर भेष।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।81।।
ॐ ह्रीं अर्हं पारासुर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

आप हो 'अतिशय' हे गणराज, प्रभू तुम पाए शिव का राज।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।82।।
ॐ ह्रीं अर्हं अतिशय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'सुलोचन' रहा आपका नाम, बनाया सिद्धशिला पर धाम।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।83।।
ॐ ह्रीं अर्हं सुलोचन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'भास्कर' हो तुम सूर्य समान, करें तव सुर नर मुनि गुणगान।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।84।।
ॐ ह्रीं अर्हं भास्कर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।।84।।

'अकुप' हो जग में आप प्रधान, हुए जो जग में सर्व महान।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।85।।
ॐ ह्रीं अर्हं अकुप गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

आप हो 'कामलता' धीमान, करे जग तव चरणों जयगान।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।86।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामलता गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहाए जिन गणराज 'पुलिन्द', वन्दना करते सुर अरविन्द।
गणी सम्भव जिनके शुभकार, चरण में वन्दन बारम्बार।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुलिन्द गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

दोहा

गणधर पाए पूज्यता, 'जातस' है शुभ नाम।
जिनके चरणों में विशद, बारम्बार प्रणाम।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हं जातस गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम रहा गतरेष शुभ, गणधर रहे महान।
जिनकी महिमा का यहाँ, करते हम गुणगान।।89।।

ॐ ह्रीं अर्हं गतरेष गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'शीलगुप्ति' गणधर कहे, मंगलमय शुभकार।
चरणों में जिन भक्त शुभ, झुकते बारम्बार।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हं शीलगुप्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर सम्भव नाथ के, 'धर्मस्थित' है नाम।
भव्य जीव जिनके चरण, करते विशद प्रणाम।।91।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मस्थित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।।

सम्भव जिनवर के रहे, गणधर 'विष्ण' महान।
जिनके चरणों भक्तगण, करते हैं गुणगान।।92।।

ॐ ह्रीं अर्हं विष्ण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

है 'प्रचण्ड' गणराज का, पावनतम शुभ नाम
सुर नर मुनि जिनके चरण, आके करें प्रणाम।।93।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रचण्ड गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

सम्भव जिनवर के रहे, गणधर श्री 'नागोनाग'।
मुनी बने निर्ग्रन्थ जो, छोडे. जग का राग।।94।।

ॐ ह्रीं अर्हं नागोनाग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम 'अन्यदा' आपका, गणधर बने विशेष।
तीन गती के जीव सब, वन्दन करें अशेष।।95।।

ॐ ह्रीं अर्हं अन्यदा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'धर्मराज' ने धर्म का, धारा ध्वज निज हाथ।
साधर्मी जिनके चरण, सदा झुकाएँ माथ।।96।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मराज गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर सम्भव नाथ के, कहलाए 'कोपेश'।
राही मुक्ती मार्ग के, धरे दिगम्बर वेष।।97।।

ॐ ह्रीं अर्हं कोपेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हैं 'जिगीश' जिनने किया, जीवों का उपकार।
अतः लोक के जीव सब, बोलें जय-जयकार।।98।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिगीश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

लोष्ट नाम है आपका, किया जगत कल्याण।
गणधर सम्भवनाथ के, करें आत्म उत्थान।।99।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'दुष्चरित्त' शुभ नाम के, धारी हैं गणराज।
जिनके चरणों में नमन, करता सकल समाज।।100।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुष्चरित्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'नागस' मुनि पद धारकर, सुतप किए घनघोर।
गणधर सम्भवनाथ के, बनकर हुए विभोर।।101।।

ॐ ह्रीं अर्हं नागस गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'कालिति' निज का ध्यान कर, पाए शिव का पंथ।
कर्म नाश कर के बने, स्वयं आप अर्हन्त।।102।।

ॐ ह्रीं अर्हं कालिति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

धर्मनाथ शुभ नामधर, गणधर बने महान।
सम्भव जिनका आपने, किया विशद गुणगान।।103।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'प्रियभूत' सबको प्रिय, महिमा का ना पार।
गुण गाते हैं जीव सब, जिनके मंगलकार।।104।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रियभूत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जिनका नाम 'उपीन्द्र' है, गणधर पद के ईश।
सम्भव जिनवर के परम, जो हैं श्रेष्ठ ऋशीष।।105।।

ॐ ह्रीं अर्हं उपीन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

एक सौ पाँच गणधर बने, सम्भव जिनके साथ ।
जिनके चरणों जीव सब, 'विशद' झुकाएँ माथ।।106।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय संभवनाथस्य चारूदत्तादि पंचोत्तरशत् 105 गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

इति श्री संभवनाथस्य चारुदत्तादि पंचाधिकशत्गणधराय नमः पुष्पांजलिं क्षिपामि।

जयमाला

दोहा– **नट की भाँति जीव है, नाटक यह संसार।**
गुणमाला गाते यहाँ, पाने भव से पार।।

(चौपाई)

जय जय जय सम्भव जिन स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।
ग्रैवेयक से चयकर आये, श्रावस्ती को धन्य बनाए।।1।।
पिता जितारी जिनके गाए, मात सुसेना प्रभु जी पाए।
लाख साठ पूरव की भाई, आयु चार सौ धनुष ऊँचाई।।2।।
घोड़ा लक्षण जिनका गाया, तप्त स्वर्ण सम तन बतलाया।
जग के भोग जिन्हें ना भाए, छोड़ के सब जिन दीक्षा पाए।।3।।
चार घातिया कर्म नशाए, प्रभु जी केवल ज्ञान जगाए।
समवशरण तब देव बनाए, दिव्य देशना प्रभू सुनाए।।4।।

ऋषि द्वय लक्ष आपके गाए, गणधर एक सौ पाँच बताए।
चारुदत्त जी प्रथम कहाए, जिनवर की जो महिमा गाए।।5।।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, मुक्ती पाए अन्तर्यामी।
'विशद' भावना यही हमारी, शिवपद पाएँ हे त्रिपुरारी।।6।।

दोहा– **सिद्ध शिला पर आपने, विशद बनाया धाम।**
मुक्ती हो संसार से, करते चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **भाते हैं हम भावना, प्रभू आपके द्वार।**
कैसे भी हो शीघ्र हो, मेरा आत्म उद्धार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अभिनन्दन जिन पूजा-4

स्थापना

अभिनन्दन जिनराज का, करते हम आह्वान।
शिव पद हमको दो प्रभू, पाएँ जीवन दान।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सुखमा छन्द)

क्षीर सिन्धु से जल भर लाए, रोग त्रय मेरा नश जाए।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन केसर संग घिसाए, भवाताप के नाश को आए।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत अक्षय यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को हम पाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।3।।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, काम रोग से मुक्ती पाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।4।।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सद्य चरू से पूज रचाएँ, क्षुधा रोग को पूर्ण नशाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।5।।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नमयी शुभ दीप जलाएँ, मोह महातम शीघ्र नशाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।6।।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में शुभ धूप जलाएँ, अष्ट कर्म से मुक्ती पाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।7।।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे श्रेष्ठ सरस फल लाएँ, पूजा कर शिव पदवी पाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।8।।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद अनर्घ्य हम भी पा जाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

वैशाख शुक्ल छठ आई, रत्नों की झड़ी लगाई।
जब गर्भ में प्रभु जी आए, तव मात पिता हर्षाए।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्म्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारस सित माघ बताई, जनता सारी हर्षाई।
जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, जयकारा सभी लगाए।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित माघ द्वादशी जानो, संयम धारे प्रभु मानो।
वन में जा संयम धारे, तब देव किए जयकारे।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदश सित पौष की गाई, प्रभु ज्ञान की कली खिलाई।
सब दिव्य देशना पाए, जिन धर्म की धार बहाए।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी छठ जानो, शिव पद पाए प्रभु मानो।
सम्मेद शिखर शुभ गाया, आनन्द कूट मन भाया।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्म्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन नाथ जी गणधर पूजा

(चाल छन्द)

'वज्रादि' गणी कहलाए, जो पावन संयम पाए ।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रादि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'श्रीमत' गणधर कहलाए, श्री पाने ध्यान लगाए।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'नागत्य' गणी शुभकारी, जो बने श्रेष्ठ अनगारी।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं नागत्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर 'कुलगत' कहलाए, शिव कुल की राह चलाए।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुलगत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'नानेशा' नाम के धारी, गणधर गाये शिवकारी।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं नानेशा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।5।

गणधर 'कृतज्ञ' कहलाए, निज में कृतज्ञता पाए।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथगामी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतज्ञ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

है नाम 'गदायण' भाई, गणधर गाए शुभकारी।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं गदायण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'स्मकर्त' नाम के धारी, गणधर गाए शुभकारी।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्मकर्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर जी 'चक्र' कहाए, संसार चक्र विनशाए।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं चक्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'संयमी' कहे अनगारी, गणधर जी मंगलकारी।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं संयमी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

है नाम 'सुकेसि' निराला, जग का तय करने वाला।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुकेसि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'सोपित' गणधर कहलाए, जो शिव पदवी को पाए।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं सोपित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

कहलाए 'कृतांजलि' भाई, गणधर जग मंगलदायी।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृताँजलि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जो नाम 'परीक्षा' पाए, गणधर पावन कहलाए।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं परीक्षा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'गेनाति' रहे जग नामी, जो बने मोक्ष पथगामी।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं गेनाति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'विक्षात' आपको कहते, रत निज स्वाभाव में रहते।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं विक्षात गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'श्रुतसागर' नाम के धारी, श्रुत पाए अतिशयकारी।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतसागर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'अहूत' आप हो स्वामी, गणधर जी रहे अकामी।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथगामी।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहूत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'पौरुष' पौरुष के धारी, गणधर हैं जग उपकारी।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौरुष गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जो 'पवन' नाम शुभ पाए, गणधर संयम अपनाए।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं पवन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जो 'तीर्थसिद्ध' कहलाए, गणधर पदवी को पाए।।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थसिद्ध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'यशकीर्ति' हुए शिव गामी, गणराज हुए जग नामी।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं यशकीर्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'वचो' नाम के धारी, निज आतम ब्रह्म बिहारी।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं वचो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'संबंध' आपके नामी, कहलाए गणधर स्वामी।।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं संबंध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जो नाम 'सुखावह' पाए, सुख में निज समय बिताए।।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुखावह गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर 'ककोल' कहलाए, शिव राह आप अपनाए।
श्री अभिनन्दन जी स्वामी, के बने आप पथ गामी।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं ककोल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

(पद्धरि छन्द)

गणधर जी 'हिमांच' कहलाए, निज में भेद ज्ञान प्रगटाए।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं हिमांच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'मायास' आपका नाम कहाया, कल्याणमयी जो श्रेष्ठ कहाया।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं मायास गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'विचित्रांग' संयम के धारी, गणधर हे जग मंगलकारी।।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं विचित्रांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'सोधर्म' आप गणी कहलाए, निज का धर्म विशद प्रगटाए।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं सोधर्म गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'तूंग' नाम के धारी जानो, गणधर अविकारी हैं मानों।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं तूंग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'ब्रह्म' गणी कहलाने वाले, जग में साधू हुए निराले
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्म गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'प्राग्मुख' भक्त आपको जाने, पावन गणधर जी पहिचाने ।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्मुख गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'पुष्टर' कहे पुष्टि के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'मूदानि' आप शिव पाए, गणधर बनके ज्ञान सिखाए।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूदानी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'भृतकेश' द्वेष परिहारी, संयम धार बने अनगारी।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं भृतकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'मल्लेषण' गणधर हैं ज्ञानी, जग जीवों के हैं कल्याणी।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं मल्लेषण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'दयापाल' हैं दया के धारी, सर्व चराचर करुणाकारी।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं दयापाल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'साधु' आप रत्नत्रय धारे, आप असंयम पूर्ण निवारे।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं साधु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'अरध' आप सद्ज्ञान जगाए, मुक्ती पथ पर कदम बढ़ाए।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'दानादि' आप हो दानी, जग जीवों के हो कल्याणी।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं दानादि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'पुलाक' गणधर पदधारी, आप हुए पावन अविकारी।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुलाक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम 'वलोक' आपने पाया, मोक्ष मार्ग पावन अपनाया।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं वलोक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर कहे 'मषात' निराले, संयम पथ पर बढ़ने वाले।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं मषात गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर 'यशो' नाम के धारी, जग में गाए विस्मयकारी।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं यशो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'समै' आपने समता पाई, तुमने पाई जग प्रभुताई।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं समै गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'गंगदत्त' जगपूज्य कहाए, गंगा सम निर्मलता पाए।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं गंगदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'गुणसागर' हैं गुण के धारी, गुण पाए जो अतिशय कारी।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणसागर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणी 'धर्मसागर' कहलाए, आप धर्म के आलय गाए।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसागर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'सद्धेषन' ने संयम पाया, देते जग जीवों को छाया।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्धेषन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'भूतलेश' त्रय काल के ज्ञाता, जग के आप कहाए त्राता।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूतलेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'चक्रेश' नाम के धारी, मंगलमय जन मंगलकारी।
श्री अभिनन्दन जिनवर गाए, जिनके चरणों में सिरनाए।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं चक्रेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

(सखी छन्द)

'समारूह्य' नाम के धारी, गणधर जग मंगलकारी।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं समारूह्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जो 'पुष्पवृक्ष' कहलाए, गणधरपदवी को पाए।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पवृक्ष गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'चिंतागति' चित् के धारी, चिंता त्यागे अनगारी।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं चिंतागति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'रसऋद्धि' कहाए स्वामी, सद्ज्ञानी अन्तर्यामी।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं रसऋद्धि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'कलि' आप कलह के त्यागी, जिन धर्म के शुभ अनुरागी।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं कलि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे राजगुरु उपकारी, जीवों के करुणाकारी।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं राजगुरू गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'तटस्थित' आप कहाए, गणधर पदवी को पाए।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं तटस्थित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणराज 'सुलोचन' गाए, सम्यक श्रद्धान जगाए।।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुलोचन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जो कहे 'समापण' भाई, गणधर पदवी शुभ पाई।।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।61।

ॐ ह्रीं अर्हं समापण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'वाहिदत्त' नाम के धारी, गणधर हैं मंगलकारी।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं वाहिदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'नागदत्त' जग नामी, तुम बने मोक्षपथ गामी।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं नागदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'ज्ञात्त्वा' हो सम्यकज्ञानी, जग जन के हो कल्याणी।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञात्त्वा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'अवरिद्धि' आप कहलाए, कर्मो पर रोक लगाए।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं अवऋद्धि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'तवऋद्धि' आप जगनामी, हो मोक्ष मार्ग पथ गामी।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं तवऋद्धि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर 'प्रियांग' कहलाए, जो पावन संयम पाए।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रियांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर 'जयस्त' शुभकारी, जग में गाए है अनगारी।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं जयस्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'प्रीतिंदव' प्रीति लगाए, सद् संयम को अपनाए।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रीतिंदव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणराज 'मनीष' कहाए, मन के ऊपर जय पाए।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनीष गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जो है 'सकेत' जग नामी, बन गये मोक्ष पथगामी।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं सकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'नमस्कार' जग त्राता, जीवों के भाग्य विधाता।।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमस्कार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जो 'जातनंद' कहलाए, पावन संयम अपनाए।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं जातनंद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर 'निशांत' सद्ज्ञानी, जो ज्ञान सुधामृत दानी।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं निशांत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'कामांकित' संत निराले, गणधर पद पाने वाले।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामांकित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'कापोत' सुसंयम पाए, शिव पथ के राही गाए।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं कापोत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'दावान' गणी कहलाए, निज आतम ध्यान लगाए।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं दावान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जो कहे 'उपागत' भाई, गणधर पाए प्रभुताई।
श्री अभिनन्दन के भाई, गणराज कहे सुखदायी।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं उपागत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(केसरी छन्द)

गणधर जी 'भवदेव' कहाए, अपने जो भव पूर्ण नशाए।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवदेव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'मार्जार' नाम के धारी, संयम धार बने अनगारी।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।80।।
ॐ ह्रीं अर्हं मार्जार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा
हे 'तद्वेश' द्वेष परिहारी, हुए पूर्णतः जो अविकारी।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।81।।
ॐ ह्रीं अर्हं तद्वेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
जो 'गंधार' नाम शुभ पाए, गणधर पदवी धर कहलाए।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।82।।
ॐ ह्रीं अर्हं गंधार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'शशिकर' शशिसम शीतल गाए, जीवों को सद् राह दिखाए।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।83।।
ॐ ह्रीं अर्हं शशिकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।
'नारद' नाम रहा शुभकारी, गणधर का जग मंगलकारी।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।84।।
ॐ ह्रीं अर्हं नारद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।
'श्रेणित' जी श्रेणी को पाए, अपने सारे कर्म नशाए।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।85।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रेणित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।
'प्रार्ज्य' आपने ज्ञान जगाया, इस जग को सन्मार्ग दिखाए।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।।86।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रार्ज्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।
'वर्मन' आप नाम को पाए, गणधर बन सद् ज्ञान सिखाए ।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।।87।।
ॐ ह्रीं अर्हं वर्मन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।
हे 'श्रीपूर' श्री के धारी, बने आप हो के अविकारी।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।।88।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपूर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'श्रीपाल' सर्व के ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।।89।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपाल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी आप 'दीक्षांग' निराले, जग का कल्मष हरने वाले।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।।90।।
ॐ ह्रीं अर्हं दीक्षांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तापस' आप सुतप को पाए, पावन संयम को अपनाए।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।।91।।
ॐ ह्रीं अर्हं तापस गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पूरिच' की है महिमा न्यारी, हुए आप रत्नत्रय धारी।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।।92।।
ॐ ह्रीं अर्हं पूरिच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'प्रभास' जग राग नशाए, मुक्ती पथ को तुम अपनाए।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।।93।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभास गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'रविषेण' नाम के धारी, गणधर गाए विस्मयकारी।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।।94।।
ॐ ह्रीं अर्हं रविषेण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'क्रोतम' तुमको कहते ज्ञानी, बने आप जग के कल्याणी।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।।95।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्रोतम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'गतोस्ति' गतराग निराले, सबके संकट हरने वाले।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।।96।।
ॐ ह्रीं अर्हं गतोस्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर श्री 'प्रियदत्त' कहाए, जन-जन के हितकारी गाए।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।।97।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रियदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दक्षक' रक्षक जग के गाए, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाए।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।।98।।
ॐ ह्रीं अर्हं दक्षक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम 'हिरण्य' आपने पाया, इस जग को सन्मार्ग दिखाया ।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।99।।
ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

हे 'अहानि' जग करुणाकारी, तुम हो जन-जन के हितकारी।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।100।।
ॐ ह्रीं अर्हं अहानि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

'तद्यसेन' गणराज कहाए, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाए।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।101।।
ॐ ह्रीं अर्हं तद्यसेन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

गणधर रहे 'विभंग' निराले, जग का कल्मष हरने वाले।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।102।।
ॐ ह्रीं अर्हं विभंग गणधराय नमः अर्घ्मं नि. स्वाहा।।

नाम 'त्वचश' तुमने जो पाया, पावन संयम पथ अपनाया।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।103।।
ॐ ह्रीं अर्हं त्वचश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर एक सौ तीन कहाए, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाए।
तीर्थंकर अभिनन्दन स्वामी, जिन के आप बने अनुगामी।।104।।
ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ अप्रतिचक्रेय फट् विचक्राय झ्रों झ्रों अभिन्दननाथस्य वज्रादि त्रयाधिकशत् गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।
इति श्री अभिनन्दन नाथस्य वज्रादि त्रयाधिकशत् गणधरस्य पुष्पांजलिं क्षिपामि।

जयमाला

दोहा– **अभिनन्दन वन्दन करें, चरण आपके दास।**
जयमाला गाते चरण, पाने मुक्ती वास॥

(आल्हाछन्द)

अभिनन्दन प्रभु के चरणों में, माथा इन्द्र झुकाते हैं।
संवर पितु सिद्धार्था माता, के जो बाल कहाते हैं।।1।।
नगर अयोध्या जन्म लिए तब, इन्द्र ऐरावत ले आया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराके, बन्दर लक्षण बतलाया।2।।
पचास लाख पूरब की आयू, देह स्वर्णमय शुभकारी।
साढ़े तीन सौ धनुष ऊँचाई, सहस्त्राष्ट लक्षण धारी।।3।।
सहस भूप सह दीक्षा पाए, दो दिन बाद लिए आहार।
नगर अयोध्या इन्द्रदत्त नृप, के गृह वरषे रत्न अपार।।4।।
गणधर एक सौ तीन आपके, वज्रनाभि थे गणी प्रधान।
यक्षेश्वर था यक्ष आपका, यक्षी वज्र शृंखला जान।।5।।
कूटानन्द से तीर्थराज पर, खड्गासन से मोक्ष प्रयाण।
'विशद' मोक्ष पद पाए प्रभुजी, करने वाले जग कल्याण।।6।।

दोहा– **शिवपद पाया आपने, आठों कर्म विनाश।**
मुक्ती पाएँ हम प्रभू, कर दो पूरी आस।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **बनकर आये भक्त हम, प्रभू आपके द्वार।**
करना होगा भक्त को, हे प्रभु! भव से पार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री सुमतिनाथ जिनपूजा-5

स्थापना

दोहा– **सुमतिनाथ के पद युगल, झुका रहे हम माथ।**
आह्वानन् करते हृदय, ऊपर करके हाथ।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(मोतियादाम छन्द)

चढ़ाने लाये हम यह नीर, मिटाने जन्म जरा की पीर।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।1।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

चढ़ाते सुरभित गंध विशेष, नाश कर भवाताप तीर्थेश।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।2।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत धवल महान, पाएँ हम अक्षय पद भगवान।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।3।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

चढ़ाने लाए सुरभित फूल, पूर्ण हो काम रोग निर्मूल।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।4।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते यह नैवेद्य जिनेश, नाश हो क्षुधा रोग अवशेष।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।5।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

करें हम दीप से यहाँ प्रकाश, शीघ्र हो मोह महातम नाश।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।6।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

जलाते अग्नी में यह धूप, कर्म नश पाएँ सिद्ध स्वरूप।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।7।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते फल हम हे भगवान!, मोक्ष फल पाएँ प्रभू महान।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।8।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।9।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

श्रावण शुक्ला द्वितिया पाए, सुमतिनाथ जी गर्भ में आए।
माँ को सोलह स्वप्न दिखाए, मात पिता के भाग्य जगाए।।1।।
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल एकादशि गाई, सुमतिनाथ जिन मंगलदायी।
जन्मे तीन ज्ञान के धारी, इन्द्र किए तब उत्सव भारी।।2।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौमी सित वैशाख बताई, संयम धारे जिस दिन भाई।
प्रभु वैराग की ज्योति जगाई, मुनिपद की तब बारी आई।।3।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी ग्यारस शुभ पाए, केवलज्ञान प्रभू प्रगटाए।
समवशरण आ देव बनाए, दिव्य देशना आप सुनाए।।4।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारस चैत शुक्ल की गाई, सुमतिनाथ ने मुक्ती पाई।
शिव पथ को तुमने अपनाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया।।5।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ गणधर पूजा

(दोहा)

सुमति नाथ भगवान के, गणधर 'चमर' प्रधान।
जिनकी अर्चा कर विशद, पाएँ सम्यक् ज्ञान ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं चमर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर पाए जिन सुमति, श्री 'लौकान्त' महान।
जिनकी अर्चा कर विशद, पाएँ सम्यक् ज्ञान ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं लौकान्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

गणधर 'धर्मासन' कहे, सुमतिनाथ के जान।
जिनकी अर्चा कर विशद, पाएँ सम्यक् ज्ञान ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मासन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री सुमति जिन के रहे, 'संयम' गणी महान।
जिनकी अर्चा कर विशद, पाएँ सम्यक् ज्ञान ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं संयम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुमति नाथ भगवान के, गणधर 'मन्नति' मान।
जिनकी अर्चा कर विशद, पाएँ सम्यक्ज्ञान ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मन्नति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर पद पाए शुभम्, 'सोवासू' है नाम।
जिनकी अर्चा कर विशद, पाएँ सम्यक् ज्ञान ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सोवासू गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुमति नाथ भगवान को, करते विशद प्रणाम।
गणधर पदवी के धनी, है 'मुलंग' शुभ नाम ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुलंग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहा 'फुलिग' गणराज का, अतिशय कारी नाम।
सुमति नाथ भगवान को, करते विशद प्रणाम ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं फुलिग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जी 'क्रोधूम' शुभ, पाए पावन नाम।
सुमति नाथ भगवान को, करते विशद प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधूम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणनायक मुनि संघ के, 'महाज्ञान' है नाम।
सुमति नाथ भगवान को, करते विशद प्रणाम।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाज्ञान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

सुमति नाथ भगवान के, गणधर 'पद्मगणेश'।
शिव पद के राही बने, धरा दिगम्बर भेष।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं पदमगणेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम रहा 'रतिवेग' शुभ , गणधर बने विशेष।
सुमति नाथ भगवान ने, धरा दिगम्बर भेष ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं रतिवेग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

'भोजनांग' गणधर बने, सुमतिनाथ के पास।
मुक्ती पथ पर जो बढ़े, पाए शिवपुर वास ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं भोजनांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुमतिनाथ भगवान के, 'विद्युत' गणधर पास।
मुक्ती पथ पर जो, बढ़े, पाए शिवपुर वास ।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं विद्युत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर बने 'यक्षान्त' जी, कीन्हें ज्ञान प्रकाश।
मुक्ती पथ पर जो, बढ़े, पाए शिवपुर वास।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं यक्षान्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर बनें अरिष्ट जी, सुमति नाथ के पास।
मुक्ती पथ पर जो बढ़े, पाए शिवपुर वास।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरिष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'लब्धकीर्ति' गणधर बने, सुमति नाथ के खास।
मुक्ती पथ पर जो बढ़े, पाए शिवपुर वास।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं लब्धकीर्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मुक्तिनाथ' गणधर बने, सुमतिनाथ के पास।
मुक्ती पथ पर जो, बढ़े, पाए शिवपुर वास।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तिनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुमति नाथ भगवान के, गणधर 'आतमकेश'।
मोक्ष महल में जा बसे, धार दिगम्बर भेष।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं आतमकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'त्रिदिवां' गणधर जी हुए, जग में मंगलकार।
सुमति नाथ के पद किए, वन्दन बारम्बार।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिदिवां गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर सुमति जिनेन्द्र के, 'वज्रदन्त' है नाम।
जिनकी अर्चा से मिले, शिव पद में विश्राम।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रदंत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी सुमति जिनराज के, 'जयकीर्ति' है नाम।
जिनकी अर्चा से मिले, शिव पद में विश्राम।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं जयकीर्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर सुमति जिनेन्द्र के, रहा 'अकंपन' नाम।
जिनकी अर्चा से मिले, शिव पद में विश्राम।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं अकंपन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी सुमति जिन के हुए, 'गुणसंयू.त' है नाम।
जिनकी अर्चा से मिले, शिव पद में विश्राम।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणसंयूत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'प्रीतिंकर' गणधर बने, सुमति नाथ के पास।
सुमति नाथ भगवान के, गणधर बनके खास।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रीतिंकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'मुक्तामणि' बने, सुमति नाथ के पास।
निज आतम का ध्यान कर, किए कर्म का ह्रास।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तामणि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पारावत' गणधर हुए, कीन्हें ज्ञान प्रकाश ।
निज आतम का ध्यान कर, किए कर्म का ह्रास।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारावत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर सुमति जिनेन्द्र के, 'छिदादत्त' है नाम।
जिन चरणों में जो किए , नत हो विशद प्रणाम।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं छिदादत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुमति नाथ भगवान के, गणधर हैं 'कैलाश'।
जिनकी अर्चा से विशद, होती पूरी आस।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं केलाश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वज्रबाहु' गणधर बने, सुमति नाथ के पास।
जिनकी अर्चा से विशद, होती पूरी आस।।30।

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रबाहु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(सखी छन्द)

गणि 'गजकुमार' कहलाए, जो अपने कर्म नशाए।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं गजकुमार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विजयाख्य' गणीशुभ गाए, जो विजय कर्म पर पाए।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं विजयाख्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणि 'मल्लिकेत' शुभकारी, संयम धारे अनगारी।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं मल्लिकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'विश्वध्वज' गाए, जो शिवपदवी को पाए।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वध्वज गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'महिपति' गणधर कहलाए, त्रय लोक विजय श्री पाए।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिपति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'पुलाक' शुभ जानो, शिव पद पाए यह मानो।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुलाक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तभ' नाम आपने पाया, गणधर बन ध्यान लगाया।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं तभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'भवान' कहाए, इस भव से मुक्ती पाए।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'तीर्थनाथ' कहलाए, गणधर पदवी को पाए।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणि 'त्रिपुष' कहे जग नामी, पद गणधर पाए स्वामी।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपुष गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'ऋद्धीमन' गणधारी, तुम हो जग मंगलकारी।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऋद्धिमन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहलाए 'सदोदुत' स्वामी, गणधर पद पाए नामी।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदोदुत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'जय गुप्त' आप कहलाए, गणधर पद पावन पाए।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं जयगुप्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो हैं विभूति के धारी, गणधर 'विभूति' अनगारी।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं विभूति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'कोषांगार' कहाए,पद गणधर का शुभ पाए।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं कोषांगार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाह।।

मुनि 'भूषा' गणधर स्वामी, जो हुए मोक्ष पथ गामी।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुनिभूषा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सिंहजीत' कर्म जयकारी, जो बने श्रेष्ठ अनगारी।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिहंजीत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'हरिवाहन' गणधर स्वामी, हो गये मोक्ष पथ गामी।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं हरिवाहन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्वयंभूत' गणी कहलाए, शिवपुर में धाम बनाए।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभूत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'वज्रदंत' जगनामी, गणधर पद पाए स्वामी।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।50।।

ॐ ह्रीं अर्ह वज्रदंत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'शशिलोच' गणी कहलाए, शशी सम जो शीतल गाए।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं शशिलोच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'भरत' गणधारे, जो संयम रतन सम्हारे।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं भरत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं 'मागध' गणधर स्वामी, जो बने मोक्ष पथ गामी।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं मागध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उद्योत' गणी कहलाए, शिव पद उद्योत कराए।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं उद्योत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'प्रभूति' हे स्वामी, हो नाशी कर्म अकामी।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'नमस्तुभ्य' गणधारी, पद पाए जो अविकारी।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमस्तुभ्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'आत्मध्यान' धार गाए, आतम का ध्यान लगाए।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मध्यान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्तुति मुख' गणधर स्वामी, हैं त्रिभुवन पति जग नामी।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्तुति मुख गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'कोतभग' गाए,मुक्ती का पथ अपनाए।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं कोतभग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है नाम 'मेघरथ' भाई, गणधर जी का शिवदायी।
श्री सुमतिनाथ के भाई, पाए पावन प्रभुताई।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं मेघरथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चौपाई)

गणधर सुमति नाथ के गाए, नाम 'मयास्ति' पावन पाए।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं मयास्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुमतिनाथ के गणधर जानो, नाम 'सरूपऋषी' है मानो।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं सरूपऋषि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर रहे 'विलासे' भाई, सुमति नाथ के मंगलदायी।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं विलासे गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं 'प्रजल्प' गणधर जग नामी, सुमतिनाथ के अन्तर्यामी।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रजल्प गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम 'यथाचल' गणधर पाए, सुमति नाथ पद शीश झुकाए।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं यथाचल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विरतय' सुमति नाम के भाई, गणधर गाए मंगलदायी ।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं विरतय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मन्मथ' गणधर रहे निराले, जग का मंगल करने वाले।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं मन्मथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'सिंहसन' हैं उपकारी, सुमति नाथ के मंगलकारी।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें ।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहसन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

'अप्राग' गणधर नाम निराला, जग का कल्मष हरने वाला।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं अप्राग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विदांकुरु' गणधर जी गाए, सुमतिनाथ पद में सिरनाए।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं विदांकुरु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'शक्री' संयम धारे, सुमति नाथ पद पाए सहारे।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं शक्री गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गर्भन्वय' गणधर पद पाए, जग को सद् संदेश सुनाए।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें ।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भन्वय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पर्यमुनि' गणधर पद पाए, जग को सद् संदेश सुनाए।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें ।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं पर्यमुनि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहे 'उदीरित' गणधर स्वामी, बने मोक्ष पथ के पथगामी।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें ।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं उदीरित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मति सागर' सम्यक् मति धारे, सुमति नाथ के गणधर प्यारे।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं मतिसागर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा

गणी 'स्वनाथ' नाम के धारी, सुमति नाथ के थे मनहारी।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मुमुद' गणी कहलाने वाले, सुमतिनाथ के रहे निराले।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुमुद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'केसव' जी कहलाए, सुमतिनाथ पद शीश झुकाए।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं केसव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्वर्गावतार' गणी पहचानों, सुमतिनाथ के पावन मानो।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें ।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्गावतार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वर्धमान' जी वृद्धी पाए, सुमतिनाथ के गणी कहाए।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम आपका 'दान' बताया, गणधर पद को तुमने पाया।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं दान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुमति नाथ के गणधर स्वामी, जो 'मल्सान' कहाए नामी।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं मल्सान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'गरिष्ट' हैं मंगलकारी, सुमति नाथ के शुभ अनगारी।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मन्दरार्थ' हैं गणधर भाई, सुमति नाथ के मंगलदायी।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं मन्दरार्थ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

नाम 'जिनोर्जित' गणधर गाए, सुमति नाथ पद संयम पाए।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनोर्जित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उक्तपंक्ति' गणधर को ध्याये, जिनके चरणों शीश झुकाए।
जिनके पद जो पूज रचावे, वे प्राणी सौभाग्य जगावें ।।86।।

ॐ ह्रीं अर्हं उक्तपंक्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'चलांग' गणधर पद धारी, पाए शिव पद जो मनहारी।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हं चलांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दृढ़कर' दृढ़ता उर में पाए, सुमति नाथ के गणधर गाए।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हं दृढ़कर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विश्वभूति' हे गणधर स्वामी, सुमति नाथ के हैं अभिरामी।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें।।89।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'कुलवंत' गणी शिवकारी, सुमति प्रभू के तुम अनगारी।
जिनके पद जो पूज रचावें, वे प्राणी सौभाग्य जगावें ।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुलवंत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(सोरठा)

'यौवन' है शुभ नाम, गणधर सुमति जिनेश के।
बारम्बार प्रणाम, विशद भाव से कर रहे ।।91।।

ॐ ह्रीं अर्हं यौवन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुमति नाथ भगवान, के 'वितर्क' गणधर कहे ।
करते हम गुणगान, जिनका भक्ती भाव से ।।92।।

ॐ ह्रीं अर्हं वितर्क गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है 'चक्रेश' गणराज, सुमति नाथ भगवान के ।
पूज रहे हम आज, पावन भक्ती भाव से ।।93।।

ॐ ह्रीं अर्हं चक्रेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'छेत्र दण्ड' गणराज, पूज्य हुए हैं लोक में ।
पूज रहे हैं आज, सुमति नाथ के जो हुए ।।94।।

ॐ ह्रीं अर्हं छेत्रदंड गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कृत' गणधर का नाम, पूज्य रहा पावन विशद।
करते चरण प्रणाम, सुमति नाथ भगवान के ।।95।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हैं 'शिवकांत', सुमति नाथ भगवान के ।
कर्म किए उपशांत, जगत पूज्यता पाए हैं ।।96।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिवकांत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'शिलास्थित' गणराज, सुमति नाथ के हैं परम ।
वन्दन करते आज, गणधर के पद में विशद ।।97।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिलास्थित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भूनुन्' कहे महान, गणधर सुमति जिनेश के।
करते हम गुणगान, जिनका भक्ती भाव से।।98।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूनुन् गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मनःपर्यय' गणराज, मनःपर्यय ज्ञानी बने।
पूज रहे हम आज, सुमति नाथ के जो विशद ।।99।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनःपर्यय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कोमल' कहे गणेश, सुमति नाथ के 'श्रेष्ठतम'।
धरे दिगम्बर भेष, पूज रहे हम भाव से।।100।।

ॐ ह्रीं अर्हं कोमल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहा 'कदाचित्' नाम, गणधर का पावन परम।
करते चरण प्रणाम, सुमति नाथके जो रहे।।101।।

ॐ ह्रीं अर्हं कदाचित् गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कष्टोत्तर' मनहार, गणधर सुमति जिनेश के।
पूजें बारम्बार, पूज्य रहे जो लोक में।।102।।

ॐ ह्रीं अर्हं कष्टोत्तर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं 'छद्मस्त' महान, सुमति नाथ के गणी शुभ।
करें भाव से ध्यान, जिनका भक्ती भाव से।।103।।

ॐ ह्रीं अर्हं छदमस्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'धवले' रहे गणेश, सुमतिनाथ भगवान के।
जग में पूज्य विशेष, जिनको हम ध्याते विशद ।।104।।

ॐ ह्रीं अर्हं धवले गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हैं 'गणपाय', सुमतिनाथ के अति 'विमल'।
मन मेरा हर्षाय, पूजा करके आपकी।।105।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणपाय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर कहे 'समाध' सुमतिनाथ के श्रेष्ठतम।
मिट जाए उन्माद, करते अर्चा हे प्रभो!।106।।

ॐ ह्रीं अर्हं समाध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम रहा 'विजहार' सुमतिनाथ के गणी का ।
वन्दन बारम्बार, करते हम जिनके चरण।।107।।

ॐ ह्रीं अर्हं विजहार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पाए नाम 'त्रिगुप्त', गणधर पदवी पाए हैं।
हुए कर्म से मुक्त, सुमतिनाथ जिनके प्रभू।।108।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिगुप्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पाए 'मगाजिन' नाम, सुमति नाथ जिनके गणी।
करते विशद प्रणाम, जिनके चरणों आज हम।109।।

ॐ ह्रीं अर्हं मगाजिन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं 'युधाष्ट' गणराज, सुमतिनाथ भगवान के ।
चरणों झुके समाज, अर्चा करने के लिए ।।110।।

ॐ ह्रीं अर्हं युधाष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जग में 'गुणी' महान, सुमतिनाथ जिनके गणी ।
करते हम गुणगान, जिनके चरणों का विशद ।।111।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'परमोत्सव' शुभकार, गणधर पाए नाम शुभ ।
वन्दन बारम्बार, सुमतिनाथ के गणी पद ।।112।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमोत्सव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुमतिनाथ भगवान के, गणधर हैं 'जन्मखग'।
करते हम गुणगान, भक्ति भाव से आपका ।।113।।

ॐ ह्रीं अर्हं जन्मखग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर का है नाम, श्री 'शत्रुघ्न' पावन परम ।
जिन पद विशद प्रणाम, सुमतिनाथ के जो रहे ।।114।।

ॐ ह्रीं अर्हं शत्रुघ्न गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सुतीर्थ' गणराज, कृपा करो निज भक्त पर।
वन्दन करते आज, सुमतिनाथ के गणी पद ।।115।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुतीर्थ गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'निधि' गणधर का नाम, मंगलकारी लोक में।
पाए जो शिवधाम, सुमतिनाथ के गणी बन ।।116।।

ॐ ह्रीं अर्हं निधि गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुमतिनाथ भगवान, गणधर पाए श्रेष्ठतम ।
करते हम गुणगान, एक सौ सोलह जो रहे ।।117।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों श्री सुमतिनाथस्य चमरादि एक शत् षोडष गणधराय नम: पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

इति श्री सुमतिनाथस्य चमरादि 116 गणधराय नम: पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– **पूजा करते भाव से, भक्ती धार विशेष।**
गुणमाला गाते यहाँ, भव नश जाएँ अशेष॥

(शम्भू छन्द)

सुमतिनाथ तीर्थंकर पञ्चम, पञ्चम गति प्रगटाए हैं।
अन्तिम ग्रीवक से च्युत होकर, जन्म अयोध्या पाए हैं।।1।।
मात मंगला सोलह सपने, देख हुई थी भाव विभोर।
पिता मेघरथ के गृह खुशियाँ, अनुपम छाई चारों ओर।।2।।
अष्ट देवियों को माता की, सेवा का अवसर आया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराने, का सौभाग्य इन्द्र पाया।।3।।
चकवा चिन्ह आपके पद में, धनुष तीन सौ ऊँचाई।
चालिस लाख पूर्व की आयु, देह स्वर्ण सम शुभ गाई।।4।।
पूर्व भवों का चिन्तन करके, प्रभु वैराग्य जगाए थे।
पञ्च महाव्रत धारण करके, मुनिवर दीक्षा पाए थे।।5।।

कर्म घातिया नाश किए प्रभु, केवलज्ञान जगाया है।
भवि जीवों ने दिव्य देशना, का अवसर शुभ पाया है॥6॥

दोहा– **योग रोधकर आपने, किया आत्म का ध्यान।**
मुक्त हुए संसार से, शिवपुर किया प्रयाण।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **रत्नत्रय निधि प्राप्त कर, हुए त्रिलोकी नाथ।**
'विशद' शांति कर दीजिए, चरण झुकाते माथ॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री पद्मप्रभु पूजन-6

स्थापना

पद्म प्रभु ने पद्म सम, धार लिया वैराग।
तिष्ठाते निज हृदय में, करके पद अनुराग॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

हम निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादी रोग नशाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन यह घिसकर लाए, भवताप नशाने आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत यह यहाँ चढ़ाएँ, हम अक्षय पदवी पाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

यह सुरभित पुष्प चढ़ाएँ, हम काम बाण विनसाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ा हर्षाएँ, हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत के यह दीप जलाए, मम मोह नाश हो जाए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यह पूजा को लाए, शिव फल पाने हम आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

चौपाई

गर्भ चिन्ह माँ के उर आये, देव रत्न वृष्टी करवाए।
माघ कृष्ण पष्ठी शुभ गाई, उत्सव देव किए सुखदायी।।1।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल कृष्ण त्रयोदशि पाए, सुर नर इन्द्र सभी हर्षाए।
जन्मोत्सव मिल इन्द्र मनाए, आनन्दोत्सव श्रेष्ठ कराए।।2।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ल त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि तेरस शुभकारी, संयम धार हुए अनगारी।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, जग जंजाल छोड़ वन आए।।3।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ल त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की पूनम पाए, विशद ज्ञान प्रभु जी प्रगटाए।
धर्म देशना आप सुनाए, इस जग को सत्पथ दिखलाए।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी भाई, के दिन प्रभु ने मुक्ती पाई।
अपने सारे कर्म नशाए, तज संसार वास शिव पाए।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभु गणधर पूजा

(चौपाई छन्द)

'वज्र चमर' गणधर कहलाए, चार ज्ञान के धारी गाए ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रचमर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'श्रद' गणधर का नाम बताया, जिनने मोक्ष मार्ग अपनाया ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सत् कोपत' गणधर शुभ गाए, आप सकल संयम अपनाए।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्कोपत् गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

श्रेष्ठ 'धराधर' नाम निराला, गणधर का मन हरने वाला ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं धराधर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पुष्प वृष्टि' अतिशय के धारी, गणधर गाए हैं शुभकारी ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्प वृष्टि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहे 'गताधर' गणधर स्वामी, बने मुक्ति के जो अनुगामी
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं गताधर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कन्नक' गणधर महिमा धारी, वीतराग धारी अनगारी ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं कन्नक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'शैल' नाम को पाए, अचल गुणों के धारी गाए ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं शैल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम आपका 'विदृत' गाया, गणधर का पद जिनने पाया ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं विदृत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वृहस्पति' आप कहे जगनामी, गणधर शिव पद के अनुगामी।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृहस्पति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विडग' आपको कहते ज्ञानी, गणधर जग जन के कल्याणी।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं विडग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कम्पन' गणी कहे जग नामी, जिनके चरणों विशद नमामी ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं कम्पन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं 'सम्वाद' नाम के धारी, गणधर स्वामी जी अनगारी ।।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्वाद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम 'जगौगन' पाने वाले, गणधर जग में रहे निराले ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगौगन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वन्दनार्थ' पद वन्दन करते, गणधर सबका कालुष हरते।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं वन्दनार्थ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'त्रिभुवन' गणधर पूज्य कहाए, तीन लोक की प्रभुता पाए।
पद्म प्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वरदत्ता' वर देते भाई, गणधर की फैली प्रभुताई ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं वरदत्ता गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मंत्रिगता' मंत्रों के ज्ञाता, जग जीवों के गाये त्राता ।।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रिगता गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'ददृश' गणधर संयम धारे, मोक्ष मार्ग को आप सम्हारे ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं ददृश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

गणधर 'अरुन' कहे शिवकारी, जिनकी महिमा जग से न्यारी।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरुन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जी 'अरतेय' कहाए, चार ज्ञान के धारी गाए ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरतेय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कष्टध केश' आप कहलाए, कष्ट जगत के दूर हटाए ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं कष्टधकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'संघात' आपको ध्याते, गणधर की महिमा को गाते ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं संघात गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जी 'कृतमन्य' निराले, सबके संकट हरने वाले ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतमन्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहे 'पद्मरथ' गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथ गामी।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं पदमरथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्तंभित' गणधर जी गाए, सबको शिव की राह बताए ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्तंभित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'खड्गाधर' हे गणधर स्वामी, हुए स्वयं जो शिवपथ गामी।।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं खड्गाधर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पूरतोंग' निज ज्ञान जगाए, शिवपथ के राही कहलाए ।
पद्मप्रभु के मंगलकारी, संत हुए पावन अविकारी ।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूरतोग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(छन्द मोतियादाम)

कहाए 'समुद्भूत' गणराज, रहे जो तारण तरण जहाज ।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं समुद्भूत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम 'निक्राशत' रहा महान, करें हम भाव सहित गुणगान ।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं निक्राशत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री गणधर जी कहे 'पदंग', किए कर्मो की सत्ता भंग
पद्मप्रभ जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं पदंग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम गणधर का है 'प्रत्यन्त', बढ़े. कर्मो का करने अंत ।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यन्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सर्चिउचत' गणधर का नाम, चरण में जिनके विशद प्रणाम ।।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं सचिउचत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी हैं 'उच्यत' सर्व महान, करें हम भाव सहित गुण गान।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं उच्यत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहाए 'सुकृतपुण्य' गणेश, पूजते जिनके चरण विशेष ।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुकृतपुण्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहा गणधर का 'मोहत' नाम, बनाए जो शिवपुर में धाम ।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोहत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभू के हैं गणधर 'स्मदान', हुए जग में जो संत महान ।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।37।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्मदान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अकंपन' कहलाए गणराज, हुए जो तारण तरण जहाज ।
पद्मप्रभ जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।38।।
ॐ ह्रीं अर्हं अकंपन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहा 'धवलख' गणधर का नाम, किए जो शिव पद में विश्राम ।।
पद्मप्रभ जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।39।।
ॐ ह्रीं अर्हं धवलख गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम गणधर का रहा 'प्रभास', किए हैं सिद्ध शिला पर वास ।
पद्मप्रभ जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।40।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभास गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहाए गणधर जी 'एकात', कर्म का किए नाश उत्पात।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।41।।
ॐ ह्रीं अर्हं एकात गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

योगधारी 'योगी' गणराज, पूजते जिनके पद हम आज ।।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।42।।
ॐ ह्रीं अर्हं योगी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहाए 'धूमकेत' गणराज, कहे जो तारण तरण जहाज।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।43।।
ॐ ह्रीं अर्हं धूमकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पद्मरथ' है गणधर का नाम, करें जिनके पद सभी प्रणाम ।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।44।।
ॐ ह्रीं अर्हं पद्मरथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वीरगद' पावन हुए गणेश, पूजते जिन पद सुर अवशेष।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।45।।
ॐ ह्रीं अर्हं वीरगद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'राजेस्थि' गणधर पदवी धार, हुए हैं भव सागर से पार।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।46।।
ॐ ह्रीं अर्हं राजेस्थि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'मंत्री' कहलाए महान, किए जग जीवों का कल्याण।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।47।।
ॐ ह्रीं अर्हं मंत्री गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'प्रराहू' गणी कहाए आप, करें हम नाथ! नाम का जाप ।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।48।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रराहु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम है गणधर का 'ननिवाह', पाए जो मुक्ती की शुभराह।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।49।।
ॐ ह्रीं अर्हं ननिवाह गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम गणधर का 'अत्तिर्लाद', हृदय में धारे हैं आह्लाद ।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।50।।
ॐ ह्रीं अर्हं अत्तिर्लाद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहा 'अचल कीर्ति' आपका नाम, चरण में शत् शत् बार प्रणाम।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।51।।
ॐ ह्रीं अर्हं अचलकीर्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'निखित्स' कहलाए गणी महान, करें हम जिनका निशदिन ध्यान।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।52।।
ॐ ह्रीं अर्हं निखित्स गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'बलिप्रति' कहलाए गणराज, करे जग जिनको पाके नाज ।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।53।।
ॐ ह्रीं अर्हं बलिप्रति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम गणधर का है 'दातार', करें जो भव सागर से पार।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।54।।
ॐ ह्रीं अर्हं दातार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सुदर्शन' गणधर हुए महान, हृदय में धारे जो श्रद्धान ।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुदर्शन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सुखार्नव' कहलाए जगपाल, चरण में वन्दन मेरा त्रिकाल।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुखार्नव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विष्णु' कहलाए गणी विशेष, दिए हैं मुक्ती का संदेश
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं विष्णु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम गणधर का है 'प्रतिसेन', श्रेष्ठ है जिनकी जग को देन।।
पद्मप्रभु जी के मंगलकार, गणी कहलाए जिन अनगार ।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिसेन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चाल छन्द)

'उत्कृष्ट' गणी कहलाए, जो शिव पदवी को पाए ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्कृष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गौवर्धन' गणधर गाए, जो केवल ज्ञान जगाए ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं गौवर्धन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'वेष्टिप' गणधर स्वामी, तुम बने मोक्ष पथ गामी ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेष्टिप गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विक्रिया' गणी कहलाए, जो केवलज्ञान जगाए ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं विक्रिया गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'दीर्घांग' निराले, कर्मों को हरने वाले ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं दीर्घांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।62।।

'द्विपद' गणधर जग नामी, हैं रत्नत्रय के स्वामी ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्विपद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'नायाद' नाम के धारी, गणधर हैं मंगलकारी ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं नायाद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जी 'सांगि' कहाए, जो मोक्ष मार्ग अपनाए ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं सांगि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'महाघोष' नाम के धारी, गणधर गाए अविकारी ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाघोष गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जी 'रेशि' कहाए, जो मोक्ष मार्ग अपनाए ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं रेशि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'वरेचि' कहलाए, जो रत्नत्रय को पाए ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं वरेचि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चरणनिन' गणी जग नामी, जो हैं त्रिभुवन के स्वामी ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं चरणनिन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'ऋद्धघ्रे' ऋद्धी धारी,जग जन के करुणाकारी ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऋद्धघ्रे गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उत्साह' आप कहलाए, गणधर पदवी शुभ पाए ।।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्साह गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कुर्वन' गणधर पद ध्यायें, इस भव से मुक्ती पाएँ ।।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुर्वन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'पूजत' कहलाए, जो जगत पूज्यता पाए ।।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूजत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'ददाति' कहाए, जो शिव पदवी को पाए ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं ददाति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भयमन्' हे गणधर स्वामी, तुम हुए मोक्ष पथगामी ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।76।।

ॐ ह्रीं अर्ह्रं भयमन् गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'यथांग' निराले, जग का भय हरने वाले ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं यथांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'समास' कहलाए, समता की धार बहाए ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं समास गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'धाम्नी' जगनामी, तुम तीन लोक के स्वामी ।।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं धाम्नी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'बुद्धिच' हे बुद्धी वाले, गणधर जी रहे निराले ।।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धिच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'नीमीन' ज्ञान के धारी, गणधर हैं करुणाकारी ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं नीमीन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गदतांदित' गणधर स्वामी, हो विशद मोक्ष पथगामी ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं गदतांदित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भ्राजिष्णु' आप कहलाए,तुम केवलज्ञान जगाए ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं भ्राजिष्णु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कटउष्ट' आप को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं कटउष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'प्रथमादि' गणी कहलाए, जो रत्नत्रय को पाए ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रथमादि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गजदंत' नाम के धारी,गणधर हैं शुभ अविकारी ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।86।।

ॐ ह्रीं अर्हं गजदंत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गजदत्त' आपको ध्यायें, गणधर तुमसे बन जाए ।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हं गजदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'स्तनकुभौ' निराले, गणधर शिव पाने वाले।
श्री पद्मप्रभु के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।। 88।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्तनकुभौ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(मोतियादाम छन्द)

'छदमस्थ' गणी जग में महान, जो प्रगटाए केवल्यज्ञान ।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान ।।89।।

ॐ ह्रीं अर्हं छदमस्थ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'जल्लो' गणधर हैं ज्ञानवान, जिनका हम करते गुणोगान ।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान ।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हं जल्लो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पद्मोदर' पाए आप नाम, गणधर जी तव चरणों प्रणाम।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।91।।

ॐ ह्रीं अर्हं पदमोदर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज कहाए हैं 'भ्रनान', जो किए कर्म की पूर्ण हान ।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।92।।

ॐ ह्रीं अर्हं भ्रनान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तप' किए कर्म का पूर्ण नाश, गणधर शिवपद में किए वास ।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान ।।93।।

ॐ ह्रीं अर्हं तप गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पुण्योदित' गणधर पुण्यवान, जिनका हम भी नित करें ध्यान ।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान ।।94।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्योदित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अक्षिन' हैं अक्षय ज्ञानवान, जो तीन लोक में हैं प्रधान ।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।95।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षिन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं 'कुलिच' लोक में श्रेष्ठ संत, गणधर जी कीन्हें कर्म अंत।
श्री पद्मभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान ।।96।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुलिच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पटकुल' गणधर जी हैं प्रधान, जो पाए पावन विशद ज्ञान।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान ।।97।।
ॐ ह्रीं अर्हं पटकुल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कोपान्नि' आपका रहा नाम, हे गणधर तव चरणों प्रणाम।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।98।।
ॐ ह्रीं अर्हं कोपान्नि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गांधर्वा' गणधर जी विशेष, जो कर्म नाश कीन्हे अशेष ।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।99।।
ॐ ह्रीं अर्हं गांधर्वा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'गोपुर' गाये महान, जिनकी जग में है अलग शान।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।100।।
ॐ ह्रीं अर्हं गोपुर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'समाश्रित' रहे संत, जो ज्ञान प्राप्त कीन्हें अनन्त ।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।101।।
ॐ ह्रीं अर्हं समाश्रित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गुण सागर' गुण के रहे कोष, गणधर जी नाशे पूर्ण दोष ।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।102।।
ॐ ह्रीं अर्हं गुणसागर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'नन्दीतट' गुण के हैं निधान, गणधर जी गुण की रहे खान।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।103।।
ॐ ह्रीं अर्हं नन्दीतट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सत्पादय' जिन का रहा नाम, गणधर का शिव में रहा धाम।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।104।।
ॐ ह्रीं अर्हं सत्पादय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'अशोकित' हैं महान, जिनका करना है नित्य ध्यान ।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।105।।
ॐ ह्रीं अर्हं अशोकित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सूनटिं' गणधर जी हैं अपार, जो भव सागर से हुए पार ।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।106।।
ॐ ह्रीं अर्हं सुनटिं गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सफलांग' आप हो सफल संत, गणराज किए हैं कर्म अंत।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान ।।107
ॐ ह्रीं अर्हं सफलांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'सुमुन्नत' हैं विशेष, ना दोष कोई भी रहे शेष।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।108।।
ॐ ह्रीं अर्हं सुमुन्नत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहलाए 'कुलाविल' जी गणेश,जो कर्म नाश कीन्हें अशेष।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।109।।
ॐ ह्रीं अर्हं कुलाविल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर कहलाए हैं 'विवक्ष', जो रत्नत्रय में रहे दक्ष।
श्री पद्मभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।110।।
ॐ ह्रीं अर्हं विवक्ष गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जल चन्दनादि का लिया अर्घ्य, अब सुपद प्राप्त होवे अनर्घ्य।
श्री पद्मप्रभु के थे महान, हम भी जिनका शुभ करें ध्यान।।111**।।**
ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों श्री पद्मनाथस्य वज्रचमरादि दशाधिक शत् गणधराय नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।
इति श्री पद्मप्रभस्य चमरादि 110 गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **पद्मासन पद में पदम, पद्म प्रभु भगवान।**
जयमाला गाते विशद, पाने शिव सोपान।।

(मानव छन्द)

चरण में भक्ती से शत् इन्द्र, झुकाते प्रभु चरणों में शीश।
कहाए पद्मप्रभु भगवान, जगत में जगती पति जगदीश।।1।।

अनुत्तर वैजयन्त से आप, चये कौशाम्बी नगरी आन।
धरण नृप रही सुसीमा मात, गर्भ में कीन्हे आप प्रयाण।।2।।
दाहिने पग में कमल का चिन्ह, इन्द्र ने देख दिया शुभ नाम।
कराए न्हवन मेरु पे इन्द्र, चरण में कीन्हे सभी प्रणाम।।3।।
जगा प्रभु के मन में वैराग, सकल संयम धर हुए मुनीश।
ऋद्धियाँ प्रगटी अपने आप, अतः कहलाए आप ऋशीष।4।।
स्वयंभू बनकर के भगवान, जगाए अनुपम केवलज्ञान।
रचाएँ समवशरण तब देव, रहा विधि का कुछ यही विधान।।5।।
पूर्ण कर आयू कर्म अशेष, किए सब कर्मों का प्रभु नाश।
समय इक में सिद्धालय जाय, वहाँ पर कीन्हे आप निवास।।6।।

दोहा– **प्रभु अनन्त ज्ञानी हुए, गुण अनन्त की खान।**
गुण गाते निज भाव से, मिले मुक्ति का यान।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **इन्द्रिय जेता आप हो, बने आप भगवान।**
अतः इन्द्र शत आपका, करें 'विशद' गुणगान।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री सुपार्श्वनाथ जिन पूजन-7

स्थापना

जिन सुपार्श्व का दर्श कर, जागे उर श्रद्धान।
आओ तिष्ठो मम हृदय, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई छन्द)

शीतल जल भरके हम लाए, जिन पद में त्रयधार कराए।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन यह भवताप नशाए, अर्चा करने को हम लाए।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत यहाँ चढ़ाने लाए, अक्षय पद पाने हम आए।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प लिए यह मंगलकारी, काम रोग के नाशनकारी।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

चरु से जिन पद पूज रचाते, विशद भाव से महिमा गाते।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का जगमग दीप जलाए, मोह नाश मेरा हो जाए।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुरभित धूप जला हर्षाएँ, अष्टकर्म से मुक्ती पाएँ।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यह चढ़ा रहे शुभकारी, मुक्ती पद दायक मनहारी।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पद अनर्घ्य पाके शिव जाएँ।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

षष्ठी सित भादों पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए।
उत्सव तब देव मनाए, जिन गृह आके हर्षाए।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रपक्षशुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशी जेठ सित गाई, जन्मे सुपार्श्व जिन भाई।
जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, जिनवर का न्हवन कराए।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादशां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशी जेठ सित स्वामी, संयम धारे जगनामी।
वैराग्य हृदय में छाया, भोगों से मन अकुलाया।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि छठी निराली, फैलाए ज्ञान की लाली।
अज्ञान के मेघ हटाए, केवल रवि जिन प्रगटाए।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि सातें जानो, जिन वर शिव पाए मानो।
सम्मेद शिखर से स्वामी, प्रभु बने मोक्ष पथगामी।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तयां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपार्श्वनाथ गणधर पूजा

दोहा

श्री सुपार्श्व जिनके हुए, गणधर जी 'बलदत्त'।
मोक्ष मार्ग जो पाए हैं, बने अतः कई भक्त ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं बलदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मण्डप' जग में श्रेष्ठतम, है गणधर का नाम ।
जिन सुपार्श्व के जो हुए, जिन पद विशद प्रणाम ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मण्डप गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'लोष्टकेश' गणराज का, करते हम गुणगान ।
जिन सुपार्श्व के जो हुए, जग में महति महान ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोष्टकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'जातकेश' जग मे हुए, ज्ञानी आप गणेश ।
जिन सुपार्श्व के लोक में, नाशे कर्म अशेष।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं जातकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उज्वलांग' गणधर हुए, जिन सुपार्श्व के साथ ।
जिनके चरणों भाव से, झुका रहे हम माथ ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं उज्वलांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री 'सुकेसि' गणधर हुए, पाए केवलज्ञान ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, विशद किए जो ध्यान।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुकेसि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चार ज्ञान धारी गणी, है 'सुषेण' शुभ नाम ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, नत हो किए प्रणाम ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुषेण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चार ज्ञान धारी हुए, गणधर 'सुफल' महान।
श्री सुपार्श्व के चरण में, विशद किए जो ध्यान।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुफल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पाए नाम 'सुपाक' शुभ, गणधर बने महान ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, विशद किए जो ध्यान।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुपाक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'निर्मोहि' गणधर कहे, किए आत्म कल्याण ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, विशद किए जो ध्यान।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मोहि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर पद धारी हुए, 'सीमंधर' है नाम ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, नत हो किए प्रणाम ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं सीमंधर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर बने 'प्रतिर्य' शुभ, किए जगत कल्याण ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, विशद किए जो ध्यान।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिर्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'लोकोत्तर' गणधर बने, पाए हैं चउ ज्ञान ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, विशद किए जो ध्यान।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी कहे 'जरदंगजी', किए प्रभू गुणगान ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, विशद किए जो ध्यान।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं जरदंग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर पद पाए विशद, कहलाए 'क्रयाम' ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, नत हो किए प्रणाम ।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रयाम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चार ज्ञान धारी हुए, पाए 'वचोमृत' नाम ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, विशद किए जो ध्यान।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं वचोमृत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर पद धारी हुए, कहलाए 'स्वनतान'।
श्री सुपार्श्व के चरण में, विशद किए जो ध्यान।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वनतान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बने 'क्षेमंकर' जिन गणी, किए आत्म कल्याण ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, विशद किए जो ध्यान।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमंकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर श्री 'मुदगत' हुए, विशद गुणों की खान ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, विशद किए जो ध्यान।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुदगत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विरचित' गणधर जी दिए, जग को जीवन दान ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, विशद किए जो ध्यान।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं विरचित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'नाना' गति के बंध का, कीन्हें काम तमाम।
श्री सुपार्श्व के चरण में, नत हो किए प्रणाम ।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं नाना गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गुप्ति' नाम धारी हुए, गणी कहे भगवान ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, विशद किए जो ध्यान।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुप्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जग पालक 'पालक' गणी, हुए श्रेष्ठ विद्वान ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, विशद किए जो ध्यान।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं पालक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भोगत' पाए नाम शुभ, गणधर आप महान ।
श्री सुपार्श्व के चरण में, विशद किए जो ध्यान।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं भोगत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(तर्ज – हे वीर तुम्हारे!)

जग जीवों को सच्चे सुख का, जिनने शुभ मार्ग बताया है।
गणधर 'क्यस्त' हुए पावन, जिनवर सुपार्श्व को ध्याया है।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्यस्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्मो का क्षय किए 'क्षपण' ऋषि, गणधर का पद पाया है
दिव्य देशना झेले प्रभु की, जिन सुपार्श्व को ध्याया है।।26।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्षपण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'सुभाक्षत' ने अक्षय पद, गणधर का शुभ पाया है।
दिव्य देशना झेले प्रभु की, जिन सुपार्श्व को ध्याया है।।27।।
ॐ ह्रीं अर्हं सुभाक्षत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्मो को गणधर 'क्षलोक' ने, पूर्ण रूप विनसाया है।
दिव्य देशना झेले प्रभु की, जिन सुपार्श्व को ध्याया है।।28।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्षलोक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चार ज्ञान धारी 'ईक्षत' गणि, ने संयम को पाया है।
दिव्य देशना झेले प्रभु की, जिन सुपार्श्व को ध्याया है।।29।।
ॐ ह्रीं अर्हं ईक्षत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'कर्मनाशे' अभिरामी, शिवपथ को अपनाया है ।
दिव्य देशना झेले प्रभु की, जिन सुपार्श्व को ध्याया है।।30।।
ॐ ह्रीं अर्हं कर्मनाशे गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'ऋषि' गणधर जी ने चार ज्ञान, पाने का भाग्य जगाया है।
दिव्य देशना झेले प्रभु की, जिन सुपार्श्व को ध्याया है।।31।।
ॐ ह्रीं अर्हं ऋषि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऋषि 'अक्षेम' निराले जग में, गणधर पद को पाया है।
दिव्य देशना झेले प्रभु की, जिन सुपार्श्व को ध्याया है।32।।
ॐ ह्रीं अर्हं अक्षेम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर पद को पाने वाले, कहलाए हैं ऋषि 'द्युतिरक्त' ।
अर्चा करते जिनके चरणों , दूर दूर से आके भक्त ।।33।।
ॐ ह्रीं अर्हं द्युतिरक्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सुगुप्ति' गुप्ती के धारी, गणघर का पद पाए आप।।
चरण वन्दना करें भक्त सब, कट जाते हैं उनके पाप ।।34।।
ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर पद को पाने वाले, पावन ऋषि 'पुष्पेसु' महान ।।
सुर नर किन्नर सभी देवगण, करें विशद जिनका गुणगान।।35।।
ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पेसु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा

गणधर आप 'चतुर्थि' कहाए, मनःपर्यय जो पाए ज्ञान।
सुर नर किन्नर सभी देवगण, करें विशद जिनका गुणगान।।36।।
ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्थि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गौतम' नाम आपका पावन, गणधर पद जो पाए प्रधान।
सुर नर किन्नर सभी देवगण, कर विशद जिनका गुणगान।।37।।
ॐ ह्रीं अर्हं गौतम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

संयम शील 'संयमी' पावन, गणधर हुए श्रेष्ठ गुणखान ।
सुर नर किन्नर सभी देवगण, करें विशद जिनका गुणगान।।38।।
ॐ ह्रीं अर्हं संयमी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हुए 'धसानन' गणधर स्वामी, कहलाए अतिशय विद्वान।
सुर नर किन्नर सभी देवगण, करें विशद जिनका गुणगान।।39।।
ॐ ह्रीं अर्हं धसानन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर रत्नत्रय के धारी, 'राजन' हुए हैं महति महान।
सुर नर किन्नर सभी देवगण, करें विशद जिनका गुणगान।।40।।
ॐ ह्रीं अर्हं राजन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'नलना' जिनवाणी के ललना, गणधर पाए सम्यक ज्ञान।
सुर नर किन्नर सभी देवगण, करें विशद जिनका गुणगान।।41।।
ॐ ह्रीं अर्हं नलना गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर पावन हुए 'शतृंघण', किए आतमा का उत्थान ।
सुर नर किन्नर सभी देवगण,करें विशद जिनका गुणगान।।42।।
ॐ ह्रीं अर्हं शतृंघण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अनागार' आगार तजे हैं, गणधर किए जगत कल्याण ।
सुर नर किन्नर सभी देवगण, करें विशद जिनका गुणगान।।43।।
ॐ ह्रीं अर्हं अनागार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन 'सुपार्श्व' के गणी कहाए , हैं सुपार्श्व सद्गुण की खान ।
सुर नर किन्नर सभी देवगण, करें विशद जिनका गुणगान।।44।।

ॐ ह्रीं सुपार्श्व गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सत्यस' गणधर संयम धारी, पाए हैं सम्यक् श्रद्धान ।
सुर नर किन्नर सभी देवगण, करें विशद जिनका गुणगान।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यस गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'प्राणित' गणधर के चरणों में, पाते प्राणी ज्ञान निधान ।
सुर नर किन्नर सभी देवगण, करें विशद जिनका गुणगान।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राणित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वचस' गणी वचनों की सिद्धी, पाने वाले हुए महान ।
सुर नर किन्नर सभी देवगण, करें विशद जिनका गुणगान।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं वचस गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'जगत्सुखा' गणधर कहलाए, रत्नत्रय धारी गुणवान ।
सुर नर किन्नर सभी देवगण, करें विशद जिनका गुणगान।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्सुखा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चाल छन्द)

गणराज 'अदत' मनहारी, संयम धारे अनगारी ।।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं अदत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणि 'यशोधरात' कहाए, जो शिव पदवी को पाए ।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं यशोधरात गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

हे 'देवदत्त' जगनामी, तुम गणी बने शिवगामी ।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'चकोरि' कहलाए, जो पावन संयम पाए ।।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं चकोरि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दशबाह्य' गणी पद पाए, मनःपर्यय ज्ञान जगाए ।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं दशबाह्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'निवृति' गणधर स्वामी, जो हुए मोक्ष पथगामी ।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं निवृति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'परलोक' गणी शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं परलोक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उत्साह' नाम के धारी, गणधर गाए अनगारी।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्साह गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उत्कण्ठ' आप कहलाए, गणधर पदवी को पाए ।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्कण्ठ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'महासाधू' रहे निराले, गणधर पद पाने वाले।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं महासाधु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'सुसाधु' शुभकारी, जिनकी है महिमा न्यारी ।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुसाधु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'क्षिपात' हे स्वामी, जो बने मोक्ष पथगामी।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षिपात गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सुगति' गणी जगनामी, कहलाए आप अकामी ।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सुमति' नाम के धारी, गणधर जी कर्म निवारी।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुमति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'सुषेनि' कहलाए, जो मोक्ष महा पद पाए।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुषेनि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'रुण्यत' गणधर को ध्यायें हम शिव पदवी को पाए।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई ।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं रुण्यत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'षट्चत्वारि' कहाए, गणधर जी ज्ञान जगाए।।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं षट्चत्वारि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'शेष' गणी अनगारी, तुम हुए पूर्ण अविकारी।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं शेष गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'पधित' नाम को पाए, गणधर जी ज्ञानी गाए ।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं पधित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'सुपुष्ट' कहलाए, जो मोक्ष मार्ग अपनाए।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुपुष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चित्रांग' चित्त के हारी, गणधर पदवी के धारी।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं चित्रांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'भूति' नाम के धारी, गणराज बने अनगारी ।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'तनाचन' गाए, अतिशय महिमा दिखलाए ।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं तनाचन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उपदेश' देशना देते, जग का कल्मष हर लेते ।
जिनवर सुपार्श्व के भाई, पाए अतिशय प्रभुताई।।72।।

ॐ ह्रीं अर्ह उपदेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(छन्द काव्य)

गणधर जी 'निर्वाण', मुक्ती पद को पाए ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी कहलाए ।।73।।

ॐ ह्रीं अर्ह निर्वाण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अतिवल धारी आप, 'अवल' नाम शुभ पाए
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी कहलाए ।।74।।

ॐ ह्रीं अर्ह अवल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'विधेय' गणराज, निर्मल ज्ञान जगाए।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी कहलाए ।।75।।

ॐ ह्रीं अर्ह विधेय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम 'विध्रधत' आप, गणधर पावन पाए ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी कहलाए ।।76।।

ॐ ह्रीं अर्ह विध्रधत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'विमोही'आप, मोह को पूर्ण नशाए ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी कहलाए ।।77।।

ॐ ह्रीं अर्ह विमोही गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर आप 'चलात्', चयकर स्वर्ग से आए ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी कहलाए ।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं चलात् गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पाण्डुर' हे मुनिराज, गणधर आप कहाए ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी कहलाए ।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं पाण्डुर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'जीवन' हे शिवधाम, शिव पदवी को पाए ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी कहलाए ।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं जीवन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्वरवांधर' गुरु आप, महिमा बहु दिखलाए ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी कहलाए ।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वरवांधर जीवन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहलाए 'स्थेर्य' गणधर, शिव पद पाए ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी कहलाए ।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थेर्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गुरू 'चलाचल' आप, हल चल पूर्ण नशाए ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी कहलाए ।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं चलाचल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सर्वमेव' गणराज, चौथा ज्ञान जगाए।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी कहलाए ।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वमेव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'जलमिन्दु' गणेश, तव दर्शन जो पाए ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी कहलाए ।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं जलमिन्दु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'बुध' गणधर का नाम, जग में पूज्य कहाए
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी कहलाए ।।86।।

ॐ ह्रीं अर्ह्ं बुध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऋद्धि सिद्धि 'समृद्धि', धारी आप कहाए।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी कहलाए ।।87।।

ॐ ह्रीं अर्ह समृद्धि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनियों में भी श्रेष्ठ, 'पुंगव' हो तुम ज्ञानी ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जग कल्याणी।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुंगव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहे 'भक्तिभर' आप, गणधर ज्ञानी ध्यानी ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जग कल्याणी ।।89।।

ॐ ह्रीं अर्ह भक्तिभर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'अतिरुष्ट' गणेश, तव महिमा ना जानी ।।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जग कल्याणी ।।90।।

ॐ ह्रीं अर्ह अतिरुष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'हरख' गणी महाराज, सत् संयम के धारी ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी शिवकारी ।।91।।

ॐ ह्रीं अर्ह हरख गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पाए नाम 'अशोक', थे जो शोक निवारी ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी शिवकारी ।।92।।

ॐ ह्रीं अर्ह अशोक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे गणी 'सनृघण' आप, हुए जग में अविकारी ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी शिवकारी ।।93।।

ॐ ह्रीं अर्ह सनृघण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हे 'सकलोच', तव महिमा है भारी ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी शिवकारी ।।94।।

ॐ ह्रीं अर्ह सकलोच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो कहलाए 'अमूढ्य', पावन संयमधारी ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी शिवकारी।।95।।

ॐ ह्रीं अर्ह अमूढ्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पंचानवे गणराज, बनकर के अनगारी ।
जिन सुपार्श्व के आप, गणधर जी शिवकारी ।।96।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों श्री सुपार्श्वनाथस्य बलदत्तादि पंचनवति गणधराय नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।।

इतिश्री सुपार्श्वनाथस्य बलदत्तादिपंचनवति गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **नाथ सुपारस आपकी, गाए जो जयमाल।**
भक्ति जगाए निज हृदय, होवे वही निहाल॥

(ताटंक छन्द)

मध्यम ग्रीवक से चय प्रभु ने, नगर बनारस जन्म लिया।
सुप्रतिष्ठ राजा पृथ्वीमति, माँ को तुमने धन्य किया॥1॥
जन्मोत्सव पर शत् इन्द्रों ने, मेरु पे न्हवन कराया था।
स्वस्तिक चिन्ह देख सुरपति ने, नाम सुपार्श्व बताया था॥2॥
तीस लाख पूरव की आयू, तन का वर्ण हरित पाए।
दो सौ धनुष रही ऊँचाई, सहस्राष्ट शुभगुण गाए॥3॥
पतझड़ देख भावना भाके, प्रभु वैराग्य जगाए थे।
अनुमोदन करने लौकान्तिक, ब्रह्म स्वर्ग से आए थे॥4॥
मनोगती ले देव पालकी, प्रभु को वन में पहुँचाए।
सर्व परिग्रह त्याग प्रभु जी, मुनिवर की दीक्षा पाए॥5॥
उत्तम तप का कर्म नाश प्रभु, केवल ज्ञान जगाए हैं।
समवशरण में दिव्य देशना, गणधर सुर नर पाए हैं॥6॥

दोहा– **तीर्थराज सम्मेद पर, जानो कूट प्रभास।**
कर्म नाश शिवपुर गये, किया जहाँ पर वास॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **भक्तिभाव से भक्त जो, करते प्रभु गुण गान।**
अल्प समय में जीव वह, पाते पद निर्वाण।

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री चन्द्रप्रभु जिन पूजन-8

स्थापना (सोरठा)

कांती चन्द्र समान, चन्द्र प्रभु भगवान की।
भाव सहित आह्वान, हृदय कमल में आपका॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल टप्पा)

निर्मल जल यह प्रासुक करके, हम लाए भाई।
जन्म जरादी रोग नाश हो, जो है दुखदायी॥
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥1॥ पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन में केसर की खुशबू, अतिशय महकाई।
भवाताप हो नाश हमारा, चर्च रहे भाई॥
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥2॥ पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत धवल मनोहर, लाए हर्षाई।
अक्षय पद पाएँ हम जिसकी, फैली प्रभुताई॥
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥3॥ पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित पुष्पों ने इस जग में, महिमा दिखलाई।
जिन भक्तों ने काम रोग से, भी मुक्ती पाई।

पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।4।। पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ताजे यह नैवेद्य बनाए, हमने सुखदायी।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, महिमामय भाई।।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।5।। पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नमयी शुभ घी के दीपक, अनुपम प्रजलाई।
महामोह तम जिन अर्चा से, क्षण में नश जाई।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।6।। पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप अग्नि में खेने से शुभ, धूम उड़े भाई।
नशें कर्म आठों अब मेरे, जो है दुखदायी।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।7।। पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस ताजे फल लाए, पावन सुखदायी
महामोक्ष फल पाय जिसकी, फैली प्रभुताई।।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।8।। पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, हमने शुभ भाई।
पद अनर्घ्य पाने हम आए, मन में हर्षाई।।

पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।9।। पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चालछन्द)

पाँचे वदि चैत निराली, जिन गृह में छाई लाली।
गर्भागम देव मनाए, जिन माँ के गर्भ में आए।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि आई, सारी जगती हर्षाई।
सुर जन्म कल्याण मनाएँ, सब ताण्डव नृत्य कराएँ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि पाए, जिनवर वैराग्य जगाए।
क्षण भंगुर यह जग जाना, निजका स्वरूप पहचाना।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि सातें जानो, प्रभु हुए केवली मानो।
सुर समवशरण बनवाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन सुदि सातें पाई, मुक्ती वधु जो परणाई।
प्रभु सारे कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ल सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु गणधर पूजा

चौपाई

'दत्तक' नाम आपने पाया, इस जग को सन्मार्ग दिखाया।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं दत्तक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तत्पर' ने तप किया निराला, कर्म निर्जरा करने वाला ।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं तत्पर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मैत्री' समता भाव के धारी, संयमधार बने अनगारी।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मैत्री गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अरिदमन' कहलाने वाले, गणी लोक में हुए निराले ।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरिदमन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गुरुवर आप 'प्रतिष्ट' कहाए, जग में बड़ी प्रतिष्ठा पाए ।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'सूमान' मान के त्यागी, जैन धर्म के शुभ अनुरागी ।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुमान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चन्द्रसेन' गणधर अनगारी, हुए लोक में मंगलकारी।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रसेन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सोपवास' गणधर कहलाए, अनशन करके कर्म नशाए।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सोपवास गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी कहे 'व्रतकेश' निराले, हुए क्लेश के हरने वाले ।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्रतकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'अरिष्ट' संयम के धारी, हुए आप जग जन उपकारी।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथगामी ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरिष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मुक्तमणि' मुक्ती के दाता, जन जन के कहलाए त्राता।।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तमणि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेष्ठ गणी 'व्यजेष्ट' कहाए, जिनने सारे कर्म नशाए ।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यजेष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सिद्धान' सिद्ध पद धारी, संयम धार हुए अविकारी ।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धान् अरिष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सुखेण' सुख देने वाले, सुगुण आपके रहे निराले ।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुखेण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'ध्यानात्म' आप हो ध्यानी, तव वाणी जग की कल्याणी।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं ध्यानात्म गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'अश्रौत' पूर्ण श्रुत धारी,आप कहाए धर्म प्रचारी
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।16।।

ॐ ह्रीं अर्ह अश्रौत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर आप 'निधाय' निराले, भव दुःखों को हरने वाले।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं निधाय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अचिते' गणधर मंगलकारी, जिनके चरणों ढोक हमारी।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचिते गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'चन्द्रवेदक' जी गाए, जो सबको सन्मार्ग दिखाए ।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रवेदक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'लघुभृत' गणधर लघुता धारे, गुरुवर हैं जो पूज्य हमारे ।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं लघुभृत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गोचर' तीन लोक के ज्ञाता, भवि जीवों के आप विधाता।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं गोचर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सुभूति' गणधर जग नामी, तुम हो प्रभु त्रिभुवन के स्वामी।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुभूति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दंगि' आप गणधर पद पाए, अतः आप जग पूज्य कहाए।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं दंगि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

हे 'अलक्ष' त्रिभुवन के स्वामी, तुम हो प्रभु मुक्ती पथगामी।
चन्द्रप्रभु के गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं अलक्ष गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(पाइता छन्द)

गणधर 'मागध' कहलाए, जिनकी महिमा जग गाए ।।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं मागध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गदभूषण' गणी निराले, दोषों को हरने वाले।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं गदभूषण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'काछ' नाम के धारी,गणराज बने अनगारी।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं काछ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पटकुल' गणधर कहलाए,जो जगत पूज्यता पाए ।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं पटकुल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'दुन्दु' गणी अविकारी, तुम हो गुरु धर्म प्रचारी।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुन्दु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'ववेशि' जगनामी, हैं मोक्ष महल के स्वामी ।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं ववेशि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'उदोत' शुभकारी, हैं जग जन के हितकारी।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते , जो जग में पूजे जाते ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं उदोत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कुसंभीन' गणी कहलाए, गुण का सौरव फैलाए।।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुसंभीन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तक्षत' गणराज हमारे, हम जिनके चरण पखारे।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं तक्षत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'कुवित' मनहारी, हैं पूर्ण रूप अविकारी ।।
श्री चन्द्रप्रभु को ध्याते, जो जग मे पूजे जाते ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुवित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'ममोथ' निराले, हैं मन को हरने वाले।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं ममोथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

गणधर 'मराल' कहलाए, जो श्रेष्ठ दिव्यता पाए ।।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं मराल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'उन्नत' गणधर स्वामी, तुम हो मुक्ती पथगामी।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं उन्नत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मणिभूषण' आप कहाए, संयम आभूषण पाए।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं मणिभूषण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'नाटक' सब कर्म नशाए, ना इस जग में रह पाए।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं नाटक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'कलिंगा' भाई, जिनकी फैली प्रभुताई ।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं कलिंगा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'प्रीतिंकर' गणधर स्वामी, इस जग में गाए नामी ।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रीतिंकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'ततंग' शुभ गाए, जिन पद हम शीश झुकाए ।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं ततंग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

उन्नति 'उनेन्द्र' जी कीन्हें, गणधर पदवी को लीन्हे।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं उन्नेद्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'भजोति' कहलाए, जो शिव पदवी को पाए ।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं भजोति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'जिनेन्द्र' शुभकारी, जो हुए श्रेष्ठ अनगारी।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते, जो जग में पूजे जाते ।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गणदेव' श्रमण पद धारे, जो आठों कर्म निवारे ।
श्री चन्द्र प्रभु को ध्याते जो, जग में पूजे जाते ।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणदेव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गगणेश' गणी कहलाए, जो केवल ज्ञान जगाए।
श्री चन्द्र प्रभु ध्याते जो जग में पूजे जाते ।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं गगणेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(सोरठा)

हे 'विलोक्य' गणराज, गणधर पदवी पाए हो ।
पूजे सकल समाज, चरण कमल शुभ आपके ।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं विलोक्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दसकुरु' पूरे काज, गणधर बनके कर रहे।
पूजे सकल समाज, चरण कमल शुभ आपके ।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं दसकुरु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर तव पद आज, सभी 'चैत्यफल' पूजते ।
पूजे सकल समाज, चरण कमल शुभ आपके ।। 50।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्यफल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उष्ट' करे जग नाज, दर्शन करके आपका ।
पूजे सकल समाज, चरण कमल शुभ आपके ।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं उष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'संश्रित' हे गणराज, तव पद पूजें सुरपति।
पूजे सकल समाज, चरण कमल शुभ आपके ।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं संश्रित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मद्रि' आपका नाम, गणधर पदवी पाए हो ।
करते चरण प्रणाम, चन्द्रप्रभु के गणपती।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं मद्रि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सूमानस' गणराज, चार ज्ञान धारी हुए ।
पूजे सकल समाज, चरण कमल शुभ आपके ।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूमानस गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहलाए गुरु 'स्याम', गणधर अनगारी बने।
करते चरण प्रणाम, चन्द्र प्रभु के गणपति ।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्याम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सुदृष्टि' सद्ज्ञान, गणधर पाया आपने ।
करते हैं गुणगान, चन्द्र प्रभु के गणपति ।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुदृष्टि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर कहे 'खिलेन्द्र' जिनकी महिमा है अगम।।
पूजा करें सुरेन्द्र , चन्द्रप्रभु के गणी की।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं खिलेन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हुए 'दृशीत' चन्द्रप्रभु के श्रेष्ठतम।
जीवन होय पुनीत, जिनका दर्शन कर विशद ।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं दृशीत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'संस्तेन्द्र' गणराज, चन्द्रप्रभु के गाए हैं ।।
पूजे सकल समाज, चरण कमल शुभ आपके ।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं संस्तेन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'धवलात्म' गणेश, आप धवलता पाए हो।
ज्ञानी आप विशेष, चन्द्रप्रभु के गणी तुम।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं धवलात्म गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी कहे 'प्रथमेश' तीन लोक में पूज्य तुम।
ज्ञानी आप विशेष, चन्दप्रभु के हैं गणी ।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रथमेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चिन्तागति' गणराज, चन्द्रप्रभु के जानिए।
पूजे सकल समाज, चरण कमल शुभ आपके ।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं चिंतागति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सगर' आपका नाम, गणधर पद धारी हुए।
करते चरण प्रणाम, गणाधीश जिन चन्द्र के ।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं सगर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'क्षेमंकर' गणराज, क्षेम करें त्रयलोक में।
पूजे सकल समाज, चरण कमल शुभ आपके ।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हुए 'पराय' जिनकी महिमा है अगम।।
दे उपदेश हिताय, भवि जीवों को लोक में ।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं पराय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'धृतराष्ट्र' गणेश, पूज रहे तव चरण रज।
साधु हुए विशेष, चन्द्र प्रभु जिनराज के ।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं धृतराष्ट्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर थे 'योगीन्द्र', चन्द्र प्रभु के सदगुणी ।
सुर नर इन्द्र मुनीन्द्र, जिन पद पूजे भाव से ।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगीन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'अगम्य' गणराज, मनःपर्यय ज्ञानी ऋषी ।
पूजे सकल समाज ,चरण कमल शुभ आपके ।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगम्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हे 'लोकेश', इन्द्रिय जेता तुम बने ।
साधु हुए विशेष, चन्द्र प्रभु जिनराज के ।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विमल' आपका नाम, विमल गुणी हो लोक में ।
करते चरण प्रणाम, चन्द्र प्रभु के गणपति ।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं विमल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(छन्द मोतियादाम)

कहाए 'मलका' जिन गणराज, पूजता जिनको सकल समाज।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं मलका गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहाए 'ज्ञात्त्वा' श्री गणेश, विशद ज्ञानी जो हुए विशेष।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञात्त्वा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आपका है 'लल्लाकित' नाम, बनाया है शिवपुर में धाम।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में हम झुका रहे माथ।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं लल्लाकित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'फुल्लत' जी हुए महान, करें सुर नर जिनका गुणगान।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं फुल्लत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आपका है 'चिन्तातम' नाम, ध्यान कर पाए शिवपुर धाम।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं चिन्तातम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'अरिदत्ता' हुए महान, किए हैं जो आतम का ध्यान।
हुए जो चन्दप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ ।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरिदत्ता गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वरोहन' कहलाए गणराज, विशद पाए जो शिव का ताज।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं वरोहन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आपका 'सम्पट' है शुभ नाम, गणी तव चरणों विशद प्रणाम।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।78।।
ॐ ह्रीं अर्हं सम्पट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहाए 'पूजनाथ' गणराज, बने जो तारण तरण जहाज।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।79।।
ॐ ह्रीं अर्हं पूजनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कसोद' हो गणधर आप महान, बने तुम जिन शासन की शान।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।80।।
ॐ ह्रीं अर्हं कसोद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बने हैं गणधर ऋषी 'खगेन्द्र', पूजते जिनपद इन्द्र नरेन्द्र ।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।81।।
ॐ ह्रीं अर्हं खगेन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहाए गणधर ऋषी 'मगेन्द्र', पूजते जिन पद इन्द्र खगेन्द्र।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।82।।
ॐ ह्रीं अर्हं मगेन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम गणधर पाए 'दिवनाथ', जोड़ते जिनको हम द्वय हाथ।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में हम झुका रहे माथ।।83।।
ॐ ह्रीं अर्हं दिवनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहाए 'उसम वीर्थ' गणराज, पाए जो शिवनगरी का राज।।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।84।।
ॐ ह्रीं अर्हं उसम वीर्थ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

विशद 'वेधन' गणधर का नाम, किए कर्मो का काम तमाम।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।85।।
ॐ ह्रीं अर्हं वेधन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'महामुनि' आप हुए अनगार, किए जो भारी धर्म प्रचार।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।86।।
ॐ ह्रीं अर्हं महामुनि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चन्द वेधक' कहलाए आप, करे हे गणी आपका जाप।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।87।।
ॐ ह्रीं अर्हं चन्दवेधक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी हैं 'लव्वकेश' अनगार, करें जो जीवों का उद्धार।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।88।।
ॐ ह्रीं अर्हं लव्वकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहाए 'विद्यावेधि' गणेश, धारे जो परम दिगम्बर भेष।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।89।।
ॐ ह्रीं अर्हं विद्यावेधि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पार्थिव' है गणधर का नाम, करें जिन पद में सभी प्रणाम।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।90।।
ॐ ह्रीं अर्हं पार्थिव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'अचिमनो' कहाते आप, मैटते हैं जग का संताप।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।91।।
ॐ ह्रीं अर्हं अचिमनो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विदाम्वर' है गणधर का नाम, हुए जग में रहके निष्काम।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में हम झुका रहे माथ।।92।।
ॐ ह्रीं अर्हं विदाम्वर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आप कवियों में श्रेष्ठ 'कविन्द्र', करें पद वन्दन इन्द्र नरेन्द्र।
हुए जो चन्द्रप्रभु के साथ, चरण में हम झुका रहे माथ।।93।।
ॐ ह्रीं अर्हं कविन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तिरानवे गणधर हुए महान, चन्द्रप्रभु जी के महिमावान।।
दिए जग जीवों को संदेश, बने शिव के राही अवशेष।।94।।
ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों श्री चन्द्रप्रभस्युदंतादि त्रिनवति गणधराय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
इतिश्री चन्द्रप्रभस्युदंतादि त्रिनवति गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा– **भक्ती से भवि जीव का, कटे कर्म जंजाल।**
मुक्ती पाने के लिए, गाते हैं जयमाल॥

(चाल टप्पा)

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, चन्द्र पुरी गाई।
वैजयन्त से चयकर माँ के, गर्भ आए भाई॥
चन्द्रप्रभ जिन मंगलदायी।
जिनकी अर्चा कर जीवों ने, मुक्ति श्री पाई॥1॥
गर्भागम पूरा होने पर, जन्म घड़ी आई।
न्हवन कराया शत् इन्द्रों ने, जग मंगलदायी॥
चन्द्रप्रभ जिन मंगलदायी।
जिनकी अर्चा कर जीवों ने, मुक्ति श्री पाई॥2॥
दायें पग में अर्धचन्द्र शुभ, लक्षण है भाई।
आयू लाख पूर्व दश की प्रभु, पाए सुखदायी॥3॥
चन्द्रप्रभ जिन मंगलदायी।
जिनकी अर्चा कर जीवों ने, मुक्ति श्री पाई॥3॥
धवल रंग था धनुष डेढ़ सौ, प्रभु की ऊँचाई।
तड़ित चमकता देख प्रभू ने, जिन दीक्षा पाई॥4॥
चन्द्रप्रभ जिन मंगलदायी।
जिनकी अर्चा कर जीवों ने, मुक्ति श्री पाई॥4॥
कर्म घातिया नाश प्रभू ने, ज्ञान निधी पाई।
धन कुबेर ने समवशरण की, रचना बनवाई॥
चन्द्रप्रभ जिन मंगलदायी।
जिनकी अर्चा कर जीवों ने, मुक्ति श्री पाई॥5॥

दोहा– **आत्म ध्यान करके प्रभू, कीन्हे कर्म विनाश।**
शिव नगरी में जा किया, सिद्ध शिला पर वास॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **भक्ती करते भक्तगण, होके भाव विभोर।**
शिव पद के राही बनें, बढ़े मोक्ष की ओर॥
॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री पुष्पदन्त पूजन-9

स्थापना (सोरठा)

पुष्पदन्त भगवान, शिवपथ के राही बने।
करते हम आह्वान, रत्नत्रय निधि के लिए॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(रेखता छन्द)

यह चरण चढ़ाने लिया नीर, अब रोग त्रय की मिटे पीर।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥1॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

फैले चन्दन की बहु सुवास, हो भवाताप का पूर्ण नाश।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥2॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत ले पूजा करें आज, अब मोक्ष महल का मिले ताज।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥3॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

यह पूजा करने लिए फूल, अब काम रोग का नशे मूल।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥4॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह चरू चढ़ाते हैं महान, अब क्षुधा रोग की होय हान।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥5॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।
हम करें दीप से जग प्रकाश, अब मोह महातम होय नाश।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥6॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।
शुभ खेने लाए यहाँ धूप, नश कर्म प्राप्त हो निज स्वरूप।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥7॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फल से हम पूजा करें देव, अब मोक्ष महाफल मिले एव।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥8॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
हम चढ़ा रहे यह श्रेष्ठ अर्घ्य, पद हम भी पाएँ शुभ अनर्घ्य।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥9॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(छन्द)

फागुन कृष्णा नौमी प्रधान, प्रभु स्वर्ग से चय आये महान।
तव देव किए मिल नमस्कार, जो रत्नवृष्टि कीन्हे अपार॥1॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सित मार्ग शीर्ष एकम विशेष, प्रभु पुष्पदन्त जन्मे जिनेश।
देवों ने कीन्हा नृत्य गान, शुभ न्हवन कराए हर्ष मान॥2॥
ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित मार्ग शीर्ष एकम जिनेश, दीक्षा धारे जिनवर विशेष।
मन में जगा जिनके विराग, फिर किए प्रभु जी राग त्याग।।3।।
ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल द्वितिया महान, प्रगटाएँ प्रभु कैवल्य ज्ञान।
शुभ समवशरण रचना अपार, सुर किए जहाँ पर भक्ति धार।।4।।
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन शुक्ला आठें ऋशीष, प्रभु सिद्ध शिला के हुए ईश।
जिनके गुण गाते हैं सुदेव, भक्ती रत रहते हैं सदैव।।5।।
ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत जी गणधर पूजा

(छन्द लोल तरोल)

'संघातिक' गणधर कहलाए, रत्नत्रय के स्वामी गाए ।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।1।।
ॐ ह्रीं अर्हं संघातिक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अस्थि' नाम के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथ गामी ।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।2।।
ॐ ह्रीं अर्हं अस्थि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'लिलय' हुए संयम के धारी, गणधर बने आप अनगारी।।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।3।।
ॐ ह्रीं अर्हं लिलय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'किरण' गणी कहलाए ज्ञानी, वीतरागता के विज्ञानी।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं किरण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम 'भास्कर' जिनने पाया, ज्ञान मन:पर्यय प्रगटाया।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं भास्कर गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर आप 'परायण' गाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं परायण गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विनयत' गणी विनय के धारी, जो हैं जग जन के हितकारी।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं विनयत गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पुष्पकेतु' गणधर जगनामी, कर्म नाशकर हुए अकामी।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पकेतु गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'साश्चर्य' गणधर पद पाए, देव कई आश्चर्य दिखाए।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं साश्चर्य गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्ञान गंध फैलाने वाले, 'गंधमाल' गणि हुए निराले।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं गंधमाल गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जी 'चिंतांग' कहाए, चिंताएं जो पूर्ण नशाए।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं चिंतांग गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चिंतामणि' चिन्तित फल दाता, गणधर जग के भाग्य विधाता।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं चिंतामणि गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'प्रकुट' गणी रत्नत्रय पाए, सम्यक् ज्ञान आप प्रगटाए ।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रकुट गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तुम 'शलोच' कहलाए ज्ञानी, आप हुए सम्यक श्रद्धानी।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं शलोच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'विदन्त' कर्मो के जेता, गणधर गाए कर्म विजेता।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं विदन्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'केवलेश' निज गुण प्रगटाए, गणधर बन शिवपद प्रगटाए।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गांगेय' निज ज्ञान जगाए, संयम धार गणधर पद पाए।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं गांगेय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'निर्मल' गणी कर्म मल नाशी, सिद्धशिला के शाश्वत वासी।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग में प्रभुताई।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गगनगंतु' हैं गगन बिहारी, गणधर जग मंगलकारी।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं गगनगंतु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हैं 'सुगन्तु' मनहारी, हुए जीव हिंसा परिहारी।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगन्तु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बने 'दिगांवर' गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिगांवर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'राजच' आप गणी पद पाए, दिव्य ज्ञान जग को सिखलाए।
पुष्पदंत जिनवर के भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं राजच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(नव तोमर छंद)

गुरु 'ललामकेत' कहलाए, गणधर पदवी को पाए।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं ललामकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गुरु ''ऋद्ध' केवली गाए, गणधर रत्नत्रय पाए।।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऋद्ध केवली गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'केदाच' गुरू अनगारी, हैं पावन संयम धारी।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं केदाच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गुरु 'गंगदत्त' जगनामी, जो बने मोक्ष पथगामी।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं गंगदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं 'पवन वेग' शिवकारी, गणधर जी मंगलकारी।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं पवनवेग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हैं 'केश' निराले, सद् संयम पाने वाले।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं केश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सूस्तंभ' गणी जग जेता, हैं जिनवर कर्म विजेता।
श्री पुष्पदंत के भाई, है गणधर ज्ञान प्रदायी।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूस्तंभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन गणधर 'जउद' कहाए, जो रत्नत्रय को पाए।
श्री पुष्पदंत के भाई, है गणधर ज्ञान प्रदायी।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं जउद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दातार' गणी को ध्यायें, अपने हम कर्म नशाएँ।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं दातार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मचक्रूदं' रवि सम गाए, गुण का सौरभ फैलाए।।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं मचक्रूदं गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'वंदित' गणधर स्वामी, तव चरणों विशद नमामी।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं वंदित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

'नयनाकित' गणधर प्यारे, हम हैं तव चरण सहारे।
श्री पुष्पदंत के भाई, है गणधर ज्ञान प्रदायी।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं नयनाकित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कोकद' की महिमा न्यारी, जो हैं जग जन उपकारी।
श्री पुष्पदंत के भाई, है गणधर ज्ञान प्रदायी।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं कोकद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कटदन्त' गणी कहलाए, शिवपुर में धाम बनाए।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं कटदन्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'जगीश' जयकारी, हैं आठों कर्म निवारी।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगीश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'जगोत' को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ।।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगोत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वन्दन' गणधर कहलाए, पद वन्दन को हम आए ।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं वन्दन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मधुकिट' हे गणधर स्वामी, हम बने मोक्ष पथ गामी।।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं मधुकिट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मधुकिट' गणेश कहाए, जो मोक्ष मार्ग दिखलाए।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं मधुकिट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'पंकज' मनहारी, जो संत बने अनगारी।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंकज गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चैतन्य 'चैत्य' चित् धारी, गणराज बने अविकारी।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उत्कीर्ण' गणी मन मोहें, जो निज आभा से सोहें ।
श्री पुष्पदंत के भाई, हैं गणधर ज्ञान प्रदायी।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्कीर्ण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(काव्य छन्द)

'मधूलिड' हुए गणेश, मधुर वचन के धारी ।
पुष्पदंत भगवान, के गणधर मनहारी।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं मधूलिड गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हुए 'विलोक्य', पावन ज्ञान जगाए।
पुष्पदंत भगवान, की महिमा जो गाए।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं विलोक्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहे 'निरोतम' आप, उत्तम से उत्तम रहे।
पुष्पदंत भगवान, के गुण की महिमा कहे।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरोतम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हे 'धृतकेश', धैर्य आप धारे प्रभो!।
पुष्पदंत भगवान का, संग पाये हो विभो! ।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं धृतकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहे 'प्रश्नृवल' आप, गणधर पदवी पाए।
पुष्पदंत भगवान के, गणेश कहलाए।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रश्नृवल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हे 'गृहदान' चार ज्ञान धारी बने ।
करके आतम ध्यान, कर्म शत्रु तुमने हने ।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं गृहदान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हे 'सहटात्' सहन शीलता पाए ।
पुष्पदंत की आप, दिव्य ध्वनि फैलाए ।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं सहटात् गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मारुढ़' हे गणराज, केवलज्ञान जगाए ।
पुष्पदंत भगवान के , गणधर कहलाए ।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं मारुढ़ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हे 'जगनेन्द्र' जगत पूज्यता पाए ।
पुष्पदंत भगवान, के गणेश कहलाए।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगनेन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दधिवर' हुए गणेश, जिनने संयम धारा ।
दधी में घी सम भेद, आतम का निस्तारा ।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं दधिवर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हुए महान, 'चेस्ट पंजर' कहलाए।
दो प्रभु सम्यक्ज्ञान, तव पद में हम आए ।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं चेस्ट पंजर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'स्ताचेस्ट', मन:पर्यय सद् ज्ञानी ।
किए आत्म का ध्यान, हैं जग के कल्याणी।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्ताचेस्ट गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भोजनाग' गणराज, गण के स्वामी गाए।
पुष्पदंत भगवान, के साथी कहलाए ।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं भोजनाग गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मानग' हे गणराज, आप मान के नाशी ।
पुष्पदंत भगवान, के गणधर संन्यासी।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं मानग गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'गुमान' गणराज, महिमा अपरम्पारी ।
पुष्पदंत के पास, पाया पद अनगारी।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुमान गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सुनामलांग' गणराज, गुण को महिमा पाए।
गुण जो तुमरे पास, और ना कहीं दिखाए।। 60।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुनामलांग गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'शुभ शूरान' गणेश, भवदधि पार लगाओ ।
पुष्पदंत के आप, सम्यक् ज्ञान जगाओ ।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभ शूरान गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पुष्पदंत भगवान, के गणि 'कोविद' गाए।।
दिए दिव्य उपदेश , भविजन के मन भाए ।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं कोविद गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पुष्पदंत के 'पुत्र', गणधर हैं अविकारी।
हुए जगत में आप, अतिशय मंगलकारी।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुत्र गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'कोपुत्र' गणेश, अक्षय आनन्द पाए ।
पुष्पदंत भगवान, के गणि द्वन्द मिटाए।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं कोपुत्र गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सुवर्ण' गणराज, हमको आन बचाओ ।
दिव्य देशना देय, भव से पार लगाओ ।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुवर्ण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हे 'उत्प्रक्ष', पुष्पदंत के भाई।
अखिल ज्ञान कर प्राप्त, पाई है प्रभुताई ।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्प्रक्ष गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(वेसरी छन्द)

'शांतकुम्भ' गणराज कहाए, मनःपर्यय शुभ ज्ञान जगाए ।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं शातकुम्भ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम 'अशोक' आपका गाया, गणधर पदवी को तुम पाया ।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशोक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सुघट' आपने कर्म घटाए, निज आतम का ध्यान लगाए।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुघट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हुए 'सचेतन' भाई, शुद्ध चेतन जो प्रगटाई ।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं सचेतन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पवनोदय' गणधर कहलाए, सुगुण आपने अतिशय पाए।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं पवनोदय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'अत्यून' गणी अविकारी, तुम हो पावन संयमधारी।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं अत्यून गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पुष्प' नाम के गणधर ज्ञानी, वीतरागता के विज्ञानी ।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्प गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'पुण्यजीवन' अनगारी, महिमा है इस जग से न्यारी ।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी ।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यजीवन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उर्द्धलोच' हे गणी निराले, सबके संकट हरने वाले ।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं उर्द्धलोच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गुण गौरव' अतिशय गुणधारी, तव महिमा इस जग से न्यारी।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुण गौरव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'फलोचंत' गणधर अनगारी, दुख हर हो तुम हे त्रिपुरारी ।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं फलोचंत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाथ आप 'फलउचत' कहाए, अर्चाकर फल प्राणी पाए ।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं फलउचत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'परमेश्वर' हे ईश निराले, जग का संकट हरने वाले ।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'जिनदत्त' आप जगत्राता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गंध कुटी में शोभा पाते , गुरू 'सुगंध' गंध फैलाते।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगंध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अक्षत' हे अक्षय गुणधारी, तव पद झुकती जगती सारी।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पुष्पनाभ' हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी ।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्प नाभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उमास्वामी' हो जग के जेता, नाथ आप हो कर्म विजेता ।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी ।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं उमास्वामी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दिपोदीप्ति' जग में फैलाते, ज्ञान आपसे प्राणी पाते।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी ।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिपोदीप्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'शितजय' हे संयम के धारी, नाथ आप हो मंगलकारी।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी ।।86।।

ॐ ह्रीं अर्हं शितजय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'निविडांग' गणी के हम गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हं निविडांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'मघवान' गणी हो ज्ञाता, नाथ आप इस जग के त्राता।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हं मघवान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर पुष्पदंत के भाई, रहे अठासी मंगलदायी।
पुष्पदंत के गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी ।।89।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों श्री पुष्पदंतनाथस्य संघातिकादि अष्टाशीति गणधराय नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।
इति श्री पुष्पदंतनाथस्य संघातिकादि अष्टाशीति गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **मंगलमय भगवान हैं, मंगल जिनका नाम।**
मंगलमय जयमाल गा, करते चरण प्रणाम।।

(छन्द वेसरी)

पुष्पदन्त तीर्थंकर गाए, प्राणत स्वर्ग से चयकर आये।
पितु सुग्रीव मात जयरामा, काकन्दी नगरी का नामा॥1॥
मगर चिन्ह दाँये पद पाए, इक्ष्वाकु कुल नन्दन गाए।
धनुष एक सौ ऊँचे जानो, धवल रंग तन का शुभ मानो॥2॥
दो लख पूर्व की आयु पाये, निष्कंटक प्रभु राज्य चलाए।
उल्का पात देखकर स्वामी, बने मोक्ष पथ के पथगामी॥3॥
दीक्षा सहस्र भूप संग पाए, दीक्षा वृक्ष पुष्प कहलाए।
प्रभु जब केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए॥4॥
ब्रह्म आपका यक्ष कहाए, काली आप यक्षिणी पाए।
गणधर आप अठासी पाए, गणधर प्रमुख नाग कहलाए॥5॥
सर्व ऋषी दो लाख बताए, गुण छियालिस प्रभु जी के गाए।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, "विशद" हुए मुक्ती पथगामी॥6॥

दोहा– **शुक्रारिष्ट नाशक प्रभू, पुष्पदन्त भगवान।**
जीवन मंगलमय बने, करते तव गुण गान॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **करें चरण की वन्दना, जग के सारे जीव।**
शिव पद में कारण बने, पावें पुण्य अतीव।

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री शीतलनाथ पूजन-10

स्थापना (सोरठा)

पाया शिव सोपान, शीतलनाथ जिनेन्द्र ने।
निज उर में आह्वान, करते हैं हम भाव से॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द मोतिया दाम)

चढ़ाते प्रभु यह निर्मल नीर, मिले भव सागर का अब तीर।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिसाया चन्दन यह गोशीर, मिटे अब मेरी भव की पीर।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत यहाँ महान, मिले अक्षय पद मुझे प्रधान।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प यह सुरभित लिए विशेष, चढ़ाते तव पद यहाँ जिनेश।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

बनाए चरु हमने रसदार, चाहते हम आतम उद्धार।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जलाते हम यह दीप प्रजाल, ज्ञान अब जागे मेरा त्रिकाल।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

जलाएँ अग्नी में यह धूप, प्रकट हो मेरा निज स्वरूप।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते ताजे फल रसदार, प्राप्त हो हमको पद अनगार।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।8।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।
चढ़ाते अर्घ्य यहाँ पर आज, मिले शिवपद का अब स्वराज।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।9।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

शुभ चैत कृष्ण आठें महान, को देव किए मिल यशोगान।
प्रभु शीतल जिनवर गर्भधार, महिमा दिखलाए सुर अपार।।1।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शुभ माघ कृष्ण द्वादशी सुजान, जन्मे शीतल जिनवर महान।
शत् इन्द्र किए आके प्रणाम, जिन शीतल प्रभु का दिए नाम।।2।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु माघ कृष्ण द्वादशी वार, दीक्षावन में जा लिए धार।
जिन सर्व परिग्रह से विहीन, निज आत्मध्यान में हुए लीन।।3।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शुभ पौष कृष्ण चौदश महान, प्रकटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान।
तब समवशरण रचना अनूप, कई देव किए पद झुके भूप।।4।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन शुक्ला आठें जिनेश, मुक्ती पद पाए हैं विशेष।
कर्मों को करके आप नाश, प्रभु सिद्धशिला पर किए वास॥5॥
ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ल अष्टमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ गणधर पूजा

(पद्धरि छन्द)

हे गणधर तुम 'नरसिंह' देव, सुर नर तव पद में करें सेव।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।1।।
ॐ ह्रीं अर्हं नरसिंह गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'श्रुतकेत' गणधर महान, तुम हो जग ऋषियों में प्रधान।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।2।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणि आप नाम पाए 'अमर्घ', तव चरण चढ़ाए श्रेष्ठ अर्घ्य
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।3।।
ॐ ह्रीं अर्हं अमर्घ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे गणाधीश 'स्पृष्टि' नाम, जिनपद में करता जग प्रणाम।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्पृष्टि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गुरू 'रूपकेतु' हे गणाधीश, तुम शिव वनिता के बने ईश।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं रूपकेतु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है 'चंचलांग' गणधर विशेष, जो कर्म नाश कीन्हें अशेष।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं चंचलांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है नाम 'सर्वगुण' जग प्रधान, गणि श्रेष्ठ गुणों की रहे खान।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।7।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगुण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जी पाए 'वत्स' नाम, जो पाए अनुपम मोक्ष धाम ।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।8।।
ॐ ह्रीं अर्हं वत्स गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'किरण' हैं ज्ञानवान, जो निज आतम का किए ध्यान।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।9।।
ॐ ह्रीं अर्हं किरण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शुभ गणाधीश हैं 'ब्रह्मराज', जो हैं जग में तारण जहाज ।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।10।।
ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मराज गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं 'निश्चल' गणधर निर्विकार, जो भव सिन्धू से करें पार ।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।11।।
ॐ ह्रीं अर्हं निश्चल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'शुद्धमति' हैं महान, जो देते जग को ज्ञानदान।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।12।।
ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धमति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे गणी 'स्थिमंधर' अनूप, तव चरण झुकावें माथ भूप।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।13।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्थिमंधर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'कदाच' हैं भाग्यवान, जो मनःपर्यय पाये सुज्ञान ।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।14।।
ॐ ह्रीं अर्हं कदाच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'अषढ़' गुरू आनन्दकार, तुम करने वाले विभव पार ।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।15।।
ॐ ह्रीं अर्हं अषढ़ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गुरुवर 'गुणज्ञ' गुण के निधान, जो देने वाले विशद ज्ञान।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।16।।
ॐ ह्रीं अर्हं गुणज्ञ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर कहलाए 'द्वूत्यांग', सब चरण झुकाएँ उत्तमांग।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएं विशद माथ।।17।।
ॐ ह्रीं अर्हं द्वूत्यांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहलाए 'शीतलो' गणाधीश, जिन सेवा करते महाधीश।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।18।।
ॐ ह्रीं अर्हं शीतलो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनियों के स्वामी हैं 'मुनीश', जो मुक्तिवधू के कहे ईश ।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।19।।
ॐ ह्रीं अर्हं मुनीश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'सुन्दर' सौन्दर्यवान, जो जग जीवों में हैं प्रधान।
तुम शीतल जिन के रहे साथ, तव चरण झुकाएँ विशद माथ।।20।।
ॐ ह्रीं अर्हं सुन्दर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(दोहा)

मनःपर्यय ज्ञानी हुए, 'पुंगव' गणी महान ।
शीतल नाथ जिनेन्द्र के, साथ करें गुणगान ।।21।।
ॐ ह्रीं अर्हं पुंगव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कोदारक' गणधर हुए, शीतल जिनके साथ।
अर्चा करते आज हम, झुका चरण में माथ ।।22।।
ॐ ह्रीं अर्हं कोदारक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'भोगार्थ' हैं, शीतल जिनके खास।
जिनकी अर्चा से विशद, पूरी होती आस ।।23।।
ॐ ह्रीं अर्हं भोगार्थ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उत्पल' शीतल नाथ के, गणधर हुए महान ।
सुर नर किन्नर देव सब, करें श्रेष्ठ गुणगान ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्पल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गाम्भीरो' गणधर गुरू, शीतल जिनके साथ ।
लोक हितैषी जो हुए, झुका रहे हम माथ ।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं गाम्भीरो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'सुपार्णव' ने किया, इस जग का कल्याण ।
शीतल जिनवर के बने, गणधर श्रेष्ठ महान ।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुपार्णव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'माद्यायन' गणधर हुए, धारा दिगम्बर भेष ।
शीतल नाथ जिनेन्द्र के, गणधर पूज्य विशेष ।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं माद्यायन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पुष्ट' ज्ञान धारी हुए, ध्याये आत्म स्वरूप ।
गणधर शीतलनाथ के, पूजें सुर नर भूप ।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शीतल नाथ जिनेन्द्र के, गणी 'पथानन' नाम ।
जिनके चरणों में विशद, बारम्बार प्रणाम ।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं पथानन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अतरगति' गणधर हुए, गण के स्वामी आप ।
शीतल नाथ जिनेन्द्र पद, काटे अपने पाप।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतरगति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'रुह्य' गणधर पद में सभी, करते आतम ध्यान ।
शीतल नाथ जिनेन्द्र के, गणधर बने महान ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं रुह्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'श्रीशांती' गणराज हैं, शीतलेश के खास ।
शिवपद के राही बने, रखना यह विश्वास ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दीक्षित' दीक्षा धरकर, हुए संत अनगार।
श्री शीतल जिनके बने, गणधर मंगलकार ।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं दीक्षित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चार ज्ञान धारी 'सनत', शीतल जिन के संत ।
गणधर पद पाके बने, मुक्तिवधू के कंत।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं सनत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सुपुष्ट' गणधर मेरा, करो शीघ्र कल्याण ।
जिन शीतल के साथ तव, करते हम गुणगान ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुपुष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कनकोदर' गणराज की, महिमा का ना पार ।
शीतल नाथ जिनेश के, गणधर हैं अनगार ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं कनकोदर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्थविष्ट' गणधर बने, जिन शीतल के खास ।
जिनकी अर्चा से सदा, पूरी होती आस ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'नितब' आपने पाप का, कीन्हा पूर्ण विनाश ।
गणधर शीतल नाथ के, पाए शिवपुर वास ।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं नितब गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

गणी 'नरेश्वर' लोक में, विशद जगाए ज्ञान ।।
शीतल जिनके साथ में, पाए मोक्ष निधान ।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं नरेश्वर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'श्रद्धादि' का, करते जो गुणगान ।
शीतल सम जिन लोक में, हो उनका कल्याण ।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रद्धादि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(अर्ध चामर छन्द)

गणाधीश 'उच्यूत', उच्च पद पाए हैं ।
शीतलेश के गणेश, आप जो कहाए हैं ।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं उच्यूत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चल अचल द्रव्य का, ज्ञान जो कराए हैं।
शीतलेश के गणेश, 'चलाचल' कहाए हैं।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं चलाचल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'नृपाल' आपने, चार ज्ञान पाए हैं ।
शीतलेश के गणेश, आप जो कहाए हैं।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं नृपाल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'स्थिमजस' आपका नाम है ।
तव चरण में सुरेश, करते प्रणाम हैं।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थिमजस गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'चम्पायन', आप कहलाए हैं।
शीतलेश के गणेश, आप जो कहाए हैं ।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं चम्पायन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चम्पकेत' गणाधीश, महिमा दिखलाए हैं।
शीतलेश के गणेश, आप जो कहाए हैं ।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं चंपकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'जिनष्ट' आपकी, अर्चना को आए हैं।
शीतलेश के गणेश, आप जो कहाए हैं ।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सगुप्ति' आप त्रय, गुप्तियों को पाए हैं।
शीतलेश के गणेश, आप जो कहाए हैं।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं सगुप्ति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'परिषत्' पूज्यता को पाए हैं।
शीतलेश के गणेश, आप जो कहाए हैं।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं परिषत् गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे गणेश 'उत्कंठ', दिव्यता को पाए हैं।
शीतलेश के गणेश, आप जो कहाए हैं।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्कंठ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'प्रभ' श्रेष्ठ, प्रभुता को पाए हैं।
शीतलेश के गणेश, आप जो कहाए हैं ।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वीतरागी गणधर का, 'कंकोदर' नाम है ।
शीतलेश के गणेश, के सुपद प्रणाम है ।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं कंकोदर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शीतलेश के गणेश 'सुकमला' गाए हैं ।
चरणों में जिनके हम, अर्चना को आए हैं।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुकमला गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'पंकेश' जी, श्रेष्ठ नाम पाए हैं।
चरणों में जिनके हम, अर्चना को आए हैं।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जी उग्रतव, 'उग्गतप' पाए हैं ।
चरणों में जिनके हम, अर्चना को आए हैं।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं उग्गतप गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अंग-अंग में 'वरांग', ध्यान को बसाए हैं।
चरणों में जिनके हम, अर्चना को आए हैं।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं वरांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रत्नत्रय 'केवलतो', गणधर जी पाए हैं ।
चरणों में जिनके हम, अर्चना को आए हैं।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलतो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शीतलेश के गणेश, 'सुकोमल' कहाए हैं ।
चरणों में जिनके हम, अर्चना को आए हैं।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुकोमल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'नभचारी' गणधर जी, 'नभ' सुनाम पाए हैं।
चरणों में जिनके हम, अर्चना को आए हैं।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं नभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।59।।

'वरदत्त' गणधर जी, संयम शुभ पाए हैं।
चरणों में जिनके हम, अर्चना को आए हैं।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं वरदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चाल छन्द)

गणराज 'धनेश्वर' गाए, मृग तृष्णा पूर्ण नशाए ।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं धनेश्वर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'मरेचि' कहाए, आशा न कोई लगाए ।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं मरेचि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं 'अरजित' गणधर स्वामी, जो बने मोक्ष पथ गामी ।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरजित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'कलोच' कहलाए, विषयों में नहीं रमाए ।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं कलोच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मधुकेट' गणी शुभकारी, हैं जन जन के हितकारी।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं मधुकेट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'सुकेत' शिवकारी, हैं अतिशय महिमा धारी।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कांतिमणि' गणधर सोहें, भव्यों के मन को मोहे।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं कांतिमणि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उष्णोदय' आप कहाते, गणधर संज्ञा को पाते ।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं उष्णोदय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उष्णांग' गणी हितकारी, हैं वीतराग अनगारी ।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं उष्णांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मधुकिटभ' आप कहलाए, मन में वैराग्य जगाए ।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं मधुकिटभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'समलांग' नाम के धारी, हैं गणधर अतिशयकारी।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं समलांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'इकलांग' आप कहलाए, एकान्त में ध्यान लगाए ।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं इकलांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं 'भ्रकुट' गणेश हमारे, हम पाएँ चरण सहारे।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं भ्रकुट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कुरवस' गणराज निराले, सब संकट हरने वाले।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुरवस गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'मघव' परिग्रह त्यागी, हैं शिवपथ के अनुरागी ।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं मघव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मधकेश' गणी सदज्ञानी, हे वीतराग विज्ञानी।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं मधकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उर्द्धकेश' ऊर्धता पाए, गणि शिवपुर धाम बनाए।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं उर्द्धकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'षड्केत' द्रव्य के ज्ञाता, गणधर हैं जग के त्राता।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं षड्केत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'श्रेणिक' हे गणधर स्वामी, तव चरणों विशद नमामी।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेणिक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'मयूर' कहलाए, मन में वैराग्य जगाए।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं मयूर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दीपायन' दीप निराले, गणधर तम हरने वाले।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं दीपायन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर इक्यासी जानो, गण के अधिपति हैं मानो।
श्री शीतल जिनके भाई, हम पूज रहे सुखदायी ।।82।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों श्री शीतलनाथस्य नरसिंहादि एकाशीति गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

इति श्री शीतलनाथस्य नरसिंहादि एकाशीति गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **शीतलनाथ जिनेन्द्र का, जपें निरन्तर नाम।**
जयमाला गाएँ विशद, करके चरण प्रणाम।।

(मोतिया दाम)

स्वर्ग आरण से चयकर आय, नगर महिलपुर में सुखदाय।
गर्भ पाए शीतल जिन राय, इन्द्र रत्नों की वृष्टि कराय।।1।।
पिता दृढ़रथ हैं जिनके भ्रात, प्रभू की रही सुनन्दा मात।
जन्म जब पाए जिन तीर्थेश, धरा पर खुशियाँ हुई विशेष।।2।।
मनाए जन्मोत्सव तब देव, करें जिनवर की जो नित सेव।
कल्पतरु लक्षण रहा महान, आयु इक लाख पूर्व की मान।।3।।
प्राप्त करके पद युवराज, चलाया कई वर्षों तक राज।
देखकर हिम का प्रभू विनाश, किए निज आतम का आभास।।4।।
स्वयंभू जिन ने दीक्षाधार, किया कर्मों को प्रभु ने क्षार।
जगाया अनुपम केवल ज्ञान, प्रभू ने किया जगत कल्याण।।5।।
प्रथम गणधर का कुन्थू नाम, सतासी गणधर करें प्रणाम।
कूट विद्युतवर से जिनराज, प्राप्त कीन्हे शिवपुर का ताज।।6।।

दोहा– **कर्म शृंखला नाशकर, हुए मोक्ष के ईश।**
जिनके चरणों में 'विशद', झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **जैनागम जिन धर्म के, विशद आप आधार।**
भक्त चरण वन्दन करें, कर दो भव से पार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री श्रेयांसनाथ पूजन-11

स्थापना

सोरठा– **श्रेय प्रदाता आप, श्री श्रेयान्स जिन गाए हैं।**
करते हैं हम जाप, आह्वानन् कर निज हृदय॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पद्धरि छन्द)

हम चढ़ा रहे यह शुद्ध नीर, जन्मादि रोग की मिटे पीर।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन केसर को लिया साथ, भव ताप नाश हो मेरा नाथ।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥2॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत यह लाए धवल आज, अक्षय पद का अब मिले ताज।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥3॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्पों के अर्पित करें थाल, हम झुका रहे तव चरण भाल।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥4॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लिए हाथ, अब क्षुधा से मुक्ती मिले नाथ।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥5॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम जला रहे हैं यहाँ दीप, अब पहुँचे शिव पद के समीप।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥6॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अब नाश होय प्रभु मोह पास, शिवपुर में मेरा होय वास।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥7॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल चढ़ा रहे हम यहाँ आन, अब मिले शीघ्र ही मोक्ष धाम।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥8॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाते हम अनूप, प्रगटाएँ अपना निज स्वरूप
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम॥9॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

सोरठा

पाए गर्भ भगवान्, ज्येष्ठ कृष्ण छठवी दिना।
किए देव गुणगान, उत्सव कीन्हे गर्भ का॥1॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ जन्म कल्याण, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।
इन्द्र स्वर्ग से आन, न्हवन कराए मेरु पे॥2॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा धारे नाथ, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।
चरण झुकाएँ माथ, सुर नर मुनि के इन्द्र सब॥3॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए केवल ज्ञान, माघ कृष्ण की अमावस।
किए जगत कल्याण, दिव्य देशना आप दे।।4।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष गये भगवान, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा।
पाए मोक्ष कल्याण, तीर्थराज सम्मेद से।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांसनाथ गणधर पूजा

(सोरठा छन्द)

'कौतभ' गणधर आप, दिव्य ज्ञान धारी हुए ।
नाशक सारे पाप, गणधर जिन श्रेयांस के ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं कौतभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हे 'कायान', काय क्लेश तप धारते ।
करते हम गुणगान, गणधर जिन श्रेयांस के ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं कायान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'कल्प कल्याण', श्री श्रेयांस जिनके हुए ।
किए आत्म उत्थान, जग जीवों का जिन गणी ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्पकल्याण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पाए 'सुदर्शन' नाम, गणधर जिन श्रेयांस के।
बारम्बार प्रणाम, करते हैं हम भाव से।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुदर्शन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'खडानन' आप, शिव पथ के राही बने।
पूजा करते आज, विशद भाव से हम यहाँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं खडानन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गुरुवर गणी 'भूयंग', जिन श्रेयांस के आप हैं ।
मन में उठी उमंग, गुण गाके गणराज के ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूयंग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहा 'सिंहरथ' नाम, जिन श्रेयांस के गणी का ।
चरण झुकाते माथ, विशद भाव से आज हम।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहरथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी हुए 'वंकचूल', जिन श्रेयांस के श्रेष्ठतम।
हुए आप अनूकूल, रत्नत्रय धारी हुए ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं वंकचूल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम आपका 'नील', गणधर पद पाए गुरू ।
धारण करते शील, शिव पद के राही बने ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं नील गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी हुए 'महानील', विशद ज्ञान धारी हुए ।
पाए धर्म शलील, जिन श्रेयांस के साथ में ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं महानील गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हुए 'सर्वगुण' वान, गणधर जिन श्रेयांस के।
किए जगत कल्याण, जिन पद में मम् नमन है।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगुण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहलाए 'छापोद', गणधर पद धारी हुए।
करते सदा विनोद, आत्म गुणों में लीन हो ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं छापोद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'मालोक', श्री श्रेयांस जिन के हुए ।
देते पद में ढोक, सुर नर मुनिवर भाव से ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं मालोक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पूरच' पाए नाम, गणधर जिन श्रेयांस के।
चरणों विशद प्रणाम, करने को हम आए हैं।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूरच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'निष्काल', जिन श्रेयांस के जानिए।
वन्दन करें त्रिकाल, जिनके चरणों में विशद ।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्काल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'कलिन्द्र' गणराज, पूजा करते आपकी।
पूजे सकल समाज, जिन श्रेयांस के गणी को ।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं कलिन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर विदुर महान, तीन लोक में पूज्य हैं।
करते हम गुणगान, जिन श्रेयांस के गणी का।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं विदुर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हुए शलाच, जिन श्रेयांस भगवान के ।
नाशे कर्म पिशाच, शिव पद के राही बने ।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं शलाच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हुए महान, नाम 'चन्द्रगति' पाए हैं।
वीतराग विज्ञान, पाए जिन श्रेयांस के ।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रगति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कुण्डल' पाए नाम, गणधर जिन श्रेयांस के।
सिद्ध शिला पर धाम, कर्म नाश कर पाए हैं।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुण्डल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कुण्डकेत' गण नाथ, श्री श्रेयांस जिन के हुए ।
चरण झुकाते माथ, गुण पाए गणराज तुम।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुण्डकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गुण 'अनन्त' के कोष, गणधर जिन श्रेयांस के।
कहे पूर्ण निर्दोष, रत्नत्रय धारी बने ।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हुए 'अनागत' आप, गणधर जिन श्रेयांस के।
नाश किए सब पाप, मोक्ष महा पद पाए हैं।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनागत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हुए विशेष, नाम 'अनोपम' पाए हैं।
नाशे कर्म अशेष, गणधर जिन श्रेयांस के ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनोपम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पूरणभद्र' गणेश, श्री श्रेयांस जिन के हुए ।
संयम पाए विशेष, ध्यान किए निज आत्म का ।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूरणभद्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हे 'दिग्पाल', कृपा कीजिए भक्त पर ।
वन्दन करें त्रिकाल, गणी श्रेयांस जिनके चरण ।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिग्पाल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(सुखमा छन्द)

'विस्मोरजत' गणी कहलाए, निज का सम्यक ज्ञान जगाए ।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं विस्मोरजत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'कुभूमि' संयम के धारी, गुण पाए तुम अतिशयकारी।।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी ।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुभूमि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम 'खलोद' आपका गाया, ज्ञान मनःपर्यय तुम पाया।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं खलोद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री 'पुलिंग' गणधर पद पाए, ज्ञानी आप लोक में गाए ।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुलिंग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'अर्हनाथ' जग त्राता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर श्री 'कृष्लोत' निराले, संकट सबके हरने वाले।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृष्लोत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पिपासात्' गणधर हे स्वामी, हुए आप मुक्ती पथ गामी।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं पिपासात् गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'अंगार' कहाए, निज पर का संताप नशाए।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं अंगार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'रक्तोदय' गणधर पद पाए, निज का निज में ध्यान लगाए।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं रक्तोदय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अत्मिक' हे गणधर उपकारी, गुण पाए तुम विस्मयकारी।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं अत्मिक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गुरु 'संकल्प' आप कहलाए, शुभ गणधर पदवी को पाए।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं संकल्प गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पुष्पकेत' है नाम निराला, गणधर का अघ हरने वाला।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'परप्रेम' आपको ध्याएँ, गणी आपके हम गुण गाएँ।।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं परप्रेम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'निश्चितान' गणधर जग नामी, जिन चरणों में विशद नमामी।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं निश्चितान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चंचकंत' चंचलता त्यागी, गणधर हुए आत्मानुरागी।।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं चंचकंत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'विशरीर' गणी को ध्याते, वे अपना सौभाग्य जगाते।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं विशरीर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सुखकर' हे गणराज हमारे, रहें आपके चरण सहारे।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुखकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'नभकेत' कहाए, धर्म ध्वज जग में फहराए।।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं नभकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'कालिंग' निराले, जग का कालुष हरने वाले।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं कालिंग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री 'उपावास' का वास जहाँ है, होती पूरी आस वहाँ है।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं उपावास गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'कदंबकते' हैं ज्ञानी, जो हैं वीतराग विज्ञानी।।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी ।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं कदंबकते गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'महर्द्धिक' ऋद्धीधारी, संयम धार बने अविकारी।।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं महर्द्धिक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'महामंगल' कहलाए, सर्व अमंगल आप नशाए।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामंगल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'रंगनाथ' को ध्याएँ, राग रंग से मुक्ती पाए।।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं रंगनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'साकि' नाम गणधर का भाई, भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं साकि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कोटपाल' गणधर अविकारी, रत्नत्रय पाए त्रिपुरारी।
जिन श्रेयांस के मंगलकारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं कोटपाल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(सार छन्द)

हे 'विलास' गणधर अविकारी, सब विकार के नाशी।
जिन श्रेयांस के गणधर पावन, केवल ज्ञान प्रकाशी।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं विलास गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणनामक 'सुखदास' कहाए, सुखानन्त के वासी।
जिन श्रेयांस के गणधर पावन, केवल ज्ञान प्रकाशी।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुखदास गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'हुच्छगई' गणधर कहलाए, गुणानन्त की राशी ।
जिन श्रेयांस के गणधर पावन, केवल ज्ञान प्रकाशी।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं हुच्छगई गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हुए 'विषासन' भाई, जैन धर्म विश्वासी।
जिन श्रेयांस के गणधर पावन, केवल ज्ञान प्रकाशी।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं विषासन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वीतशोक' गणधर की महिमा, जग में फैली खासी।
जिन श्रेयांस के गणधर पावन, केवलज्ञान प्रकाशी।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीतशोक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'क्षेमकर' की हे भाई, दुनियाँ बनी है दासी।
जिन श्रेयांस के गणधर पावन, केवल ज्ञान प्रकाशी।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'लंगि' कहाए पावन, निज के सुगुण विकासी।।
जिन श्रेयांस के गणधर पावन, केवलज्ञान प्रकाशी।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं लंगि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'इन्द्रकेत' गणि के दर्शन की, दुनियाँ रही पिपासी।
जिन श्रेयांस के गणधर पावन, केवलज्ञान प्रकाशी।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं इन्द्रकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भोगों के प्रति 'नल' गणधर के, मन में आई उदासी।
जिन श्रेयांस के गणधर पावन, केवलज्ञान प्रकाशी।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं नल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री 'नललोच' हुए जगती पर, गणधर पद के धारी।
गणनायक हैं जिन श्रेयांस के, पावन मंगलकारी ।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं नललोच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सुभास्कर' गणधर स्वामी, रत्नत्रय के धारी ।
गणनायक हैं जिन श्रेयांस के, पावन मंगलकारी ।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुभास्कर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।63।।

'अवनिपाल' गणधर कहलाए, जन जन के उपकारी।
गणनायक हैं जिन श्रेयांस के, पावन मंगलकारी ।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं अवनिपाल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्थिराच' गणधर के आगे, झुकती दुनियाँ सारी ।
गणनायक हैं जिन श्रेयांस के, पावन मंगलकारी ।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थिराच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'स्थिर मंदर' गाए, संयम धर अविकारी।
गणनायक हैं जिन श्रेयांस के, पावन मंगलकारी ।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थिर मंदर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भर' गणधर रत्नत्रय पाए, जग में विस्मयकारी।
गणनायक हैं जिन श्रेयांस के, पावन मंगलकारी ।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं भर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विषमंधरु' विषयों के त्यागी, गणधर हैं अनगारी।
गणनायक हैं जिन श्रेयांस के, पावन मंगलकारी ।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं विषमंधरु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दारुद' नाम आपने पाया, गणधर हे शिवकारी।
गणनायक हैं जिन श्रेयांस के, पावन मंगलकारी ।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं दारुद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'सूचिपक' आप कहाए, अनुपम अतिशय धारी।
गणनायक हैं जिन श्रेयांस के, पावन मंगलकारी ।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूचिपक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गधणर हुए 'पचायन' भाई, वीतराग विज्ञानी।
गणाधीश हैं जिन श्रेयांस के, निज आतम के ध्यानी ।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं पचायन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जी 'मिथुलूट' कहाए, ज्ञान सुधामृत दानी।।
गणाधीश हैं जिन श्रेयांस के, निज आतम ध्यानी ।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं मिथुलूट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'हितकर' गणि हित करने वाली,गाए सम्यक् वाणी।
गणाधीश हैं जिन श्रेयांस के, निज आतम के ध्यानी ।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं हितकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहे 'हिमाचल' गणधर स्वामी, जिनकी हितकर वाणी।।
गणाधीश हैं जिन श्रेयांस के, निज आतम के ध्यानी ।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं हिमाचल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जी 'हिमलोच' कहाए, पाए मुक्ती रानी।
गणाधीश हैं जिन श्रेयांस के, निज आतम ध्यानी ।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं हिमलोच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

'केशकध' गणधर कहलाए, किए कर्म की हानी।
गणाधीश हैं जिन श्रेयांस के, निज आतम के ध्यानी ।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं केशकध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणि 'स्त्याग' त्यागी अनगारी, निज आतम के ध्यानी।।
जिन श्रेयांस के गणधर पावन, केवल ज्ञान प्रकाशी।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्त्याग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर कहे हैं सत्तर पावन, जग जन के कल्याणी ।
गणाधीश हैं जिन श्रेयांस के, निज आतम के ध्यानी ।।78।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों श्री श्रेयांसनाथस्य सुधर्मादि सप्तसप्तति गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।।

इति श्री श्रेयांसनाथस्य सुधर्मादि सप्तसप्तति गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **श्रेय प्रदायक श्रेयजिन, हुए जो मंगलकार।**
जयमाला गाते चरण, भविजन बारम्बार।।

(चाल छन्द)

श्रेयांस नाथ गुणधारी, इसजग में मंगलकारी।
है सिंहपुरी शुभकारी, जन्मे श्रेयांस त्रिपुरारी।।1।।
नृप विष्णूराज कहाए, माँ वेणू देवी पाए।
यह अन्तिम गर्भ कहाए, प्रभु जन्म कल्याणक पाए।।2।।
किए रत्नवृष्टी शुभकारी, सुर किए प्रशंसा भारी।
गेण्डा लक्षण शुभ पाए, तन अस्सी धनुष का पाए।।3।।
चौरासी वर्ष की स्वामी, आयू पाए शिवगामी।
लक्ष्मी बसन्त विनशाई, लख मुनिवर दीक्षा पाई।।4।।
तब देव पालकी लाए, प्रभु को वन में पहुँचाए।
प्रभु आतम ध्यान लगाए, फिर केवल ज्ञान जगाए।।5।।

सुर समवशरण बनवाए, सात योजन का जो गाए।
प्रभु दिव्य ध्वनी सुनाए, सुर नर पशु मंगल गाए॥6॥

दोहा– **कर्म नाशकर के प्रभू, पाए पद निर्वाण।**
भव्य जीव जिनका 'विशद', करें श्रेष्ठ गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **श्रेयांस जिनराज की, महिमा अपरम्पार।**
अर्चा करते भाव से, पद में बारम्बार॥

। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

श्रीवासुपूज्य पूजन-12

स्थापना (सोरठा)

वासुपूज्य भगवान, जगत पूज्यता पाए हैं।
हृदय करें आह्वान, पूजा करने के लिए॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा

जिन चरणों में नीर की, देते हम त्रय धार।
रोग त्रय का नाशकर, पाएँ भवदधि पार॥1॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन घिसा, चढ़ा रहे हम नाथ।
भव से मुक्ती दीजिए, झुका रहे हम माथ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत के यहाँ, भर लाए हम थाल।
अक्षय पद पाएँ प्रभू, गाते हैं गुणमाल।।3।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाते भाव से, काम रोग हो नाश।
मुक्ती हो संसार से, पाए शिव पद वास।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

चढ़ा रहे नैवेद्य यह, तुम चरणों भगवान।
क्षुधा रोग का नाश हो, पाएँ पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का यह दीपक लिया, करके यहाँ प्रजाल।
ज्ञान दीप जगमग जले, गाते हम जयमाल।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप जलाते आग में, फैले श्रेष्ठ सुगंध।
अष्ट कर्म का नाश हो, पाएँ आत्मानन्द।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा करने लाए यह, उत्तम फल रसदार।
विशद भावना भा रहे, पाएँ हम शिव द्वार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का भाव से, चढ़ा रहे यह अर्घ्य।
यही भावना है विशद, पाएँ सुपद अनर्घ्य।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

सोरठा

हो गई माला–माल, षष्ठी कृष्ण अषाढ़ की।
दीन दयाल कृपाल, गर्भ कल्याणक पाए थे।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे जिन भगवान्, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
इन्द्र किए गुणगान, आनन्दोत्सव तव किए।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पकड़ी शिव की राह, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
छोड़ी जग की चाह, संयम धारा आपने।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया नाश, शिव पद के राही बने।
कीन्हे ज्ञान प्रकाश, भादों शुक्ला दोज को।।4।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल द्वितीयायां ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश, जिन श्रेयांस जी ने किए।
सिद्ध शिला पर वास, सुदी चतुर्दशी भाद्र पद।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य गणधर पूजा

(श्री छन्द)

गणी 'वरांश' मुक्ती पद दाता, जग जीवों के गाए त्राता।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं वरांश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'योगेश' योग के धारी, संयम धार बने अनगारी।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सन्मति' हे सन्मति के दाता, त्रिभुवन पति हे विश्वविधाता।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं सन्मति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'संभव' हे ज्ञानी, तुम हो वीतराग विज्ञानी।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं संभव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'निर्जित' आप मोह के जेता, गणाधीश हो कर्म विजेता।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्जित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'निर्मित' उत्तम संयम पाए, अपने सारे कर्म नशाए।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'निर्विक' सारे कर्म नशाए, पावन गणधर का पद पाए।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्विक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'निष्काल' कर्म के जेता, रत्नत्रय धारी अभिनेता ।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्काल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सुलोच' मृग लोचन धारी, ज्ञानी ध्यानी हे अविकारी।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुलोच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चित्रकूट' हे शिवपद दाता, रत्नत्रयधारी हे ज्ञाता।।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं चित्रकूट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

सिंह समान पराक्रम धारी, 'सिंह' गणी त्यागी अनगारी।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंह गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'शत्रृघण' आप कहाए, कर्म शत्रुओं पर जय पाए।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं शत्रृघण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गण के ईश 'गणेश' निराले, सबके संकट हरने वाले।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।13।।

अष्टदश भाषा के ज्ञानी, गणी 'अष्टदश' आतम ध्यानी।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।14

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टदश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अभयकेत' हे गणधर स्वामी, बने आप मुक्ती पथ गामी।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभयकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'विभकर' कहलाए, पावन मोक्ष मार्ग अपनाए।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं विभकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'नरसिंह' श्रेष्ठ नरों में गाए, सिद्धशिला पे धाम बनाए ।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं नरसिंह गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'नृनाथ' कहाए, जग में आप पूज्यता पाए।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं नृनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जगत गुरू 'परमोदय' गाए, भव्य जीव पद शीश झुकाए।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमोदय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

धर्म ध्वजा फहराने वाले, गणधर हुए 'ध्वजाग' निराले।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं ध्वजाग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।20।।

गणी 'भदारक' हैं उपकारी, जिनकी महिमा जग से न्यारी।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं भदारक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'केवलोद्भव' हे केवल ज्ञानी, पाई तुमने शिव रजधानी।
वासुपूज्य के गणधर स्वामी, जिनके चरणों विशद नमामी।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलोद्भव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(छन्द लोलतरंग)

गणी 'जवाब्बि' कहाने वाले, हुए आप मुक्ती के स्वामी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, हुए आप मुक्ति पथ गामी।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं जवाब्बि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'अवेत' गणधर पद धारी, बने आप जिन के अनुगामी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, हुए आप मुक्ती पथ गामी।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं अवेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'भयापह' भय के नाशी, कर्म नाश कर हुए अकामी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, हुए आप मुक्ती पथ गामी।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं भयापह गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।25।।

हे 'प्रहलाद' गणी अविकारी, तव चरणों में विशद नमामी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, हुए आप मुक्ती पथ गामी।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रहलाद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'सर्वज्ञ' निराले, रत्नत्रय धारे जो नामी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, हुए आप मुक्ती पथ गामी।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर आप 'गणेश' कहाए, गुरुवर हुए भद्र परिणामी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, हुए आप मुक्ती पथ गामी।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'निःकार' गणी अविकारी, हुए आप आतम अभिरामी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, हुए आप मुक्ती पथ गामी।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं निःकार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

राज पाठ को तजने वाले, 'राजित' हुए हैं गणधर स्वामी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, हुए आप मुक्ती पथ गामी।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं राजित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

विषम भुजंग नशाने वाले, 'गरुड़' गणी गाये अविकारी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, शिव पद पाए मंगलकारी।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं गरुड़ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्ञान सरोवर में गणधर जी, 'कमल' शोभते हैं मनहारी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, शिवपद पाए मंगलकारी ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं कमल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भिक्षण' त्याग करें भिक्षा का, गणधर जी बन के अनगारी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, शिवपद पाए मंगलकारी ।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं भिक्षण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'केशव' गणधर ने विरक्त हो, केशलोंच कर दीक्षा धारी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, शिवपद पाए मंगलकारी ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं केशव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जी 'बल्देव' लोक में, जैन धर्म के हुए प्रचारी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, शिवपद पाए मंगलकारी ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं बल्देव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'क्लेशानाश' क्लेश के, इस जग में गाए परिहारी ।
वासुपूज्य के गणधर बनके, शिवपद पाए मंगलकारी ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्लेशानाश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'विजितान' कहाए, सर्व चराचर के उपकारी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, शिवपद पाए मंगलकारी ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं विजितान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री 'अभिषेण' गणी इस जग में, प्राणी मात्र के करुणाकारी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, शिवपद पाए मंगलकारी ।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभिषेण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्ञानवान गणधर 'बुधान' हैं, सिद्ध शिला के शुभ अधिकारी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, शिवपद पाए मंगलकारी ।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं बुधान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'बालअर्क' गणधर मंगलमय, सर्व परिग्रह के परिहारी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, शिवपद पाए मंगलकारी ।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं बालअर्क गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कामरूप' गणधर को जानो, भारत भूमि पे अवतारी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, शिवपद पाए मंगलकारी ।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामरूप गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी लक्ष्य 'लक्षंत' बनाए, शिव पद पाने का मनहारी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, शिवपद पाए मंगलकारी ।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं लक्षंत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भास्वर' हे गणराज रहेंगे, जन्म जन्म तक हम आभारी।
वासुपूज्य के गणधर बनके, शिवपद पाए मंगलकारी ।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं भास्वर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सुभक्त' गण नायक तुमरे, गुण गाते जग के नर नारी ।
वासुपूज्य के गणधर बनके, शिवपद पाए मंगलकारी ।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुभक्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चौपाई)

'सातकुम्भ' गणधर कहलाए, सप्त भंग का ज्ञान कराए।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं सातकुम्भ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'केदार' निराले, सबके संकट हरने वाले ।।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं केदार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'खड्खाग' खड्खाग परिहारी, गणधर हुए श्रेष्ठ अनगारी।।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं खड्खाग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्ञान 'अगोचर' जो कहलाए, पावन गणधर पदवी पाए।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगोचर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन्हें 'प्रजापति' कहते भाई, जिनने गणधर पदवी पाई।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रजापति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'चारण' ऋद्धीधारी, पूर्ण रूप से हैं अविकारी।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं चारण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'ज्ञानोन' कहाए, ज्ञान मनः पर्यय प्रगटाए।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानोन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उल्लितपो' गणधर तपधारी, हुए पूणर्तः जो अविकारी।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं उल्लितपो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चारुदत्त' गणधर को ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ ।।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं चारुदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'कंवकेते' मनहारी, पावन गाए अतिशयकारी।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं कंवकेते गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन्हें 'चन्द्रदित' कहते प्राणी, गणधर हुए जगत कल्याणी।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्रदित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिनका नाम 'उनिम' है प्यारा, गणधर पद को जिनने धारा।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं उनिम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'श्रीगत' हुए श्री के धारी, गणाधीश जग में अनगारी।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीगत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भगत गणी' जिन भक्ति जगाए, पुण्य सम्पदा अतिशय पाए।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं भगतगणी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अष्टामणि' गणधर संन्यासी, पद पाए पावन अविनाशी।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टामणि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तत्त्वकेवली' जग के त्राता, आप हुए तत्त्वों के ज्ञाता।
वासुपूज्य जिनवर के भाई , गणधर गाए हैं शिवदायी।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं तत्त्वकेवली गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।60।।

गणधर आप 'जिनोम' कहाए, जिन चरणों में भक्ति जगाए।
वासुपूज्य जिनवर के भाई, गणधर गाए हैं शिवदायी।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनोम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'गदतो' हैं ज्ञानी, वीतरागता के विज्ञानी।
वासुपूज्य जिनवर के भाई, गणधर गाए हैं शिवदायी।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं गदतो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'त्रायस' नाम आपका गाया, गणधर बनके शिवपद पाया।
वासुपूज्य जिनवर के भाई, गणधर गाए हैं शिवदायी।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रायस गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'कृतान्त' तुम कृत उपकारी, आप हुए रत्नत्रय धारी।
वासुपूज्य जिनवर के भाई, गणधर गाए हैं शिवदायी।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतान्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर श्री 'सिंहरथ' गाए, सिंह समान पराक्रम पाए।
वासुपूज्य जिनवर के भाई, गणधर गाए हैं शिवदायी।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहरथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मद्र्दकेलि' कर्मो के नाशी, गणधर सम्यक ज्ञान प्रकाशी।
वासुपूज्य जिनवर के भाई, गणधर गाए हैं शिवदायी।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं मद्र्दकेलि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हुए छियासठ भाई, पाए जो अतिशय प्रभुताई।
वासुपूज्य जिनवर के भाई, गणधर गाए हैं शिवदायी।।67।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों वासुपूज्यस्य वराशांदि षट्षष्टि गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।।

इति श्री वासुपूज्यस्य वराशांदि षट्षष्टि गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा– **जगत पूज्यता पाए हैं, वासुपूज्य भगवान।**
हर्षित हो सुर नर मुनी, करते हैं जयगान।।

(ज्ञानोदय छन्द)

महाशुक्र से चयकर स्वामी, चम्पापुर में आये थे।
इन्द्राज्ञा से देवों ने तव, दिव्य रत्न बरसाए थे।।1।।
जयावती माता है जिनकी, वसूपूज्य है पिता महान।
इक्ष्वाकु शुभ वंश आपका, भैंसा चिन्ह रही पहिचान।।2।।
गर्भागम को पूर्ण किए प्रभु, जन्म कल्याणक तब पाए।
न्हवन कराया मेरुगिरी पर, देव सभी मंगल गाए।।3।।
लाख बहत्तर पूर्व की आयू, सात धनुष ऊंचाई जान।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, जाति स्मरण पाए महान।।4।।

दीक्षा धारण किए प्रभू जी, छह सौ राजाओं के साथ।
केवलज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए आप त्रैलोकी नाथ।।5।।
छियासठ गणधर रहे प्रभु के, मंदर जिनमें रहे प्रधान।
कर्म नाशकर चम्पापुर से, पाए प्रभु जी पद निर्वाण।।6।।

दोहा– **चम्पापुर में आपके, हुए पञ्च कल्याण।**
भक्त पुकारें आपको, दो प्रभु जी अब ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **भक्ती से मुक्ती मिले, कहते ऐसा लोग।**
'विशद' भक्ति का हे प्रभू, दो हमको अब योग।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री विमलनाथ पूजन-13

स्थापना (सोरठा)

विमलनाथ तीर्थेश, शिव पदवी को पाए हैं।
धारा दिगम्बर भेष, अतः बुलाते निज हृदय।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

नाथ! आपको हम सब ध्याते, चरणों में यह नीर चढ़ाते।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सेवक बनकर हम सब आये, चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

भक्त बने भक्ती को आये, अक्षय पद को अक्षत लाए।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।3।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।
पुष्प चढ़ाकर हम हर्षाएँ, काम रोग को पूर्ण नशाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।4।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।
यह नैवेद्य चढ़ाने लाए, क्षुधा नशाने को हम आए।।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।5।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।
दीप जलाते हम हे स्वामी, मोहनाश करने शिवगामी।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।6।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।
सुरभित हम यह धूप जलाएँ, अपने आठों कर्म नशाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।7।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फल यह यहाँ चढ़ाने लाए, हम शिव फल पाने को आए।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।8।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।
शुभ यह अर्घ्य चढ़ाते भाई, जो है शुभ मुक्ती पद दायी।।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।9।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सुखमा छन्द)

जेठ कृष्ण दशमी दिन पाए, नगर कम्पिला धन्य बनाए।
जयश्यामा के गर्भ में आए, देव रत्न वृष्टी करवाए।।1।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय

अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल की चौथ बताई, जन्मे विमलनाथ जिन भाई।
जन्म कल्याणक देव मनाए, खुश हो जय जयकार लगाए।

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल की चौथ कहाई, दीक्षा कल्याणक तिथि गाई।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, शिवपथ के राही कहलाए।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल छठ रही सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, जीवों को सन्मार्ग दिखाए।।4।।

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छठी कृष्ण आषाढ़ बखानी, प्रभु जी पाए मुक्ती रानी।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ जी गणधर पूजा

(दोहा)

'आकालोच' गणधर हुए, 'जय' भी पाए नाम ।
विमलनाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं आकालोच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'संयमगार' ने, पाया है शिव धाम।
विमलनाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं संयमगार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन पद पूजे 'देवगण', पाया पावन नाम।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवगण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

किए 'विसर्जन' कर्म का, करके जो संग्राम।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं विसर्जन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शिव पद में 'भवदेव' जी, पाए जो विश्राम ।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवदेव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'गोवांग' जी, ध्याएँ आतम राम ।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं गोवांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'नियास्थि' कहलाए हैं, ध्याते आतम राम।।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं नियास्थि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'निर्मल' किए, निज गुण में विश्राम ।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जी 'सिद्धार्थ' हैं, हुए स्वयं निष्काम।।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धार्थ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अमर' गणी ने ध्यान का, पाया शुभ परिणाम।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चिंतागति' गणधर हुए, पाए सम्यकज्ञान।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं चिंतागति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'निरंजन' ने किया, निज आतम का ध्यान ।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरंजन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।12।।

गणी 'गतारग' जी कहे, विशद गुणों की खान।
विमल नाथ के गणी, पद बारम्बार प्रणाम ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं गतारग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।13।।

'विपुलाचल' गणधर हुए, छोड़े सर्व वितान ।
विमल नाथ के गणी, पद बारम्बार प्रणाम ।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं विपुलाचल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अनगारी 'सुकबोध' की, रही श्रेष्ठ पहचान ।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुकबोध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जी 'सुकमाल' ने, किया जगत उत्थान ।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुकमाल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।16।।

'अश्रुत' पारधी गणी ने, किया जगत कल्याण ।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं अश्रुत पारधी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणनामक 'आत्मेन' ने, किया आत्म का ध्यान ।
विमल नाथ के गणी, पद बारम्बार प्रणाम ।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मेन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'भूषगम' ने विशद, पाया मोक्ष निधान ।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूषगम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'वंकटश' ने दिया, जग को जीवनदान।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं वंकटश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'पांचाल' जी, गाए आभावान ।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं पांचाल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'केदार' जी, थे भारी गुणवान ।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं केदार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जी का नाम शुभ, अनुपम रहा 'बभान'।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं बभान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मगध' गणी ने ध्यान कर, पाया केवल ज्ञान ।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं मगध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हुए 'ररांग' जी, अतिशय महिमावान ।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं ररांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'क्षदर' के ध्यान से, हो कर्मो की हान ।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षदर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'पांतिपावन' हुए, पाए पद निर्वाण ।
विमल नाथ के गणी पद, बारम्बार प्रणाम ।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं पांतिपावन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

'भूतनाथ' गणराज हैं , महिमा मयी महान ।
विमल नाथ के गणी, पद बारम्बार प्रणाम ।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूतनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(पाइता छन्द)

गणधर 'गामिनि' कहलाए, मन:पर्यय ज्ञान जगाए।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं गामिनी गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'क्रोधाकुल' क्रोध के त्यागी, गणधर शिव के अनुरागी।।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधाकुल गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'शताकुल' गाये, जो रत्नत्रय निधि पाए ।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं शताकुल गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'मन्ये' गणधर स्वामी, तुम हो मुक्ती पथ गामी।।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं मन्ये गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कोलेव' गणी मनहारी, हैं जग में मंगलदायी।।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं कोलेव गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कम्पन' कम्पित न होते, गणधर जी भय को खोते।।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं कंपन गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'विचक्षण' गाये, अतिशय महिमा दिखलाए।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं विचक्षण गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणि 'मिश्रीवेग' को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं मिश्रीवेग गणधराय नम: अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'माघनन्दी' अनगारी, तुम गणी बने अविकारी।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं माघनंदी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'वृद्धिका' स्वामी, तुम बने मोक्ष पथ गामी।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृद्धिका गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'निरंकुश' जानो, गण के स्वामी हैं मानो।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरंकुश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'ध्यषना' गणधर अविकारी, हैं आतम ब्रह्म विहारी।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं ध्यषना गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'चात्राग' निराले, शिव पदवी पाने वाले ।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं चात्राग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'अधीशना' गाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधीशना गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'अतिशय' के धारी, हैं 'अतिशय' धर्म प्रचारी।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणि 'सोमदत्त' कहलाए, जो विशद भाग्यता पाए।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं सोमदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भवमाभव' गणधर प्यारे, हैं पावन गुरु हमारे।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवमाभव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री 'पार्श्व' गणी जग जेता, पावन हैं कर्म विजेता ।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं पार्श्व गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सद्वज' गणधर जी सोहें, भक्तों के मन को मोहें।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्वज गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'ब्राह्मदत्त' गुरु देवा, हम करें चरण की सेवा।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्राह्मदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'पद्म' मन भाए, अपने जो कर्म नशाए।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्म गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'धर्मासन' धर्म के धारी, जिनकी वाणी है प्यारी।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मासन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'उग्रतपो' अनगारी, पावन हैं ऋद्धी धारी।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं उग्रतपो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'समुन्नत' ज्ञानी, हैं वीतराग विज्ञानी।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं समुन्नत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'नकेश' सद्ज्ञाता, हैं जग जीवों के त्राता।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं नकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'चिरंतिस' गाये, महिमा अतिशय दिखलाए।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं चिरंतिस गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उर्जति' गणधर शिवदायी, जिनकी फैली प्रभुताई ।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं उर्जति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर पचपन थे ज्ञानी, शुभ वीतराग विज्ञानी।
श्री विमल नाथ के भाई, हम पूज रहे शिवदायी ।।56।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों विमलनाथस्य जयादि पंचपंचाशत् गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

इति श्री विमलनाथस्य जयादि पंचपंचाशत् गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **विमलनाथ भगवान हैं, विमल गुणों की खान।**
जिन गुण माला गाए वह, पाए केवलज्ञान।।

(वीरछन्द)

हे वीतराग सर्वज्ञ प्रभो! हमने तुमको ना पहिचाना।
इसलिये चौरासी के चक्कर, पड़ रहे अनादी से खाना।।1।।
तुम करुणा निधि हो हे स्वामी, हम द्वार आपके आये हैं।
चारों गतियों में दुख पाए, हम उनसे अब घबराए हैं।।2।।
तुम विमल गुणों के धारी हो, तुमने सत् संयम पाया है।
निज ध्यान अग्नि में हे स्वामी, कर्मों को पूर्ण जलाया है।।3।।
शत् संयम जो धारण करते, वे केवलज्ञान जगाते हैं।
वह कर्म घातिया नाश करें, फिर अनन्त चतुष्टय पाते हैं।।4।।
भगवान आपकी वाणी में, तत्त्वों का सार बताया है।
शुभ अनेकांत अरु स्याद्वाद, शत् समयसार समझाया है।।5।।
शुभ कर्म किए सुख पाएँगे, हमने अब तक ऐसा जाना।
है वीतराग शुभ धर्म 'विशद' उसको अब तक ना पहिचाना।।6।।

दोहा– **वीतराग जिन धर्म को, धार बने अनगार।**
कर्मनाशकर जीव सब, करें आत्म उद्धार।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **श्रद्धा से जिन दर्श पा, जिनवाणी से ज्ञान।**
'विशद' साधना कर सदा, पावें पद निर्वाण।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अनन्तनाथ पूजन-14

स्थापना

सोरठा– **गुणानन्त के कोश, अनन्त नाथ भगवान हैं।**
जीवन हो निर्दोष, आह्वानन् करते अतः।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल पीकर भी बुझ सकी नहीं, मेरे जीवन की प्यास कभी।
जल पीते पीते युग बीते, फिर भी मन रहा उदास अभी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सूरज से भी ज्यादा गर्मी, मेरे इस तन मन में छाई हैं।
चन्दन क्या शीतलता देगा, जब धन की आस लगाई हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

पद है दुनियाँ में अनगिनते, क्षण क्षण में क्षय हो जाते हैं।
यह पद पाने को जग प्राणी, मन में आकुलता पाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

क्षण भंगुर यह जीवन गाया, हम समझ नहीं यह पाए हैं।
जो चतुर्गती का कारण है, वह चक्र काटने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

व्यंजन खाकर के कई हमने, नश्वर काया को पुष्ट किया।
आनन्द आत्मरस का हमने, शाश्वत होता जो नहीं लिया।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

तम हरने वाला है दीपक, जो नाश मोह ना कर पाए।
होवे प्रकाश निज चेतन में, जो दीप ज्ञान का प्रजलाए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में गंध जलाई है, पर कर्म नहीं जल पाए हैं।
जिसने निज आतम को ध्याया, उसने सब कर्म नशाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीव कर्म का फल पाते, जिनवाणी में यह गाया है।
जो शुक्ल ध्यान में लीन हुए, उनने शाश्वत फल पाया है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

हम भूले निज की शक्ती को, कर्मों ने दास बनाया है।
हे नाथ आपकी महिमा सुन, यह राज समझ में आया है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सुखमाछन्द)

कार्तिक वदि एकम तिथि जानो, गर्भागम प्रभु का पहिचानो।
देव रत्न वृष्टी करवाए, माँ के गर्भ का शोध कराए।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिक प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी तिथि आयी, नगर अयोध्या बजी बधाई।
जन्मोत्सव तव देव मनाए, नृत्य गान कर बाद्य बजाये।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादशी जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण बारस शुभकारी, दीक्षा धार हुए अनगारी।
देव पालकी स्वर्ग से लाए, प्रभु को दीक्षा वन पहुँचाए।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत अमावश को जिन स्वामी, ज्ञान जगाए अन्तर्यामी।
सुर नर जय-जय कार लगाए, चरणों में नत शीश झुकाए।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत अमावश तिथि शुभकारी, हुए प्रभू मुक्ती पथ धारी।
अपने आठों कर्म नशाए, मोक्ष महल में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त नाथ गणधर पूजा

(चौपाई)

गणधर नाम 'सकोदर' पाए, और अरिष्ट आप कहलाए।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सकोदर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

उच्च गुणों को पाने वाले, गणधर 'उच्यत' रहे निराले।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं उच्यत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सर्वोत्तम' गणधर को ध्यायें, पद में सादर शीश झुकाएँ ।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वोत्तम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उदय' गणी हैं महिमा धारी, जो हैं जन-जन के उपकारी।
जिनन्नत के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं उदय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गोल 'कपोल' आपके गाये, गणधर बन शिव पदवी पाए।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं कपोल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वेदित' गणी वेद के ज्ञाता, जग जीवों के गाए त्राता।।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेदित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश हे शोक निवारी, विशद 'अशोक' नाम के धारी।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशोक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'नाना' कहलाए, नाना भाँति तपों को पाए ।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपदगामी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं नाना गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर बने 'अनंगत' शाही, आप हुए शिव पथ के राही
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्ह अनंगत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'अहारिका' गणधर स्वामी, आप बने मुक्ती पथ गामी ।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहारिका गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'परमउस्वा' कहलाए, निज आतम का ध्यान लगाए।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमउस्वा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उर्जित' गणधर हैं जग नामी, बने प्रभू के जो अनुगामी।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं उर्जित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

'सत्यंधर' गणधर को ध्यायें, पद में सादर शीश झुकाएँ।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यंधर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दशरथ' गणधर संयम धारी, पूर्ण रूप हैं जो अनगारी।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं दशरथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तत्त्वसार' तत्वों के ज्ञाता, भवि जीवों के आप विधाता।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं तत्त्वसार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर परम वीरता पाए, गणधर 'वीरसेन' कहलाए।।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीरसेन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हुए 'तथोगत' भाई, जिनकी फैली जग प्रभुताई।।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं तथोगत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

हम 'अलोल' गणधर को ध्याते, भाव सहित हम महिमा गाते।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं अलोल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम 'कोष्ठरथ' जिनका गाया, गणधर पद को जिनने पाया।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं कोष्ठरथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं 'जिनदत्त' नाम के धारी, गणाधीश पावन मनहारी।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर हुए 'गुढांग' निराले, जग को सन्मति देने वाले ।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुढांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'आत्मिक' आत्म गुणों को ध्याए, पावन गणधर पदवी पाए।।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मिक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'अक्षीण' ऋद्धि के धारी, बने आप पावन अविकारी।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गण नायक 'अभिकेत' कहाए, शिव पद के नेता जो गाए।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी ।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभिकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'योगेश' योग के धारी, हुए आप पावन अनगारी।
जिनानन्त के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपद गामी।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(छन्द–मोतियादाम)

'उनोन्नत' है गणधर का नाम, किए जो शिव पद में विश्राम।
गणी हैं जिनानन्त के संत, पूज्य हैं इस जग में गुणवंत।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं उनोन्नत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'खगानन' हैं गणधर महाराज, हमें जिनकी चर्या पर है नाज।
गणी हैं जिनानन्त के संत, पूज्य हैं इस जग में गुणवंत।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं खगानन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहाए 'वज्रनाभि' गणराज, पूजता जिन पद सकल समाज।।
गणी हैं जिनानन्त के संत, पूज्य हैं इस जग में गुणवंत।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रनाभि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बने श्री 'धर्मकेश' गणनाथ, झुकाते जिन पद में हम माथ ।
गणी हैं जिनानन्त के संत, पूज्य हैं इस जग में गुणवंत।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मकेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अनभ' जी गणधर हुए महान, करें जिनका प्राणी गुणगान ।
गणी हैं जिनानन्त के संत, पूज्य हैं इस जग में गुणवंत।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'जग्म' गणधर हैं महिमावान, करें भक्ती जिनकी गुणवान।
गणी हैं जिनानन्त के संत, पूज्य हैं इस जग में गुणवंत।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं जग्म गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पद्मकोल' है गणधर का नाम, किए जो सिद्धशिला विश्राम।
गणी हैं जिनानन्त के संत, पूज्य हैं इस जग में गुणवंत।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मकोल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहाए गणधर जो 'दिव्यांग', झुकाते जिनपद हम उत्तमांग।
गणी हैं जिनानन्त के संत, पूज्य हैं इस जग में गुणवंत।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वक्र गति रहित 'वक्र' गणराज, भक्ति कर सफल होंय सब काज।
गणी हैं जिनानन्त के संत, पूज्य हैं इस जग में गुणवंत।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं वक्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तपनि' गणधर तप धारे घोर, रहा महिमा का ओर ना छोर ।
गणी हैं जिनानन्त के संत, पूज्य हैं इस जग में गुणवंत ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं तपनि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'उच्यत' हैं उच्च विशाल, कर्म का नाश किए हैं जाल।
गणी हैं जिनानन्त के संत, पूज्य हैं इस जग में गुणवंत।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं उच्यत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'श्रृकान्ति' गणधर हैं कान्तीमान, किए हैं निज आतम का ध्यान।
गणी हैं अतिशय महिमावान, जिनेश्वर श्री अनन्त के जान।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रृकांति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी कहलाए हैं 'श्रीषेन' जगत को जिनकी है बहु देन।
गणी हैं अतिशय महिमावान, जिनेश्वर श्री अनन्त के जान।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीषेन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हुए गण नायक 'सौन्दर्यवान', जगाए जो मनःपर्यय ज्ञान।
गणी हैं अतिशय महिमावान, जिनेश्वर श्री अनन्त के जान।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौन्दर्यवान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्वयंवर' गणधर हुए विशेष, नाश जो कीन्हें कर्म अशेष ।
गणी हैं अतिशय महिमावान, जिनेश्वर श्री अनन्त के जान।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंवर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'हरिषेण' हुए अनगाार, किए जो अतिशय धर्म प्रचार।
गणी हैं अतिशय महिमावान, जिनेश्वर श्री अनन्त के जान।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं हरिषेण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सुव्रति' गणधर ने व्रत को धार, कर्म का कीन्हा है संहार ।
गणी हैं अतिशय महिमावान, जिनेश्वर श्री अनन्त के जान।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुव्रति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उगातव' पावन हुए गणेश, देशना जग को दिए विशेष ।
गणी हैं अतिशय महिमावान, जिनेश्वर श्री अनन्त के जान।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं उगातव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी जल्लौषधि ऋद्धीवान, हुए 'जल्लो' ऋषि महति महान ।
गणी हैं अतिशय महिमावान, जिनेश्वर श्री अनन्त के जान।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं जल्लो गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी हैं 'स्थिभुक्त' व्रतवान, प्राप्त कीन्हें हैं पद निर्वाण ।
गणी हैं अतिशय महिमावान, जिनेश्वर श्री अनन्त के जान।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थिभुक्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मुक्तमुनि' पाए मुक्ती वास, किए सदगुण का पूर्ण विकाश।
गणी हैं जिनानन्त अविकार, पूजते जिन पद बारम्बार ।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तमुनि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

लोक में फैला विशद 'महात्म', बने हैं गणाधीश परमात्म।
गणी हैं जिनानन्त अविकार, पूजते जिन पद बारम्बार ।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं महात्म गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी हैं 'कामवृष्टि' शुभकार, किए जग जीवों का उद्धार ।
गणी हैं जिनानन्त अविकार, पूजते जिन पद बारम्बार ।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं कामवृष्टि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तपोधन' तप धारे गणराज, प्राप्त जो किए मोक्ष साम्राज्य ।
गणी हैं जिनानन्त अविकार, पूजते जिन पद बारम्बार ।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं तपोधन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सगौरव' गाए गौरव वान, हुए जो विशद गुणों की खान ।
गणी हैं अतिशय महिमावान, जिनेश्वर श्री अनन्त के जान।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं सगौरव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हुए गणधर यह सभी पचास, किए हैं सम्यक् ज्ञान प्रकाश।
गणी हैं अतिशय महिमावान, जिनेश्वर श्री अनन्त के जान।।51।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों अनन्तनाथस्य सकोदरादि पंचाशत् गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।।

इति श्री अनन्तनाथस्य सकोदरादि पंचाशत् गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **जिनानन्त भगवान हैं, गुण अनन्त की खान।**
गुण माला गाते विशद, करने निज कल्याण।।

(सखी छन्द)

चय अच्युत स्वर्ग से आये, इक्ष्वाकुवंशी गाए।
सिंहसेन पिता कहलाए, माँ सूर्ययशा जिन पाए।।1।।
शुभ कौशल देश कहाए, प्रभु नगर अयोध्या आये।
तव स्वर्ग समान बताया, लक्षण सेही कहलाया।।2।।

आयू पचास लख पूरव, जिन धनुष पचास अपूरव।
प्रभु उल्का पतन निहारे, जग से विरागता धारे।।3।।
दीक्षा लेने वन आए, इक सहस भूप संग पाए।
जब कर्म घातिया नाशे, तव केवल ज्ञान प्रकाशे।।4।।
गणधर पचास जिन पाए, जय प्रथम गणी कहलाए।
है यक्ष सुकिन्नर भाई, यक्षी वैरोटी गाई।।5।।
सम्मेद शिखर प्रभु आये, शिव स्वयंप्रभु कूट से पाए।
हम 'विशद' ज्ञान शुभ पाएँ, सिद्धों में धाम बनाए।।6।।

दोहा– **गुण गाते हम आपके, गुण पाने भगवान।**
जिन ने गुण प्रगटाए वह, पद पाए निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **हैं अनन्त गुण आपके, महिमा का ना पार।**
भक्ती कर पाएँ प्रभू, इस जीवन का सार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री धर्मनाथ पूजन–15

स्थापना (चाल छन्द)

जिन धर्म नाथ शिवगामी, मुक्ती पद पाए स्वामी।
उनको निज हृदय बुलाते, आह्वानन कर तिष्ठाते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर–अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(केसरी छन्द)

निर्मल जल से कलश भरीजे, जिन पद में त्रयधारा दीजे।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन में केसर घिस लीजे, जिन चरणों की अर्चा कीजे।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत के शुभ थाल भराएँ, अक्षय पद पाके शिव पाएँ।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाकर पूजा कीजे, काम रोग अपना हर लीजे।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ताजे शुभ नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधारोग को पूर्ण नशाएँ।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत के शुभकर दीप जलाएँ, मोह तिमिर से मुक्ती पाएँ।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप जलाएँ हम शुभकारी, अष्टकर्म की नाशन कारी।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा करने को फल लाए, मोक्ष महाफल पाने आए।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ्य दायक शुभकारी, अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(वेसरी छन्द)

सित वैशाख अष्टमी गाए, धर्म नाथ जी गर्भ में आए।
रत्नपुरी में रत्न सुवर्षे, सुरनर सभी वहाँ पे हर्षे॥1॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, जन्म लिए भू पे त्रिपुरारी।
पाण्डुक वन अभिषेक कराए, देव सभी जयकार लगाये॥2॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्कापात देखकर स्वामी, बने मोक्ष पद के पथगामी।
माघ शुक्ल तेरस तिथि गाई, दीक्षा की पावन घड़ि आई॥3॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया आप नशाए, ऋद्धि सिद्धियाँ स्वामी पाए।
केवल ज्ञान का दीप जलाए, मुक्ती पथ की राह दिखाए॥4॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव में रमने वाले, कर्म नाश शिवपुर को चाले।
ज्येष्ठ शुक्ल की चौथ बताई, गिर सम्मेद शिखर से भाई॥5॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ गणधर पूजा

(नव तोमर छन्द)

गुण गुप्ति गणी अनगारी, 'अरिष्टसेन' नाम के धारी।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरिष्टसेन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कृत कृत्य 'कृत्य' हे स्वामी, जो बने मोक्ष पथगामी।।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृत्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'विकटि' कर्म के नाशी, तुम केवलज्ञान प्रकाशी।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं विकटि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऋषि क्षपक श्रेणि को पाए, जो 'क्षपण' गणी कहलाए।
गणि धर्म नाथ के गाए, हम पूजा करने आए।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षपण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज उत्तम गुण प्रगटाए, गणराज 'निरोत्तम' गाए।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरोत्तम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'क्षेमंधरा' कहाते, इस जग में पूजे जाते।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमधरा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।6।।

कहलाए 'उदाहक' स्वामी, जो हैं जिनके अनुगामी।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं उदाहक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'तिलोतम' गाए, संतों में श्रेष्ठ कहाए ।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं तिलोतम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'सोवृति' व्रत धारी, जन-जन के गुरु उपकारी।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सोव्रति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'कांजिकांत' अनगारी, पावन संयम के धारी।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं कांजिकांत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कुन्थु आदिक जो प्राणी, गुरु 'कुन्थु' हे कल्याणी।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुन्थु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'मारीच' हैं ज्ञानी, पावन है जिनकी वाणी।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं मारीच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'निर्जित' गणधर को ध्यायें, भव सागर से तिर जाएँ।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्जित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सिंहकेत' पराक्रम धारी, जिनकी वृत्ती है न्यारी।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'विवेति' कहाए, आतम से प्रीति लगाए।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं विवेति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'वकायन' गाए, जो सम्यक् ज्ञान जगाए।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं वकायन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कल्याण' नाम के धारी, निर्ग्रन्थ ऋषी अनगारी।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'धृव' धैर्य धरने वाले, हैं संयम के रखवाले।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं धृव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'काकोदर' जिन को ध्याते, जो जगत पूज्यता पाते।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं काकोदर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'आलोच' स्वयं के जेता, कर्मो के विशद विजेता।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं आलोच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'व्रतशुद्धयथ' गाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए ।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्रतशुद्धयथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

कहलाए 'अगोचर' स्वामी, हैं शिवपथ के अनुगामी।
गणि धर्मनाथ के गाए, हम पूजा करने आए।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगोचर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(वेसरी छन्द)

गणधर जी 'उभखेट' कहाए, अतिशय जगत पूज्यता पाए।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं उभखेट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

नाम 'अष्टभुज' गणधर पाए, अष्ट कर्म को आप नशाए।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टभुज गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'धर्मासन' हैं धर्म के धारी, तीन लोक में मंगलकारी ।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मासन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'धर्मातन' है नाम निराला, जीवों का हित करने वाला।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मातन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'व्युत्सर्ग' गणी अविकारी, आप हुए रत्नत्रय धारी।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्युत्सर्ग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दिव्य देशना देने वाले, गणी 'सुदेशन' करने वाले।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुदेशन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दधिति' आप भवसागर तारी, आप हुए संयम के धारी।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं दधिति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विचयाक्षे' हे गणधर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी ।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं विचयाक्षे गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्नातक' जी निज को ध्याये, अतिशय केवल ज्ञान जगाए।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्नातक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'बुधुतम' बोधि जगाने वाले, गणधर संयम के रखवाले।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं बुधुतम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'अभ्यातर' तप धारी, कर्म निर्जरा कीन्हें भारी।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यातर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

विषय नाम को 'गरुड' कहाए, गणाधीश परिषह जय पाए।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं गरुड गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'शुभकर' हे शुभ लाभ प्रदायी, गणधर ने महिमा दिखलाई।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अपि' गणनाथ आप हो ज्ञानी, वीतरागता के विज्ञानी।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं अपि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'धर्मधार' गणधर कहलाए, जग जीवों को धर्म सिखाए।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मधार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'ध्रुव' गणधर निज ज्ञान जगाए, निज स्वरूप में ध्रुवता पाए।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं ध्रुव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नाम 'कृष्टतप' जिनने पाया, तप धर केवल ज्ञान जगाया।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृष्टतप गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'विर्जित' हे अनगारी, तव पद पूज रहे नरनारी।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं विर्जित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'बुद्धनाथ' हे बुद्धि प्रदाता, आप हुए जन-जन के त्राता।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्थिराशय' गणि आप कहाए, स्थिरता निज गुण में पाए।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थिराशय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'रजायते' गणधर ज्ञानी, जग जन के तुम हो कल्याणी।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं रजायते गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

गणधर तैतालिस अविकारी, हुए प्रभू के अतिशयकारी।
धर्मनाथ के गणधर भाई, पूज रहे हम जग सुखदायी।।44।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों धर्मनाथस्य अरिष्टसेनादि त्रिचत्त्वारिंशत गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

इति श्री धर्मनाथस्य अरिष्टसेनादि त्रिचत्त्वारिंशत गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **धर्म धुरन्धर धर्मधर, विशद धर्म के ईश।**
जयमाला गाते चरण, झुका भाव से शीश।।

(जोगीरासा छन्द)

भरत क्षेत्र में अंग देशशुभ, रत्नपुरी शुभ गाई।
सर्वार्थ सिद्धि से चयकर आये, धर्मनाथ जिन भाई।।1।।
भानुराय हैं पिता आपके, मात सुव्रता पाये।
कुरू वंश के स्वामी अनुपम, कश्यप गोत्री गाए।।2।।
हुआ जन्म तव देव यहाँ पर, जन्म कल्याण मनाए।
मेरुगिरी पे न्हवन कराके, हर्षे नाचे गाये।।3।।
धनुष पैंतालिस है ऊँचाई, स्वर्ण वर्ण तुम पाए।
आयू लाख वर्ष दश की है, वज्रदण्ड पद गाए।।4।।
उल्का पात देखकर स्वामी, जग से हुए विरागी।
निज आतम का ध्यान लगाए, ज्ञान किरण तव जागी।।5।।
पाँच योजन का समवशरण तब, आके देव बनाए।
भव्य जीव तव दिव्य ध्वनी सुन, शत् श्रद्धान जगाए।।6।।

दोहा– **कर्म नाशकर आपने, पाया पद निर्वाण।**
तव पद के राही बनें, दो ऐसा वरदान।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **धर्मनाथ जी धर्म की, बहा रहे हैं धार।**
अवगाहन कर जीव कई, होते भव से पार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री शांतिनाथ पूजन-16

स्थापना (सखी छन्द)

हैं शांतिनाथ शिवकारी, इस जग में मंगलकारी।
निज उर में हम तिष्ठाएँ, पूजा करके सुख पाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(केसरी छन्द)

प्रासुक हमने नीर कराया, शिवपद पाने यहाँ चढ़ाया।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए, भव सन्ताप नाश हो जाए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥2॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हमने यहाँ चढ़ाए, अक्षय पद पाने हम आए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥3॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाते यह शुभकारी, काम नाश हो हे त्रिपुरारी
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥4॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाने लाए, क्षुधा नाश करने हम आए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥5॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह तिमिर का नाशनकारी, दीप चढ़ाते मंगलकारी।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥6॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में यह धूप जलाएँ, कर्म नाश सारे हो जाएँ।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से पूज रहे जिनस्वामी, हम भी बने मोक्ष पथ गामी।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाएँ, पद अनर्घ हम भी पा जाएँ
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

भादों कृष्ण सप्तमी जानो, प्रभू गर्भ में आये मानो।
दिव्य रत्न खुश हो वर्षाए, देव सभी तब हर्ष मनाए।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तमयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस को स्वामी, जन्मे शांतिनाथ शिवगामी।
सारे जग ने हर्ष मनाया, जिनवर का जयकारा गाया।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चौदस भाई, शांतिनाथ जिन दीक्षा पाई।
जिनके मन वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल दशमी शुभकारी, विशद ज्ञान पाये त्रिपुरारी।
ॐकार मय ध्वनि गुंजाए, भव्यों को शिवराह दिखाए।।4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभ गाई, शांतिनाथ जिन मुक्ती पाई।
प्रभु ने सारे कर्म नशाए, शिवपुर अपना धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ गणधर पूजा

(दोहा)

धर्म चक्र धारी हुए, 'चक्रायुध' गणराज।
शांतिनाथ भगवान पद, पाए शिवपुर राज।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं चक्रायुध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'श्रृंगनाथ' गणराज ने, करके आतम ध्यान ।
कर्म घातिया नाशकर, पाया केवल ज्ञान।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रृंगनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सिद्धनाथ' गणराज का, करते हम गुणगान ।
कर्म घातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अदिते' गुरु गणधर हुए, किए जगत कल्याण।
कर्म घातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अदिते गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अक्षय पद पाके बने, 'अक्षय' गणी महान।
कर्म घातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दुर्योधन' गणधर बने, पाके चौथा ज्ञान।
कर्म घातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुर्योधन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप कर गणधर 'तपोधन', किए आत्म उत्थान।
कर्म घातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं तपोधन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'निर्मलोत' गणराज हैं, जैन धर्म की शान।
कर्म घातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलोत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणनायक श्री 'पाण्डु' हैं, विशद गुणों की खान।
कर्म घातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं पाण्डु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणनायक श्री 'शांति' जी, दिए शांति का दान।
कर्म घातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं शांति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भरत क्षेत्र के लाड़ले, हुए 'भरत' गणनाथ ।
जिनके चरणों में विशद, भक्त झुकाते माथ ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं भरत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'नवाक्ष' गणराज तुम, पाए शिव का ताज ।
अतः आपके चरण में झुकता सकल समाज ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं नवाक्ष गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

महिमा 'सिंह' गणेश की, गाई अपरम्पार।
रत्नत्रय पाके बने, ऋषी आप अनगार।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंह गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कंठ राग को छोड़कर, लीन्हें संयम धार।
रत्नत्रय पाके बने, ऋषी आप अनगार।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं कंठ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सुकंठ' तव कंठ में, जिनवाणी का वास ।
भक्तों की तव दर्श कर, होती पूरी आस।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुकंठ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मन को आह्लादित करें, गणनायक 'प्रहलाद' ।
भक्त भावना से सदा, करते जिनको याद।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रहलाद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'दयोखिल' ने दिया, दया धर्म का सार ।
दिव्य देशना झेलकर, किया जगत उद्धार।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं दयोखिल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तीन 'भुवन' में सार का, दिए भुवन उपदेश।
शिव पद के राही बने, सुनकर जीव विशेष।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं भुवन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'पलायन' ने किया , निज आतम का ध्यान।
दोष पलायन कर गये, प्रगटाए निज ज्ञान।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं पलायन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विस्वाभर' ने विश्व में , दिए तत्त्व उपदेश।
रत्नत्रय धारी हुए, धार दिगम्बर भेष।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं विस्वाभर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चाल छन्द)

गणि 'विश्वलोक' अविकारी, पावन रत्नत्रय धारी।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'खिन्नत' गणधर स्वामी, तुम हुए मोक्ष पथ गामी।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं खिन्नत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'क्षतकाल' गणी मनहारी, संयम धारी शिवकारी।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षतकाल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'लिगन' शुभकारी, हैं अतिशय महिमा धारी।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं लिगन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'बलिभद्र' गणी को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं बलिभद्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'हम्मत' गणधर जग त्राता, कहलाए विश्व विधाता।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं हम्मात गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहलाए 'वकानन' स्वामी, गणधर गाए शिवनामी।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं वकानन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उत्पन्न' आप जग जेता, कर्मो के विशद विजेता।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्पन्न गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'अनन्त' केवल अनगारी, गणधर तुम मंगलकारी।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'संभृत' गणधर श्रुत धारी, कहलाए गुरु अनगारी।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए ।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं संभृत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'संबल' हो बल के दाता, तुम सम्यक् ज्ञान प्रदाता।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं संबल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणि 'कालिद' शिवपुर वासी, हैं कर्म कालिमा नाशी।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं कालिद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणि 'उग्गतवा' तप धारी, तुम हो गुरु अतिशय कारी।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं उग्गतवा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मुक्तामणि' मुक्ती दायी, तुम अतिशय सौख्य प्रदायी।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तामणि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सम्यग्नाथ' निराले, मिथ्मामति हरने वाले।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्नाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणि 'जिनेन्द्र' केवल गाए, जो केवल ज्ञान जगाए।
श्री शांति नाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्रकेवल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर छत्तिस अविकारी, कहलाए संयमधारी ।
श्री शांतिनाथ के गाए, त्रैलोक्य पूज्य कहलाए ।।37।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों शांतिनाथस्य चक्रायुधादि षट्त्रिंशत गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

इति श्री शांतिनाथस्य चक्रायुधादि षट्त्रिंशत गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **शांति प्रदायक शांति जिन, तीनों लोक त्रिकाल।**
जिनकी गाते भाव से, नत होके जयमाल।।

(छन्द–तामरस)

चिच्चेतन गुणवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।
शांतिनाथ भगवान नमस्ते, वीतराग विज्ञान नमस्ते।।1।।
सम्यक् श्रद्धाधार नमस्ते, विशद ज्ञान के हार नमस्ते।
सम्यक् चारित वान नमस्ते, तपधारी गुणवान नमस्ते।।2।।

जगती पति जगदीश नमस्ते, ऋद्धी धार ऋशीष नमस्ते।
गर्भ कल्याणक वान नमस्ते, प्राप्त जन्म कल्याण नमस्ते।।3।।
तप कल्याणक धार नमस्ते, केवल ज्ञानाधार नमस्ते।
मोक्ष महल के ईश नमस्ते, वीतराग धारीश नमस्ते।।4।।
जन्म के अतिशय वान नमस्ते, ज्ञान के भी दश जान नमस्ते।
देवों के शुभकार नमस्ते, प्रातिहार्य भी धार नमस्ते।।5।।
अनन्त चतुष्टय वान नमस्ते, शुभ छियालिस गुणवान नमस्ते।
करके आतम ध्यान नमस्ते, पाए पद निर्वाण नमस्ते।।6।।

दोहा– **शांती के हैं कोष जिन, शांती के आधार।**
विशद शांति पाए स्वयं, शांति के दातार।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **शांती पाने के लिए, भक्त खड़े हैं द्वार।**
सुनो प्रार्थना हे प्रभो! बोलें जय-जयकार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री कुन्थुनाथ पूजन-17

स्थापना (चाल छन्द)

हैं कुन्थुनाथ अविकारी, जिनकी है महिमा न्यारी।
जिनको हम पूज रचाते, अपने उर में तिष्ठाते।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(स्रग्विणी छन्द) (लक्ष्मीधरा छन्द)

नीर निर्मल से झारी भरा लाए हैं,
रोग जन्मादी के नाश को आए हैं।

कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।1।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केशरादी से हमने कटोरी भरी,
जिन प्रभू पाद में आन चर्चन करी
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।2।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

दुग्ध के फैन सम श्वेत अक्षत लिए,
आत्मनिधि प्राप्त हो पुंज रचना किए।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।3।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

बाग से फूल चुनकर यहाँ लाए हैं,
काम का रोग हरने शरण आए हैं।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।4।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ताजे नैवेद्य हम यह चढ़ाते अहा,
क्षुधा व्याधी नशे लक्ष्य मेरा रहा।।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।5।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

प्रज्ज्वलित दीप लेके करें आरती,
हृदय जागे मेरे ज्ञान की भारती।

कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥6॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप दश गंध ले अग्नि में जारते,
कर्म शत्रू प्रभु आप ही निवारते।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥7॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ये ताजे सरस थाल भर लाए हैं,
मोक्ष पद प्राप्त हो भावना भाए हैं।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥8॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि से स्वर्ण थाली भरें,
नाथ पद पूजते, सर्वसिद्धी करें।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही॥9॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(तोटक छन्द)

श्रावण कृष्ण दशें को भाई, गर्भ में आए कुन्थु जिनेश।
दिव्य रत्न देवों ने आकर, पृथ्वी पर वर्षाए विशेष॥1॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकम सुदि वैशाख बताई, नगर हस्तिनापुर शुभकार।
जन्म कल्याणक देव मनाए, हुई धरा पर जय जयकार।।2।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल पक्ष वैशाख सु एकम, दीक्षा धारे कुन्थूनाथ।
कामदेव चक्री पद छोड़ा, तीर्थकर पद पाए सनाथ।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल की तृतिया जानो, प्रगटाए प्रभु केवल ज्ञान।
इन्द्र शरण में आये मिलकर, समवशरण सुर रचे महान।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला तृतीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि वैशाख तिथी एकम को, कीन्हें प्रभु जी कर्म विनाश।
कूट ज्ञानधर से जिन स्वामी, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ गणधर पूजा

(सोरठा)

कुन्थु नाथ भगवान, के गणधर हैं श्रेष्ठतम।
सबमें हुए प्रधान, 'अमृतसेन' कहाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमृतसेन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'रत्नप्रभा' गणराज, कुन्थु नाथ भगवान के।
पाए शिव का ताज, कर्म नाश कर सर्व जो।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नप्रभा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अमितनाग' है नाम, कुन्थु नाथ के गणी का।
बारम्बार प्रणाम, जिनके चरणों में विशद ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमितनाग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री 'संभव' गणनाथ, सर्व कार्य सम्भव किए ।
झुका चरण में माथ, वन्दन करते भाव से ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री संभव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'अमलनाभ', कुन्थुनाथ जिनराज के।
करते चरण प्रणाम, संयम धारी जो हुए ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमलनाभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'शुभकर' हुए गणेश, कुन्थुनाथ भगवान के।
दिए विशद उपदेश, जग जीवों को श्रेष्ठतम।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तत्त्वनाथ' है नाम, कुन्थुनाथ के गणी का।
करते चरण प्रणाम, जिनके चरणों में विशद ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं तत्वनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

राज्य तजे गणराज, 'रज्यासी' है नाम शुभ।
पूजे सकल समाज, कुन्थु नाथ के गणी का ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं रज्यासि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कुन्थुनाथ भगवान, गणी 'पुरन्दर' गाए हैं।
करते हम गुणगान, भाव सहित जिनका विशद ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुरन्दर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'देवदत्त' गणनाथ, कुन्थु नाथ भगवान के।
पाने को हम साथ, पूज रहे हैं भाव से।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वासपदत' है नाम, गणधर कुन्थुनाथ के।
पाए मुक्ति धाम, पूज रहे जिनके चरण।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं वासपदत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कुन्थु नाथ भगवान, के गणधर 'विश्वरूप' हैं।
करते हम गुणगान, शिवपद पाने के लिए।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरूप गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तपस्तेज' तप धार, पाए गणधर का सुपद।
पाए भवदधि पार, कुन्थुनाथ की शरण में ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं तपस्तेज गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणनामक 'प्रतिबोध' कुन्थुनाथ भगवान के।
करके आस्रव रोध, कर्म निर्जरा जो किए ।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिबोध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'सिद्धार्थ' गणेश, सिद्धी हमको दीजिए।
पूजें भक्त विशेष, कुन्थुनाथ के गणी को ।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धार्थ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'संयम' हुए महान, गणधर कुन्थुनाथ के।
किए जगत कल्याण, पावन संयम धार के।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं संयम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कुन्थु नाथ के साथ, गणी 'अमलगण' जी हुए।
झुका चरण में माथ, पूजा करते भाव से ।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमलगण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(पद्धरि छन्द)

'देवेन्द्र' गणी जग में प्रधान, जो किए कर्म की पूर्ण हान।
जो कुन्थु नाथ के हैं गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवेन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'प्रवरकल' हैं महान, जिनकी है जग में अलग शान।
जो कुन्थु नाथ के हैं गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवरकल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'समभूप' हुए गणधर विशेष, जो कर्म नाश कीन्हें अशेष।
जो कुन्थु नाथ के हैं गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं समभूप गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हम 'मज्जि' गणी का करें ध्यान, जो प्राप्त किए कैवल्य ज्ञान।
जो कुन्थुनाथ के हैं गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं मज्जि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज कहाए हैं 'कुवेर', जो नाश कर्म कीन्हें अशेष ।
जो कुन्थुनाथ के हैं गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुवेर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिनवर 'नित्तुंग' हैं गणाधीश, जिन चरण झुकाएँ विशद शीश।
जो कुन्थुनाथ के हैं गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं नित्तुंग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मिवनन्दि' गणी निज का स्वरूप, ध्या करके पाए सिद्ध रूप।
जो कुन्थुनाथ के हैं गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं मिवनन्दि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'निमोही' सुगुण लीन, जो किए कर्म को पूर्ण क्षीण।
जो कुन्थुनाथ के हैं गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं निमोही गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'श्रवण' कहलाए आप, जो किए प्रभु का नाम जाप।
जो कुन्थुनाथ के है गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रवण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'समोद्धर' हैं महान, जो निज आतम का किए ध्यान।
जो कुन्थुनाथ के हैं गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं समोद्धर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'अरण्य' पाए सुनाम, जिन पद में करता जग प्रणाम।
जो कुन्थुनाथ के हैं गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरण्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर कहलाए हैं 'महेश' जो परम दिगम्बर धरे भेष।
जो कुन्थुनाथ के है गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहलाए 'पयाकुत' गणाधीश, ऋद्धीधारी पावन ऋषीश।
जो कुन्थु नाथ के है गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं पयाकुत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'नरोपम' कर्मनाश, शिवपुर में जाके किए वास।
जो कुन्थु नाथ के है गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं नरोपम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'निर्मित' गणधर हे ज्ञानवान, हम करें आपका गुणो गान।
जो कुन्थु नाथ के हैं गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मित गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री गणाधीश हैं 'अग्निदत्त' हम बने आपके प्रभू भक्त।
जो कुन्थुनाथ के हैं गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्निदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री 'ऊद्धलांग' पावन गणेश, जो ध्यान किए निज का विशेष।।
जो कुन्थुनाथ के हैं गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऊद्धलांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'अर्जवजीन' गणराज आप, हम करें आपका नाम जाप।
जो कुन्थुनाथ के हैं गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्जवजीन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पैंतीस हुए गणधर महान, जो निज आतम का किए ध्यान।
जो कुन्थुनाथ के हैं गणेश, हम पूज रहे नत हो विशेष।।36।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झों झ्रों कुन्थुनाथस्य अमृतसेनादि पंचत्रिंशत गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।
इति श्री कुन्थुनाथस्य अमृतसेनादि पंचत्रिंशत गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **त्रयपद धारी जिन हुए, कुन्थुनाथ भगवान।**
जयमाला वर्णन करें, करने प्रभु गुणगान।।

(कुसुमलता छन्द)

जम्बुद्वीप में नगर हस्तिनापुर, गाया है मंगलकार।
सूरसेन राजा कहलाए, रानी श्री मती मनहार।।1।।
सर्वार्थ सिद्धि से चयकर आये, गर्भागम पाए भगवान।
रत्न वृष्टि की तव देवों ने, प्रभु फिर पाए जन्म कल्याण।।2।।
इन्द्र राज ने मेरुगिरी पर, न्हवन कराया मंगलकार।
बकरा चिन्ह देखकर बोला, कुन्थुनाथ का जय-जयकार।।3।।
सहस पंचानवे वर्ष की आयू, तन पाए प्रभु स्वर्ण समान।
पैंतिस धनुष रही ऊँचाई, प्रभू जगाए भेद विज्ञान।।4।।
विजया लाए देव पालकी, वन में जाके कीन्हा ध्यान।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, प्रगटाए तव केवल ज्ञान।।5।।
चार योजन का समवशरण था, दिव्य देशना दिए महान।
भव्य जीव श्रद्धान जगाए, संयम धारे चरणों आन।।6।।

दोहा

सर्वकर्म का नाशकर, पाए पद निर्वाण।
सुर नरेन्द्र नर चरण में, विशद करें गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

महिमा जिनकी अगम है, अगम है जिनका ज्ञान।
अगम भक्ति करके मिले, जीवों को निर्वाण।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अरहनाथ पूजन-18

स्थापना (सखी छन्द)

जिनराज अरह कहलाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
आह्वानन् करते भाई, जो हैं शिव सौख्य प्रदायी॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(स्रग्विणी छन्द)

नीर गंगा का निर्मल सुगन्धित लिया,
जिन प्रभू के चरण में समर्पित किया।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दनादिक से प्रभु के चरण चर्चते,
दाह हो नाश भव की प्रभू अर्चते।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

शालि के पुञ्ज से पूजते नाथ को,
सुपद अक्षय में हमको प्रभू साथ दो।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

खिले सुरभित सुमन आज आए लिए,
शील गुण के हृदय में जलें अब दिए।

अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सद्य नैवेद्य लाए यहाँ थाल में,
पूजते आत्म तृप्ती हो तत्काल में।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप की ज्योति फैला सुतम वारती,
आरती कर वरें ज्ञान की भारती।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप खेते सुगन्धी हो आकाश में,
कर्म के नाश करने की हम आस में।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल चढ़ाते चरण में ये ताजे प्रभो!
मोक्ष की आश पूरी हो मेरी विभो।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ द्रव्यों का शुभ अर्घ्य हम यह किए,
प्राप्त शाश्वत सुपद हो हमारे लिए।

अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(मानव छन्द)

सुदी फागुन तृतिया शुभकार, गर्भ में आए अरह जिनेश।
दिव्य वर्षाए रत्न अपार, धरा पे आके इन्द्र विशेष।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि चतुर्दशी भगवान, जन्म ले किए जगत कल्याण।
बजाए भाँति-भाँति के वाद्य, बधाई किए नगर में आन।।2।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगा जिनके मन में वैराग, त्याग कर चले स्वजन परिवार।
रहा ना जिनके मन में राग, दशे सुदि मंगसिर तिथि शुभकार।।3।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी कार्तिक द्वादशी महान, प्रभु जी पाए केवल ज्ञान।
किए प्रभु जग में ज्ञान प्रकाश, बने तव भक्त चरण के दास।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमावस चैत कृष्ण की खास, किए प्रभु आठों कर्म विनाश।
किए शिवपुर को प्रभू प्रयाण, किया शिवपुर में प्रभु ने वास।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ गणधर पूजा

(केसरी छन्द)

गणनायक श्री कुन्थु कहाए, नाम 'सुषेण' दूसरा पाए।
अरहनाथ के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपथ गामी ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुषेण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'जलोद' गणराज निराले, सबके संकट हरने वाले ।
अरहनाथ के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपथ गामी ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं जलोद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दुर्लभ' गणी हुए शिवकारी, संयम धार बने अनगारी ।
अरहनाथ के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपथ गामी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुर्लभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मतिच' गणी मिथ्या मति नाशी, आप हुए शिवपुर के वासी।
अरहनाथ के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपथ गामी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मतिच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तानचेत' गणधर को ध्यायें, पद में सादर शीश झुकाएँ।
अरहनाथ के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपथ गामी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं तानचेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'योगेन्द्र' आप जग जेता, बने आप मुक्ति पथ नेता।
अरहनाथ के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपथ गामी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगेन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'लब्धकांति' हे गणी हमारे, जन जन के तुम बने सहारे।
अरह नाथ के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपथ गामी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं लब्धिकांति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऋषि 'आगोचर' हे गणधारी, तीन लोक में मंगलकारी ।
अरह नाथ के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपथ गामी ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं आगोचर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'वृषकेत' धर्म के धारी, तीन लोक में मंगलकारी ।
अरह नाथ के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपथ गामी ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हम 'नवरंग' गणी को ध्याएँ, जिनकी महिमा मंगल गाएँ।
अरह नाथ के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपथ गामी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं नवरंग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'संभ' गणी हो अतिशयकारी, महिमा तुमरी जग से न्यारी।
अरह नाथ के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपथ गामी।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं संभ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'परोपदेशी' जिन स्वामी, तुम उपदेश दिए जगनामी।
अरह नाथ के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपथ गामी।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं परोपदेशी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर आप 'करोत' कहाए, महिमा सारा, जग ये गाए ।
अरह नाथ के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपथ गामी।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं करोत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'जिनदेव' आप शिव कारी, सिद्ध शिला के तुम अधिकारी।
अरह नाथ के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपथ गामी।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनदेव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अर्हंनाथ' गणधर कहलाते, भव्य जनों से पूजे जाते।
अरह नाथ के गणधर स्वामी, पूज रहे हम शिवपथ गामी।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हंनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(अर्ध शम्भू)

'तपनी' गणधर ने तप करके, अपने कर्म नशाए हैं।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए हैं।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं तपनी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'मुक्तिदा' मुक्ती पाने के, साधन अपनाए हैं।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए हैं।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तिदा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'शिव' गन्धर्व गणी इस जग में, शिव की राह दिखाए हैं।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए हैं।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिवगंधर्व गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'परमोजत' गणधर की महिमा, जग के प्राणी गाए हैं।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए हैं।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमोजत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चलन' हुए गणनायक पावन, चाल चलन सिखलाए हैं।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए हैं।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं चलन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर श्री 'चिद्रूप' लोक में, चेतन शक्ति जगाए हैं।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए है।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं चिद्रूप गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दिव्य देशना 'हितकर' गणधर, जग को श्रेष्ठ सुनाए हैं ।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए हैं ।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं हितकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हम 'अत्रुद्ध' गणी की अर्चा, करके हर्ष मनाए हैं ।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए हैं।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं अत्रुद्ध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

सबका हित करने वाले गुरू, 'हितकर' गणी कहाए हैं।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए हैं।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं हितकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्थिरभूत' गणेश आपके, चरण शरण में आए हैं।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए हैं।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थिरभूत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री 'रक्तगण' के चरणों में, भाव सहित सिर नाए हैं।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए हैं।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं रक्तगण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर श्री 'प्रतंग' सभी को, दिव्य ध्वनि सुनाए हैं।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए हैं।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रतंग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'तिलोक' गणराज आपके, दर्शन को हम आए हैं।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए हैं।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं तिलोक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'भूयंग' हमारे, अतिशय कई दिखाए हैं ।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए हैं।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूयंग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'शुद्धांग' गणीन्द्र आपकी, अर्चा करने आए हैं।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए हैं।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर तीस हुए अविकारी, जो शिव पदवी पाए हैं ।
अरहनाथ के साथ में गणधर, की पूजा को आए हैं।।31।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों अरहनाथस्य कुन्थ्वादि त्रिंशत गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

इति श्री अरहनाथस्य कुन्थ्वादि त्रिंशत गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **आप हमारे देवता, आप हमारे नाथ।**
गुणमाला गाते-चरण, झुका भाव से माथ।।

(पाईता छन्द)

प्रभु अरहनाथ कहलाए, जो स्वर्ग से चयकर आए।
पितु भूप सुदर्शन जानो, माता मित्रावति मानो।।1।।

है गजपुर नगरी प्यारी, इक्ष्वाकु कुल मनहारी।
स्वर्गो से सुर बालाएँ, जो गर्भ को शोध कराएँ।।2।।
जब गर्भ में प्रभु जी आए, इस जग में मंगल छाए।
जब जन्म प्रभु जी पाए, सुर जन्म कल्याण मनाए।।3।।
प्रभु राज्य सम्पदा पाए, त्रयपद के धारी गाए।
चक्री के भोग ना भाए, सब छोड़ के दीक्षा पाए।।4।।
आतम का ध्यान लगाए, तब घाती कर्म नशाए।
फिर केवल ज्ञान जगाए, दिव्य ध्वनि आप सुनाए।।5।।
जग को सन्मार्ग दिखाए, मुक्ति श्री जिनवर पाए।
जो रत्नत्रय शुभ पाते, वे मोक्ष महल को जाते।।6।।

दोहा– **जिनवर हैं इस लोक में, शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध।**
पाए परमानन्द जिन, निज आतम कर शुद्ध।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **धन्य धन्य यह शुभ घड़ी, जिन पूजा की आज।**
सुख सम्पति सौभाग्य हो, मिले मोक्ष साम्राज्य।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री मल्लिनाथ पूजन-19

स्थापना (चाल छन्द)

जो मल्लिनाथ को ध्याते, वे विजय मोह पर पाते।
आह्वानन करने वाले, होते हैं जीव निराले।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अर्ध शम्भू छंद)

निज अनुभव अमृत जल पीकर, त्रिविध ताप का शमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

निज गुण का शीतल चंदन पा, भवाताप का हरण करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

मोती सम अक्षय अक्षत यह, श्री जिनेन्द्र के चरण धरें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

जिसके कारण जग में भटके, काम रोग का शमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

तन का पोषक क्षुधा रोग है, उसका अब अपहरण करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

विशद ज्ञान का दीप जलाकर, जीवन अपना चमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

भ्रमण कराया है कर्मों ने, उनका अब हम हनन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महा मोक्ष फल पाकर के हम, शिव नगरी को गमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पद अनर्घ पाकर के हम भी, निज चेतन को चमन करें।।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(मानव छन्द)

चैत सुदि एकम को जिनराज, गर्भ में आए जग के ईश।
धरा पर छाया मंगल कार, देव नर चरण झुकाए शीश।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि एकादशि शुभकार, जन्म ले आये मल्लि कुमार।
प्राप्त कीन्हे अतिशय दश आप, हुआ धरती पर हर्ष अपार।।2।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी एकादशि मगसिर माह, जगा प्रभु के मन में वैराग्य।
महाव्रत लिए आपने धार, बुझाए प्रभू राग की आग।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदि द्वितिया को भगवान, जगाए अनुपम केवल ज्ञान।
ध्यानकर घाती कर्म विनाश, देशना दे कीन्हे कल्याण।।4।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चमी फाल्गुन सुदी महान, किए प्रभु आठों कर्म विनाश।
चले अष्टम भू पे जिनराज, किए प्रभु सिद्ध शिला पे वास।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ गणधर पूजा

(छन्द)

श्री 'विशाखाचार्य' मुनीश्वर, गणधर पदवी पाए।
मल्लिनाथ के साथ पूजने, गणधर जी को आए।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं विशाखाचार्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चार ज्ञान के धारी गणधर, श्री 'प्रबोध' कहलाए।
मल्लिनाथ के साथ पूजने, गणधर जी को आए।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रबोध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'नन्दन' के चरणों, सादर शीश झुकाए।
मल्लिनाथ के साथ पूजने, गणधर जी को आए।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं नन्दन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर श्री 'अधंक' हमारे, जगत पूज्यता पाए।
मल्लिनाथ के साथ पूजने, गणधर जी को आए।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधंक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'करनातिच' गणधर की वाणी, सम्यक दर्श जगाए।
मल्लिनाथ के साथ पूजने, गणधर जी को आए।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं करनातिच गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चित्रकुवार' गणाधिप जानो, महिमा मयी कहाए।
मल्लिनाथ के साथ पूजने, गणधर जी को आए ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं चित्रकुवार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सदभट' गणी हैं उदभट ज्ञानी, केवलज्ञान जगाए।
मल्लिनाथ के साथ पूजने, गणधर जी को आए ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सदभट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'नवत' गणी ब्रिज गुण का सौरभ, इस जग में फैलाए।
मल्लिनाथ के साथ पूजने, गणधर जी को आए।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं नवत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'रत्नसार' गणनायक पावन, रत्नत्रय निधि पाए।
मल्लिनाथ के साथ पूजने, गणधर जी को आए ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नसार गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'प्रमत्त' गणराज आपकी, पावन महिमा गाए।
मल्लिनाथ के साथ पूजने, गणधर जी को आए ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रमत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मानकेत' गणराज मान तज, मार्दव धर्म जगाए।
मल्लिनाथ के साथ पूजने, गणधर जी को आए ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं मानकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी हुए 'उत्पात' लोक के, सब उत्पात नशाए।
मल्लिनाथ के साथ पूजने, गणधर जी को आए ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्ह उत्पात गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'भुजबल' निज शक्ति, से सब कर्म हराए।
मल्लिनाथ के साथ पूजने, गणधर जी को आए ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं भुजबल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कर्म युद्ध में 'युद्धकेत' गणि, विजय श्री को पाए।
मल्लिनाथ के साथ पूजने, गणधर जी को आए।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं युद्धकेत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(अर्ध जोगीरासा छन्द)

गणधर जी 'मघवान' कहाए, चार ज्ञान के धारी।
जिनकी पूजा अष्ट द्रव्य से, करते मंगलकारी।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं मघवान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर 'मोही' मोह के त्यागी, रत्नत्रय के धारी।
जिनकी पूजा अष्ट द्रव्य से, करते मंगलकारी।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोही गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'शिवसंग' संग के, त्यागी हैं अनगारी।
जिनकी पूजा अष्ट द्रव्य से, करते मंगलकारी।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिवसंग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'बुभुक्षा' क्षुधा रोग के, नाशी हैं शिवकारी।
जिनकी पूजा अष्ट द्रव्य से, करते मंगलकारी।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं बुभुक्षा गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जी 'भयदूर' कहाए, अतिशय के धारी।
जिनकी पूजा अष्ट द्रव्य से, करते मंगलकारी।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं भयदूर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'भोगता' भोग रोग से, विरहित संयम धारी।
जिनकी पूजा अष्ट द्रव्य से, करते मंगलकारी।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं भोगता गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पूर्ण 'मनोरथ' जग जीवों के, करने वाले भाई।
जिनकी पूजा अष्ट द्रव्य से, करते मंगलदायी।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनोरथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अखिल' विश्व में फैल रही है, गणधर की प्रभुताई।
जिनकी पूजा अष्ट द्रव्य से, करते मंगलदायी।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं अखिल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'निष्कषाय' गणधर ने पावन, शिव पदवी शुभ पाई ।
जिनकी पूजा अष्ट द्रव्य से, करते मंगलदायी।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कषाय गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'केत' गणी तीर्थंकर जिन के, बने श्रेष्ठ अनुयायी।
जिनकी पूजा अष्ट द्रव्य से, करते मंगलदायी।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं केत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सन्मुख' गणधर त्याग तपस्या, किए स्वयं अतिशायी।
जिनकी पूजा अष्ट द्रव्य से, करते मंगलदायी।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं सन्मुख गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बने 'महार्णव' जग जीवों के, गणधर आप सहाई।
जिनकी पूजा अष्ट द्रव्य से, करते मंगलदायी।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं महार्णव गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शिव वनिता 'अहमिन्द्र' गणी ने, खुश होके परणाई।
जिनकी पूजा अष्ट द्रव्य से, करते मंगलदायी।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहमिन्द्र गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'उच्यत' ने गुण की, बहु महिमा फैलाई।
जिनकी पूजा अष्ट द्रव्य से, करते मंगलदायी।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं उच्यत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रत्नत्रय धारी अट्ठाईस, गणधर जानो भाई।
मल्लिनाथ भगवान के पावन, गाए हैं शिव दायी।।।29।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों अरहना–थस्य विशाखाचार्यादि अष्टविंशति गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा। इति श्री अरहनाथस्य विशाखाचार्यादि अष्टविशंति गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– तीन लोक के नाथ जिन, जगती पति जगदीश।
गुणगावें सब भाव से, सुर नर पशु के ईश।।

(अवतार छन्द)

श्री मल्लिनाथ जिनराज, शिव पदवी पाए।
अपराजित से जिनराज, चयकर के आए।।1।।
मिथला नगरी के भूप, कुम्भ कहलाए हैं।
माँ प्रजावती के गर्भ, में प्रभु आए है।।2।।
इक्ष्वाकू नन्दन आप, चिन्ह कलश धारी।
है स्वर्ण समान सुदेह,जिनकी मनहारी।।3।।

है पच्चिस धनुष महान, तन की ऊँचाई।
आयू पचपन हज्जार, वर्ष की शुभगाई।।4।।
प्रभु तडित चमकता देख, दीक्षा को धारे।
फिर किए आत्म का ध्यान, किए सुर जयकारे।।5।।
प्रभु पाए केवल ज्ञान, आतम ध्यान किए।
भवि जीवों के हित हेत, देशना आप दिए।।6।।

दोहा

कर्म नशाए आपने, भव से पाया पार।
भव्य जीव चरणों 'विशद', नमन करें शतवार।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

भाते हैं हम भावना, पद में बारम्बार।
भक्त बने हम आपके, पाने भव से पार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन-20

स्थापना (सखी छन्द)

हैं मुनीव्रतों के धारी, श्री मुनिसुव्रत अविकारी।
हम निज उर में तिष्ठाते, पद सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सग्विणी छन्द)

शुद्ध यमुना के जल से ये झारी भरें,
नाथ के पाद में तीन धारा करें।

मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ चन्दन घिसाके कटोरी भरें,
नाथ पदाब्ज में चर्च के दुख हरें।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

श्वेत तन्दुल शशी रश्मि सम लाए हैं,
नाथ चरणों चढ़ा हम सुख पाए हैं।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ सुरभित सुगन्धित कुसुम ले लिए,
जिन प्रभू के चरण आज अर्पण किए।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस ताजे चरू यह बना लाए हैं,
क्षुधा व्याधी नशाने को हम आाए है।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप ज्योती जलाई ये हमने अहा,
मोह हरना मेरा लक्ष्य अन्तिम रहा।

मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥6॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप घट में सुरभि धूप की यह जले,
कर्म निर्मूल हों देह कांति मिले।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥7॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल ये ताजे चढ़ाते सरस फल भले,
मोक्ष की आश मेरी प्रभु अब फले
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥8॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

आठ द्रव्यों का यह अर्घ्य लाए सही,
प्राप्त हो नाथ हमको अब अष्टम मही।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥9॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

सावन वदि द्वितीया शुभकारी, मुनिसुव्रत जिन मंगलकारी।
माँ के गर्भ में चयकर आए, रत्नवृष्टि कर सुर हर्षाए॥1॥

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशें कृष्ण वैशाख बखानी, जन्म लिए मुनिसुव्रत स्वामी।
इन्द्र देव सेना ले आए, जन्मोत्सव पर हर्ष मनाए।।2।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्थिर भोग जगत के गाए, जान प्रभु जी दीक्षा पाए।
घोर सुतप कर कर्म नशाए, दशें कृष्ण वैशाख सुहाए।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमी कृष्ण वैशाख सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।
जगमग-जगमग दीप जलाए, सुरनर दीपावली मनाए।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि द्वादशी शुभकारी, मुक्ती पाए जिन त्रिपुरारी।
कूट निर्जरा से शिव पद पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रतनाथ गणधर पूजा

(चौपाई)

'मल्लि' हुए गणधर अविकारी, सम्यक् रत्नत्रय के धारी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मल्लि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'जगदवंद्य' गणधर अनगारी, गुण गाए हैं विस्मयकारी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगदवंद्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'प्रभेश' कर्म के जेता, आप बने शिव पथ के नेता।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभेश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'श्रुक्रोध' क्रोध परिहारी, शिव पद पाए मंगलकारी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रुक्रोध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणि 'अनन्तगति' आप कहाए, गुणानन्त तुमने प्रगटाए।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तगति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सालक' आप गणेश कहाए, अतिशयकारी प्रभुता पाए।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सालक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'द्रौपद' गणाधीश हितकारी, हुए आप दुर्गुण परिहारी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्रौपद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'बुध' गणधर बुध ग्रह के नाशी, पावन केवल ज्ञान प्रकाशी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं बुध गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तथांगिना' गणधर को ध्याएँ, कर्म नाश कर शिवपद पाएँ।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं तथांगिना गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश हैं 'पोद' हमारे, हम हैं जिनके चरण सहारे।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं पोद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'रविषेण' गणी शिवकारी, आप हुए संयम के धारी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं रविषेण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कुलकेशे' गणधर सदज्ञानी, पाएँ हैं जो मुक्ती रानी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुलकेशे गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अमर' गणी हैं मंगलकारी, हुए लोक में धर्म प्रचारी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'निष्पात' पाप तम नाशी, तुम हो विशद गुणों की राशि।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्पात गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मतिश्रुति' हुए आप द्वय ज्ञानी, अन्त में पाए शिव रजधानी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं मतिश्रुति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहे 'द्वितीकर' गणधर ज्ञानी, आप हुए हैं शिव वरदानी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए,जिनकी पूजा को हम आए।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वितीकर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'धारण' गणी धरणा पाए, अतिशय केवल ज्ञान जगाए।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं धारण गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सूरज' केवलज्ञान प्रकाशी,मोह महातम के हैं नाशी।
मुनिसुव्रत साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूरज गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हुए अठारह गणधर ज्ञाता, दिव्य देशना के जो दाता।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।19।।

ॐ ह्रीं श्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों मुनिसुव्रतनाथस्य अष्टादशमुनि गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

इति श्री मुनिसुव्रतनाथस्य मल्यादि अष्टादशमुनि गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **मुनिसुव्रत भगवान की, रही निराली चाल।**
भव सुख पाते जीव जो, गाते हैं जयमाल॥

(नरेन्द्र छन्द)

प्राणत स्वर्ग से मुनिसुव्रत जिन, चयकर के जब आये।
राजगृही में खुशियाँ छाईं, जग जन सब हर्षाए॥1॥
नृप सुमित्र के राज दुलारे, जय श्यामा माँ गाई॥
गर्भ समय पर रत्न इन्द्र कई, वर्षाये थे भाई॥2॥
तीन लोक में खुशियाँ छाईं, घड़ी जन्म की आई।
सहस्त्राष्ट लक्षण के धारी, बीस धनुष ऊँचाई॥3॥
न्हवन कराया देवेन्द्रों ने, कछुआ चिन्ह बताया।
बीस हजार वर्ष की आयू, श्याम रंग शुभ गाया॥4॥
उल्का पात देखकर स्वामी, शुभ वैराग्य जगाए।
पञ्च मुष्ठि से केश लुंचकर, मुनिवर दीक्षा पाए॥5॥
आत्म ध्यान कर कर्म घातिया, नाश किए जिन स्वामी।
केवल ज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए मोक्ष पथगामी॥6॥

दोहा

अष्टादश गणधर रहे, सुप्रभ प्रथम गणेश।
कूट निर्जरा से प्रभू, नाशे कर्म अशेष॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मुनिसुव्रत भगवान का, जपे निरन्तर नाम।
इस भव के सुख प्राप्त कर, पावे वह शिव धाम॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री नमिनाथ जिन पूजन-21

स्थापना (सखी छन्द)

जो जिनवर नमि को ध्याते, अपने उर में तिष्ठाते।
वे होते मुक्ती गामी, बनते हैं श्री के स्वामी॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छन्द)

साम्य सुधारस पाने जल यह, निर्मल चरण चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

भव संताप निवारण हेतू, चरणों गंध चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

पद अखण्ड पाने हे स्वामी, अक्षत धवल चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभि स्वात्म गुण को पाने हम, सुरभित सुमन-चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

उदराग्नी प्रशमन करने को, यह नैवेद्य चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह नाश कर ज्ञान जगाने, जगमग दीप जलाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्म जाल हम पूर्ण जलाने, सुरभित धूप जलाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण अतिन्द्रिय सुख फल पाने, फल यह सरस चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ्य शाश्वत पाने हम, अतिशय अर्घ्य चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

आश्विन वदि द्वितिया जानो, गर्भागम मंगल मानो।
सुर रत्न श्रेष्ठ वर्षाए, शुभ गर्भ कल्याण मनाए।।1।।

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी अषाढ़ वदि गाई, जन्मे नमि मंगल दाई।
शत इन्द्र शरण में आए, जो जन्म कल्याण मनाए।।2।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी आषाढ़ वदि स्वामी, दीक्षा धारे शिवगामी।
मन में वैराग्य जगाए, वन में जा ध्यान लगाए।।3।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर सुदि ग्यारस पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
सुर समवशरण बनवाए, उपदेश जीव तब पाए।।4।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदश वैशाख की गायी, मुक्ती पाए जिन भाई।
अपने सब कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथ गणधर की पूजा

(दोहा)

सौम गणी 'धर्म्माक' है, जिनका भी शुभ नाम ।
श्री नमि जिनके साथ हम, करते जिन्हें प्रणाम ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म्माक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'जम्बुक्ष' ने, किए अनेकों काम।
श्री नमि जिनके साथ हम, करते जिन्हें प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं जम्बुक्ष गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'केवली' हो स्वयं, पाए शिवपुर धाम।
श्री नमि जिनके साथ हम, करते जिन्हें प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवली गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'श्रुतकेवली' हो स्वयं, ध्याये आतम राम।
श्री नमि जिनके साथ हम, करते जिन्हें प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतकेवली गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश जी 'विष्णु' इस, जग में हुए महान।
श्री नमि जिनके साथ हम, करते हैं गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं विष्णु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'गजानन' की रही, विशद निराली शान।
श्री नमि जिनके साथ हम, करते जिन्हें प्रणाम ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं गजानन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'आरोधक' गणधर हुए, दायक शिव वरदान।
श्री नमि जिनके साथ हम, करते जिन्हें प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं आरोधक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'जगतपति' गणराज ने, दिया ज्ञान का दान।
श्री नमि जिनके साथ हम, करते जिन्हें प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगतपति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चिन्तागति' गणधर किए, इस जग का कल्याण।
श्री नमि जिनके साथ हम, करते जिन्हें प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं चिन्तागति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणपति हुए 'अनेन' जी, विशद गुणों की खान।
श्री नमि जिनके साथ हम, करते जिन्हें प्रणाम।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनेन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'नरलोक' ने, विशद लगाया ध्यान।
श्री नमि जिनके साथ हम, करते जिन्हें प्रणाम।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं नरलोक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'श्रेणी' श्रेण्यारोह कर, पाए पद निर्वाण।
श्री नमि जिनके साथ हम, करते जिन्हें प्रणाम।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेणी गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधीश 'मुक्तांग' ने, पाए सुगुण प्रधान।
श्री नमि जिनके साथ हम, करते जिन्हें प्रणाम।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

गणधर श्री 'अनुभूत' ने, पाया केवल ज्ञान।
श्री नमि जिनके साथ हम, करते जिन्हें प्रणाम।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनुभूत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'चारूषन' की रही, महिमा अपरम्पार।
नमि जिनवर के साथ हम, पूज रहे शुभकार।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं चारुषन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'ऋजम्बू' आप हो, शिवपद के आधार।
नमि जिनवर के साथ हम, पूज रहे शुभकार।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऋजम्बू गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हुए 'जरतु' गणराज शुभ, अतिशय मंगलकार।
नमि जिनवर के साथ हम, पूज रहे शुभकार ।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं जरतु गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सत्रह गणधर ने स्वयं, धारा पद अनगार।
नमि जिनवर के साथ हम, पूज रहे शुभकार।।18।।

ॐ ह्रीं ह्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों नमिनाथस्य सोमादि सप्तदश गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

इति श्री नमिनाथस्य सोमादि सप्तदशगणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **चेतन गुण में लीन नित, रहते नमि जिनराज।**
जयमाला गाए चरण, मिलकर सकल समाज।।

(रोला छन्द)

अपराजित से नाथ, चयकर भूपर आये।
मिथला नगरी को आकर, के धन्य बनाए।।1।।
विजय राज पितु जान, इक्ष्वाकु वंश कहाए।
मात वप्रिला नाथ, चिन्ह कमल सित पाए।।2।।
आयू दश हज्जार वर्ष, की पाए स्वामी।
साठ हाथ का उच्च, तन पाए शिवगामी।।3।।
जातिस्मरण कर प्राप्त, प्रभु वैराग्य जगाए।
लक्षण सहसरु आठ, देह में प्रभु प्रगटाये।।4।।

सहस भूप जिनराज, के संग दीक्षा पाए।
घाती कर्म विनाश, केवल ज्ञान जगाए॥5॥
गणधर सत्रह श्रेष्ठ, सुप्रभ प्रथम कहाए॥
करके कर्म विनाश, नमि जिन मुक्ती पाए॥6॥

दोहा– **तीर्थराज सम्मेदगिर, कूट मित्र धर जान।**
जिन प्रभु मुक्ती पाए हैं, रहे हृदय में ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **नमीनाथ भगवान के, गुण हैं उपमातीत।**
भक्त मुक्ति पावे 'विशद', धारें गुण में प्रीत॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री नेमिनाथ पूजन-22

स्थापना (सखी छन्द)

जिनको जग भोग ना भाए, वे मुक्ती पथ अपनाए।
हे नेमिनाथ जगनामी, आह्वानन् करते स्वामी॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(भुजंग प्रयात)

प्रभु के चरण तीन धारा कराएँ,
सभी पाप मल धोके पावन कहाएँ।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

कपूरादि चंदन महांगध लाए,
परम मोक्ष गामी की पूजा को आए।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

धुले शालि तन्दुल धरें पुञ्ज आगे,
निजानन्द पाएँ सभी शोक भागें
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुगंधित सुमन ले बनाई ये माला,
चढ़ाते चरण काम को मार डाला।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस मिष्ठ नैवेद्य ताजे बनाएँ,
प्रभू पूजते भूख व्याधी नशाएँ।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जले ज्योति कर्पूर की ध्वांत नाशें,
करें आरती ज्ञान ज्योती प्रकाशें।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुगन्धित सुरभि धूप खेते अगनि में,
सभी कर्म की भस्म हो एक क्षण में।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फलादि ताजे ये चरणों चढ़ाएँ,
मिले मोक्ष फल नाथ शिव सौख्य पाएँ
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक गंध आदिक मिला अर्घ्य लाए,
सुपद श्रेष्ठ शाश्वत प्रभू पाते आए।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया।
कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भ मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्मे जिन अन्तर्यामी।
भू पे छाई उजियाली, पा दिव्य दिवाकर लाली।।2।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां जन्म मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई।
पशुओं का बन्धन तोड़ा, इस जग से मुख को मोड़ा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां तप मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन सुदि एकम जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।
शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए।।4।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठे आषाढ़ सुदि गाई, भव से प्रभु मुक्ती पाई।
नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बन्धन तोड़े।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ गणधर पूजा

(सखि छन्द)

'वरदत्त' गणी मनहारी, थे रत्नत्रय के धारी।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, जिन पद भी अर्घ्य चढ़ाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं वरदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'खड्गानन' गणी निराले, भवतम को हरने वाले।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, जिन पद भी अर्घ्य चढ़ाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं खड्गानन गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मनगत' गणधर मनहारी, हैं शिवपद के अधिकारी।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, जिन पद भी अर्घ्य चढ़ाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनगत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'दंत' गणी जग जेता, कर्मों के आप विजेता।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, जिन पद भी अर्घ्य चढ़ाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं दंत गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन गणी 'सकोसल' गाए, जो केवलज्ञान जगाए।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, जिन पद भी अर्घ्य चढ़ाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं सकोसल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मणिदीप' गणी अविकारी, तुम हो संयम के धारी।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, जिन पद भी अर्घ्य चढ़ाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मणिदीप गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'मदुर्य' कहाए, सद्ज्ञान का दीप जलाए।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, जिन पद भी अर्घ्य चढ़ाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मदुर्य गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'मेघनाथ' अनगारी, हो पावन धर्म प्रचारी।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, जिन पद भी अर्घ्य चढ़ाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मेघनाथ गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणि 'सुन्दर तल' कहलाए, जो केवल ज्ञान जगाए।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, जिन पद भी अर्घ्य चढ़ाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुन्दर तल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'कदम्बक' ज्ञानी, हैं शिव पद के वरदानी।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, जिन पद भी अर्घ्य चढ़ाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं कदम्बक गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'ज्येष्ट' गणी शिवदायी, फैली तुमरी प्रभुताई।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, जिन पद भी अर्घ्य चढ़ाएँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं जयेष्ट गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ग्यारह गणधर कहलाए, जो जगत पूज्यता पाए।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, जिन पद भी अर्घ्य चढ़ाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों नेमिनाथस्य वरदत्तादि एकादश गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।।

इति श्री नेमीनाथस्य एकादश गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा– **जिन अर्चा जो भी करें, वे हों मालामाल।**
नेमिनाथ भगवान की, गाएँ नित गुणमाल॥

(तोटक छन्द)

जय नेमिनाथ चिद्रूपराज, जय जय जिनवर तारण जहाज।
जय समुद्र विजय जग में महान, प्रभु शिवादेवि के गर्भ आन॥1॥
अनहद बाजों की बजी तान, सुर पुष्प वृष्टि कीन्हे महान।
सुर जन्म कल्याणक किए आन, है शंख चिन्ह जिनका प्रधान॥2॥
ऊँचाई चालिस रही हाथ, इक सहस आठ लक्षण सनाथ।
है श्याम रंग तन का महान, इस जग में जिनकी अलग शान॥3॥
जीवों पर करुणा आप धार, मन में जागा वैराग्य सार।
झंझट संसारी आप छोड़, गिरनार गये रथ आप मोड़॥4॥
कर केश लुंच व्रत लिए धार, संयम धारे हो निर्विकार॥
फिर किए आत्म का प्रभू ध्यान, तब जगा आपको विशद ज्ञान॥5॥
तब दिव्य देशना दिए नाथ, सुर नर पशु सुनते एक साथ।
फिर करके सारे कर्म नाश, गिरनार से पाए मोक्ष वास॥6॥

दोहा

भोगों को तज योग धर, दिए 'विशद' सन्देश।
वरने शिव रानी चले, धार दिगम्बर भेष॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

गुणाधार योगी बने, अपनाया शिव पंथ।
मोक्ष महल में जा बसे, किया कर्म का अंत॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन-23

स्थापना (सखी छन्द)

उपसर्गों पर जय पाए, वह पार्श्वनाथ कहलाए।
जिनकी महिमा जग गाए, हम आह्वान् को आए।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

क्षीरोदधि का पय सम जल प्रभु, धारा देने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

मलयागिर चन्दन केसर घिस, चरण चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय सुख पाने को अक्षत, पुञ्ज चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरतरु के यह सुमन मनोहर, नाथ चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

घृत के यह नैवेद्य सरस शुभ, ताजे नाथ बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

गौघृत भर कंचन दीपक में, दीपक ज्योति जलाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कृष्णागरू की धूप बनाकर, अग्नी बीच जलाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपारी, थाल में श्रीफल लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत आदिक से, हम यह अर्घ्य बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

वैशाख कृष्ण द्वितिया प्रभू, पाए गर्भ कल्याण।
चय हो अच्युत स्वर्ग से, भूपर किए प्रयाण।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारस नाथ।
सुर नरेन्द्र देवेन्द्र सब, चरण झुकाए माथ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, छोड़ दिया परिवार।
संयम धारण कर बने, पार्श्व प्रभू अनगार।।3।।

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण वदि चौथ को, पाए केवल ज्ञान।
समवशरण रचना किए, आके देव प्रधान।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, करके आतम ध्यान।
कर्म नाश करके प्रभू, पाए पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ गणधर पूजा

(मोतियादाम छन्द)

'स्वयंभू' गणधर हुए महान, जगाए हैं जो केवलज्ञान।
पार्श्व जिन के गणराज प्रधान, करें हम जिनका शुभ गुणगान ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभू गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'हलि' हुए गुणों की खान, करें जो सम्यक ज्ञान प्रदान।
पार्श्व जिन के गणराज प्रधान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं हलि गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'नतबल' का अनुपम ज्ञान, प्राप्त कीन्हें हैं पद निर्वाण।
पार्श्व जिन के गणराज प्रधान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं नतबल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हुए 'निलंगद' सुगुण निधान, किए इस जग का जो कल्याण।
पार्श्व जिन के गणराज प्रधान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं निलंगद गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'महानील' हुए विद्वान, जगाए हैं जो चौथा ज्ञान
पार्श्व जिन के गणराज प्रधान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।5।।।

ॐ ह्रीं अर्हं महानील गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'पुरुषोत्तम' ने कर ध्यान, प्राप्त की निज गुण की पहचान।
पार्श्व जिन के गणराज प्रधान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषोत्तम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी पाए हैं नाम प्रधान, जगत में रही निराली शान।
पार्श्व जिन के गणराज 'भूनान', करें हम जिनका शुभ गुणगान ।।7।।
ॐ ह्रीं अर्हं भूनान गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणी 'सम्यक्त' गाए अनगार, सुगुण जो पाए मंगलकार।
पार्श्व जिन के गणराज प्रधान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।8।।
ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणाधिप 'देवगने' अविकार, किए हैं पावन धर्म प्रचार।
पार्श्व जिन के गणराज प्रधान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।9।।
ॐ ह्रीं अर्हं देवगने गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'ज्ञानगोचर' हैं जिन गणराज, हुए जो तारण तरण जहाज।
पार्श्व जिन के गणराज प्रधान, करें हम जिनका शुभ गुणगान ।।10।।
ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानगोचर गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हुए गणधर दश महति महान, जगाए जो मनःपर्यय ज्ञान।
पार्श्व जिन के गणराज प्रधान, करें हम जिनका शुभ गुणगान।।11।।
ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्र यफट् विचक्राय झ्रों झ्रों पार्श्वनाथस्य स्वयंभू आदि दश गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।
इति श्री पार्श्वनाथस्य स्वयंभू आदि दश गणधरेभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **ध्यान लगाया आपने, जीते सब उपसर्ग।**
गुण माला गाते विशद, पाने हम अपवर्ग।।

(राधेश्याम छन्द)

इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सुरेन्द्र, गणेन्द्र सुमहिमा गाते हैं।
जिनवर के पञ्च कल्याणक में, खुश हो जयकार लगाते हैं।।1।।

जब गर्भागम में प्रभु आते, तब रत्न वृष्टि करते भारी।
यह तीर्थंकर प्रकृति का फल, इस जग में गाया शुभकारी।।2।।
जब जन्म कल्याणक होता है, तब यशोगान सुर करते हैं।
तीनों लोकों के जीव सभी, उस समय भाव शुभ करते हैं।।3।।
इस जग में रहकर के स्वामी, इस जग में न्यारे रहते हैं।
सबसे रहते हैं वह विरक्त, सब उनको अपना कहते है।।4।।
गुणगान करें सब जीव सदा, यह पुण्य की ही बलिहारी है।
जो उभय लोक में जीवों को, होता शुभ मंगलकारी है।।5।।
सब कर्म नाश करके स्वामी, मुक्ती पथ पर बढ़ जाते हैं।
है शिवनगरी में सिद्धशिला, जिस पर निज धाम बनाते हैं।।6।।

दोहा– **यह संसार असार है, जान सके ना नाथ।**
आज ज्ञान हमको हुआ, अतः झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– **भक्त कई तारे प्रभू, आई हमारी बार।**
पास बुलालो शीघ्र ही, अब ना करो अवार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री महावीर पूजन-24

हैं वीतरागता धारी, श्री महावीर अनगारी।
निज उर में हम तिष्ठाते, जिन पद में शीश झुकाते।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(लक्ष्मीधरा-छन्द)

तीर्थवारी से यह स्वच्छ झारी भरें,
तीर्थ कर्तार के पाद धारा करें।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

स्वर्ण के सदृश यह गंध हम लाए हैं,
राग की दाह को मैटने आए हैं।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥2॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

सूर्य रश्मी सदृश श्वेत अक्षत किए,
आत्म निधि प्राप्त हो पुञ्ज आए लिए
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥3॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ सुरभित कुसुम थाल में भर लिए,
काम व्याधी हमारी प्रभू नाशिए।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥4॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस चरु यह बना लाए हैं थाल में,
क्षुधा व्याधी हरो नाथ पूजें तुम्हें।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥5॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

कर रहे नाथ चरणों में हम आरती,
चित्त में अब जगे ज्ञान की भारती।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।6।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप सुरभित प्रभू अग्नि में खेवते,
कर्म शत्रू जलें आप पद सेवते।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।7।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से पूजा रचाते हृदय मम खिले,
नाथ पद पूजते सर्व सिद्धी मिले।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।8।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि से स्वर्ण थाली भरें,
शीघ्र शिवसुन्दरी नाथ हम भी वरें।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।9।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

षष्ठी आषाढ़ सुदि पाए, सुर रत्न की झड़ी लगाए।
चहुँ दिश में छाई लाली, मानो आ गई दिवाली।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस सुदि चैत की आई, जन्मोत्सव की घड़ी पाई।
प्राणी जग के हर्षाए, खुश हो जयकार लगाए।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सित दशमी गाई, प्रभु ने जिन दीक्षा पाई।
मन में वैराग्य जगाया, अन्तर का राग हटाया।।3।।

ॐ ह्रीं मगसिर वदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सु दशमी पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
सुर समवशरण बनवाए, जिन दिव्य ध्वनि सुनाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला दशमी केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सांकल तोड़े, मुक्ती से नाता जोड़े।
कार्तिक की अमावस पाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्यायां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर गणधर पूजा

(पद्धरि छन्द)

हे 'इन्द्रभूति' गणधर प्रधान, तुम पाये हो केवल्य ज्ञान।
हे वीर प्रभू के गणाधीश, हम झुका रहे तव चरण शीश।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं इन्द्रभूति गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'नागोत्तम' गणधर महान, हे नाथ आप गुण के निधान।
हे वीर प्रभू के गणाधीश, हम झुका रहे तव चरण शीश।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं नागोत्तम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज कहाए 'महादत्त', जो वीर प्रभू के हुए भक्त ।
हे वीर प्रभू के गणाधीश, हम झुका रहे तव चरण शीश।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं महादत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गुरू 'सुदत्तकेश' गणपति विशेष, जो कर्म नशाए हैं अशेष।
हे वीर प्रभू के गणाधीश, हम झुका रहे तव चरण शीश।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुदत्त केश गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'सुकोमल' है सुनाम, जिनके चरणों शत् शत् प्रणाम।
हे वीर प्रभू के गणाधीश, हम झुका रहे तव चरण शीश।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुकोमल गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'बहुदत्त' आप हो सुगुणवान, तुम देते हो सद्ज्ञान दान।
हे वीर प्रभू के गणाधीश, हम झुका रहे तव चरण शीश।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं बहुदत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हे 'उर्द्धलांग' सम्यक्त्व वान, जो जिन आतम का किए ध्यान।
हे वीर प्रभू के गणाधीश, हम झुका रहे तव चरण शीश।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं उर्द्धलांग गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मददत्त' गणी मद से विहीन, जो रहे सुगुण में स्वयं लीन।
हे वीर प्रभू के गणाधीश, हम झुका रहे तव चरण शीश।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मददत्त गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'गौतम' कहलाए हैं गणेश, शुभ किए साधना जो विशेष।
हे वीर प्रभू के गणाधीश, हम झुका रहे तव चरण शीश।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं गौतम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणराज 'सरोत्तम' हैं महान, जो किए कर्म की पूर्ण हान।
हे वीर प्रभू के गणाधीश, हम झुका रहे तव चरण शीश।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं सरोत्तम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कहलाए 'निरोत्तम' जी गणेश, जिनको हम ध्याते हैं विशेष।
हे वीर प्रभू के गणाधीश, हम झुका रहे तव चरण शीश।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरोत्तम गणधराय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर जिनके ग्यारह महान, जो प्राप्त किए हैं ज्ञान भान ।
हे वीर प्रभू के गणाधीश, हम झुका रहे तव चरण शीश।।12।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेयफट् विचक्राय झ्रों झ्रों महावीर स्वामीनः इन्द्रभूत्यादि एकादश गणधरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इति श्री महावीर स्वामिनः एकादश गणधरेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा– **हुआ नहीं होगा नहीं, महावीर सा वीर।**
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव का तीर।।

(गीता छन्द)

सिद्धार्थ नृप के पुत्र हैं, महावीर जिन कहलाए हैं।
चयकर प्रभू जी स्वर्ग से, कुण्डलपुरी में आए हैं।।1।।
पाए प्रभू जी गर्भ अन्तिम, मात त्रिशला जानिए।
जिन मात देखे स्वप्न सोलह, नाथ वंशी मानिए।।2।।
शुभ जन्म कल्याणक समय पर, न्हवन मेरू पर किए।
शत् इन्द्र चरणों भक्ति से, नत ढोक चरणों में दिए।।3।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर जिन कहलाए हैं।
केहरि सुलक्षण दाएँ पग में, महावीर जिनवर पाएँ हैं।।4।।
शुभ जाति स्मृति से प्रभू, वैराग्य मन प्रगटाए हैं।
जग भोग ना भाए जिन्हें, संयम 'विशद' अपनाए हैं।।5।।
प्रभु ध्यान कर निज आत्म का, केवल्य ज्ञान जगाए हैं।
कर कर्म घाती नाश जिन, अनन्त चतुष्टय पाए हैं।।6।।

दोहा– **ज्ञान ध्यान तप कर प्रभू, कीन्हे कर्म विनाश।**
मुक्त हुए संसार से, पाए शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **पूजा करने के लिए, द्रव्य लाए यह शुद्ध।**
सम्यकदर्शन ज्ञान हम, पाएँ चरण विशुद्ध॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

जाप

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रेफट् विचक्राय स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

जयमाला

दोहा

चौबीसों तीर्थेश के, गणधर हुए विशेष।
चौदह सौ वावन कहे, धरे दिगम्बर भेष॥
तीर्थंकर गणधर मुनी, होते पूज्य त्रिकाल ।
चौंषठ ऋद्धीवान की, गाते हैं जयमाल ॥

(शम्भु छन्द)

निर्मल मन अविकारी जिनका, अनुपम गुण के कोष रहे।
गणनायक तीर्थंकर जिनके, ज्ञानी गणधर देव कहे॥
जो मति श्रुत अवधि मनःपर्यय, शुभ चार ज्ञान के धारी हैं।
जो भौतिक तत्त्वों के ज्ञाता, अरु पूर्ण रूप अविकारी हैं॥1॥
शुभ परम ज्ञान गंगाधारी, पर मत का खण्डन करते हैं ।
अनेकांत भाव पाने वाले, गुरु पंच महाव्रत धरते हैं॥
जो अंग पूर्व के धारी हैं, अष्टांग निमित्त के ज्ञाता हैं।
शुभ दिव्य देशना झेल रहे, जग में भव्यों के त्राता हैं॥2॥
गुरु अष्टऋद्धि के धारी हैं, जिन प्रज्ञा श्रमण कहाते हैं।
शुभ स्वप्न शकुन ज्योतिष ज्ञाता, तन परमौदारिक पाते हैं॥
जो अनेकांत के धारी हैं, एकान्त ध्यान में लीन रहे।
हैं परम अहिंसा व्रतधारी, गणधर जिनेन्द्र के श्रेष्ठ कहे॥3॥

गुरु घोर पराक्रम के धारी, जो घोर परीषह सहते हैं।
हर एक विषमता को सहकर, जो शान्त भाव से रहते हैं।।
तीर्थंकर जिन के दिव्य वचन, ॐकार रूप से आते हैं।
किरणों की प्रखर रोशनी सम, गणधर में आन समाते हैं।।4।।
जिनदेव महोदधि हैं अनन्त, जिसका होता न अंत कहीं।
शत् इन्द्र चक्रवर्ती आदिक, जिन संत समझते पूर्ण नहीं।।
गणधर गूँथित जैनागम ही, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता है।
रत्नत्रय धर्म प्रदायक है, जो मोक्ष महल का दाता है।।5।।
जिनधर्म धारकर भवि प्राणी, कर्मों का पूर्ण विनाश करें।
फिर अनन्त चतुष्टय को पाकर, जिन केवल ज्ञान प्रकाश करें।।
हम तीन काल के तीर्थंकर, गणधर पद शीश झुकाते हैं।
अब गुण पाने जिन गणधर के, हम चरण शरण को पाते हैं ।।6।।

(छन्द घत्तानन्द)

जिन पद अनुगामी, गणधर स्वामी, मोक्षमार्ग के पथगामी।
जय गणधर स्वामी, तुम्हें नमामी, द्रव्य भाव श्रुतधर नामी।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रों झ्रों नमः श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां श्री वृषभसेनादि एक सहस्र चतुर्शत द्विपंचाशत गणधरेभ्यो पूर्ण अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा– **तीर्थंकर के पद नमूँ, गणधर करूँ प्रणाम।**
पुष्पांजलि करके 'विशद', पाऊँ मुक्तिधाम।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

मुक्तक

ना दौलत की तमन्ना है, ना चाहत है सितारों की।
ना डोली की जरूरत है, जरूरत ना कहारों की।।
ना आने की शिकायत है, शिकायत ना दूसरों की।
बसे हो आप जब दिल में, जरूरत क्या बहरों की।।

गणधर वलय आरती

गणधर जी अविकार हैं, अतिशय मंगलकार हैं।
चौबिस जिन के गणधर की हम, करते जय-जयकार हैं।।
जिन तीर्थंकर केवलज्ञानी अनन्त चतुष्टय पाते जी।
स्वर्ग लोक के देव सभी मिल, समवशरण बनवाते जी।।
गणधर जी...

दिव्य देशना देकर जिनवर, भव्यों का तम हरते हैं।
चार ज्ञान के धारी गणधर, उसको झेला करते हैं।।
गणधर जी...

नर तिर्यंच अरू देव सभी मिल, समवशरण में आते हैं।
अपनी-अपनी भाषा में गुरु, अलग-अलग समझाते हैं।।
गणधर जी...

दीक्षा धारण करते ही मुनि, चार ज्ञान प्रगटाते हैं।
मति श्रुत अवधि मनःपर्यय शुभ, चार ज्ञान यह पाते हैं।।
गणधर जी...

विशद साधना करने वाले, आतम ज्ञान जगाते हैं।
बुद्धि विक्रिया चारण आदिक, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ पाते हैं।।
गणधर जी...

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्थ परम्परायां श्री आदिसागरायचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री विमलसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री भरतसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री विरागसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्तार्न्गत श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर अम्बाबाड़ी जयपुर मासोत्तम मासे शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां बुधवासरे श्री गणधर विधान रचना समाप्तं इति शुभं भूयात् ।

आचार्य विशदसागर जी पूजन

(स्थापना)

वीर प्रभु के अनुयायी तुम, विशद सिंधु आचार्य प्रवर।
विराग सिंधु से दीक्षा पाए, हम सबके तुम हो गुरुवर।।
इन गुरु शिष्य की गरिमा से यह, हर्षाया सारा अम्बर।
परम पूज्य गुरुवर का अनुपम, जयकारा गूंजा घर-घर।।
हे गुरुवर! मम हृदय विराजो, अभिलाषा यह है मेरी।
पुष्पों की अंजलि भरकर के, करें स्थापना हम तेरी।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

गंगा में डुबकी लगा-लगा, अपने को पावन बतलाया।
अब कर्म कलंक मिटाने को, गुरु चरणों में जल ले लाया।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर की पूजा से सचमुच, हृदय कली मम् खिल जाती।
चन्दन से पूजा भवाताप को, दूर हटा सुख दिलवाती।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद की प्राप्ति हेतु शुभ, जहाँ से गुरु के कदम बढ़े।
उस जनम क्षेत्र के कण-कण को, मेरे यह अक्षत पुंज चढ़े।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बागों से चुन-चुनकर सुरभित, पुष्पों के थाल सजाए हैं।
निज काम बाण विध्वंस हेतु, गुरुचरण शरण में आए हैं।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक फेनी घेवर आदिक, यह शुभ पकवान बना लाए।
अब निज की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चढ़ाने को आये।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम रत्न जड़ित घृत के दीपक, यह चरण शरण में लाये हैं।
मिट जाये अब अज्ञान तिमिर, गुरु चरणों में हम आये हैं।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धूपदान में धूप जलाएँ, दश दिश धूप उड़े भारी।
बहु जनम-जनम के संचित भी, कर्मों की पूर्ण जले क्यारी।।

आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

शुभ मोक्ष सुफल की चाह में गुरु ने नग्न दिगम्बर व्रत पाया।
प्रभुवर के बनकर लघुनन्दन, शुभ मोक्ष मार्ग को अपनाया।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि. स्वाहा।

यह अष्टद्रव्य की सामग्री, मेरी पूजा का साधन है।
गुरु भक्ति हम कर सकते बस, दुर्गति का सहज निवारण है।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **विशद गुरु की भक्ति ही, मम जीवन आधार।**
युगों-युगों तक हम नहीं, भूलेंगे उपकार।।

चौपाई

जयवंतो गुरुदेव हमारे, हैं अनंत उपकार तुम्हारे।
जिन शासन के आप सितारे, जग में रहते जग से न्यारे।।
ग्राम कुपी जग में अलबेला, नाथूराम घर लगा था मेला।
माँ इंदर के प्यारे नंदा, अपने घर के तुम हो चंदा।।
नाम रमेश आपका गाया, भवि जीवों के मन को भाया।
आप गये गुरुवर के द्वारे, छोड़ के जग के सभी सहारे।।
बचपन से ही तुमने पाया, महामंत्र नवकार को ध्याया।
तप्त स्वर्ण सम तन है न्यारा, दर्शन से मिटता संसारा।।

श्रद्धा से फिर शीश झुकाया, विराग सिन्धु को गुरु बनाया।
सन् छियानवे में दीक्षा पाई, आप बने फिर शिव के राही।।
धन्य द्रोणगिरि कीन्हें गलियाँ, खिलीं त्याग संयम की कलियाँ।
दृढ़ता से संयम को पाले, जिन आगम के हो रखवाले।।
मालपुरा में टोंक जिला है, गुरुवर का सौभाग्य जगा है।
बसंत पंचमी का दिन पाये, विशदसिन्धु आचार्य बनाये।।
परमेष्ठी आचार्य कहाए, भरत सिन्धुजी गुरुवर पाये।
तीन गुप्ति द्वादश तप धारे, क्षमा आदि दश धर्म संवारे।।
पंचाचार आपने धारे, षट् आवश्यक पालन हारे।
छत्तिस मूल गुणों के धारी, सारा जग पद में बलिहारी।।
पद से अति निस्पृह रहते हैं, जो करते हैं वह कहते हैं।
गुरुकृपा के पंख जो पाते, साधक ध्यान गगन में जाते।।
गुरुवर ही तकदीर संवारे, हारे को बन जायें सहारे।
कई विधान तुमने रच डाले, भक्त जनों के किये हवाले।।
गुरु के सम्मुख सूरज फीका, लगता है चंदा भी नीचा।
दुर्लभ वस्तु सुलभ हो जाती, गुरु कृपा जब रंग दिखाती।।
हम धरते हैं ध्यान तुम्हारा, जानो सब मन्तव्य हमारा।
सर्व समन्दर स्याही घोलूँ, गुरु गुण को मैं कैसे बोलूँ।।
स्वर्ग सुखों की चाह नहीं है, निज दुख की परवाह नहीं है।
गुरु की भक्ति जो भी करते, कोष पुण्य से वो हैं भरते।।

दोहा – **मेरे मन की आस है, सपना हो साकार।**
मुक्ती के राही बनें, शिवपुर में हो वास।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहोभाग्य है मेरा गुरुवर, दर्श करें दो नयनों से।
विशद गुरु का गुण गाएँ हम, तन से मन से वचनों से।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्

– ब्र. सपना दीदी

आचार्य विशद सागर जी महाराज की आरती

(तर्ज : माई री मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा....।)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के .....
ग्राम कूपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री सभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपोश्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयासनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री योगमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पत्तिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्त्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
58. श्री दशलक्षण धर्म विधान
59. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
60. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
61. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
62. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
63. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
64. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
65. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
66. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
67. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
68. त्रिविधान संग्रह–1
69. पंच विधान संग्रह
70. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
71. लघु धर्म चक्र विधान
72. अर्हत महिमा विधान
73. सरस्वती विधान
74. विशद महाअर्चना विधान
75. विधान संग्रह (प्रथम)
76. विधान संग्रह (द्वितीय)
77. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
78. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
79. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
80. अर्हत नाम विधान
81. सम्यक् अराधना विधान
82. लघु नवदेवता विधान
83. लघु मृत्युंजय विधान
84. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
85. मृत्युञ्जय विधान
86. लघु जम्बू द्वीप विधान
87. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
88. क्षायिक नवलब्धि विधान
89. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
90. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
91. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
92. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
93. तीन लोक विधान
94. कल्पद्रुम विधान
95. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
96. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
97. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
98. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
99. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
100. पुण्यास्त्रव विधान
101. सप्तऋषि विधान
102. तेरहद्वीप विधान
103. श्री शान्ति,कुन्थु, अरहनाथ मण्डल विधान
104. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
105. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
106. सम्यक् दर्शन विधान
107. श्रुतज्ञान व्रत विधान

108. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
109. चारित्र शुद्धि विधान
110. लघु शांति विधान
111. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधाान
114. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
115. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
116. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधाान
117. षट्खण्डागम विधान
118. दिव्यध्वनि विधान
119. श्री आदिनाथ विधान (रेवाड़ी)
120. नवग्रह शांति विधान
121. रक्षा बन्धन विधान
122. सोलह कारण विधान
123. तीर्थंकर विधान
124. गणधर वलय विधान (लघु)
125. गणधर वलय विधान (वृहद्)
126. गिरनार गिरि विधान
127. श्री चन्द्रप्रभु विधान (तिजारा)
128. ऋषि मण्डल विधान
129. कालसर्प दोष निवारक विधान
130. शनि ग्रह अरिष्ट निवारक विधान
131. वास्तु विधान (लघु)
132. भक्तामर विधान (चौपाई)
133. पद्मावती विधान
134. क्षेत्रपाल विधान
135. चौबीस तीर्थंकर निर्वाण भक्ति विधान
136. बड़े बाबा विधान
137. कल्पद्रुम विधान (लघु)
138. लक्ष्मी प्राप्ति विधान
139. महावीर समवशरण विधान
140. चांदनपुर महावीर विधान
141. श्री शान्तिनाथ विधान (शान्तिनाथ की खोह)
142. श्री पार्श्वनाथ विधान (खण्डेला)
143. सुगन्धा दशमी व्रत विधान
144. कर्म निर्झर व्रत विधान
145. निर्दुख सप्तमी पूजा विधान
146. रविव्रत पूजा विधान
147. सौभाग्य दशमी व्रत पूजा विधान
148. पुरन्दर विधान
149. वृहद स्वयंभू स्तोत्र विधान
150. 2688 बीजाक्षर मंत्र भक्तामर विधान
151. श्रावण द्वादशी व्रत पूजा विधान
152. पुरुदेव विधान
153. विशद पञ्चागम संग्रह
154. जिन गुरु भक्ती संग्रह
155. धर्म की दस लहरें
156. स्तुति स्तात्र संग्रह
157. विराग वंदन
158. बिन खिले मुरझा गए
159. जिंदगी क्या है
160. धर्म प्रवाह
161. भक्ति के फूल
162. विशद श्रमणी चर्या
163. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
164. इष्टोपदेश चौपाई
165. द्रव्य संग्रह चौपाई
166. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
167. समाधितन्त्र चौपाई
168. शुभषित रत्नावली
169. संस्कार विज्ञान
170. बाल विज्ञान भाग-3
171. नैतिक शिक्षा भाग-1, 2, 3
172. विशद स्तोत्र संग्रह
173. भगवती आराधना
174. चिंतवन सरोवर भाग-1
175. चिंतवन सरोवर भाग-2
176. जीवन की मन:स्थितियां
177. आराध्य अर्चना
178. आराधना के सुमन
179. मूक उपदेश भाग-1
180. मूक उपदेश भाग-2
181. विशद प्रवचन पर्व
182. विशद ज्ञान ज्योति
183. जरा सोचो तो
184. विशद भक्ति पीयूष
185. विशद मुक्तावली
186. संगीत प्रसून
187. आरती चालीसा संग्रह
188. भक्तामर भावना
189. बड़ागांव आरती चालीसा संग्रह
190. सहस्रकूट जिनार्चना संग्रह
191. विशद मेहा अर्चना संग्रह
192. विशद जिनवाणी संग्रह
193. विशद वीतरागी संत
194. काव्य पुंज
195. पंच ज्ञाप्य
196. श्री चंवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
197. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
198. विराटनगर तीर्थ पूजन आरती चालीसा संग्रह
199. तिजारा अतिशयै क्षेत्र पूजन आरती चालीसा संग्रह
200. अतिशय क्षेत्र मोजमाबाद पूजन आरती चालीसा संग्रह
201. अतिशय क्षेत्र नवटा पूजन आरती चालीसा संग्रह
202. अतिशय क्षेत्र रनीला पूजन आरती चालीसा संग्रह
203. अतिशय क्षेत्र नारनौल पूजन आरती चालीसा संग्रह
204. अतिशय क्षेत्र बड़ागाँव पूजन आरती चालीसा संग्रह
205. अतिशय क्षेत्र शान्तिनाथ खो पूजन आरती चालीसा संग्रह
206. अतिशय क्षेत्र खण्डेला पूजन आरती चालीसा संग्रह
206. चालीसा संग्रह
207. मानसरोवर पूजन आरती चालीसा संग्रह
208. त्रिनगर दिल्ली पूजा चालीसा संग्रह
209. अशोकनगर दिल्ली पूजन आरती चालीसा संग्रह
210. रोहिणी दिल्ली पूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट : उपरोक्त 125 विधानों में से अधिकाधिक विधान कर अथाह पुण्याभव करें। –मुनि विशालसागर